TIGHT BINDING BOOK

दिव्य जीवन

स्वेट मार्डेन के

The Miracles of Right Thought

का संक्षिप्त अनुवाद

अनुवादक

श्रीसुखसम्पत्तिराय भण्डारी

हिन्दी मंदिर, प्रयाग

प्रकाशक,
बृहस्पति उपाध्याय,
हिन्दी मन्दिर, प्रयाग।

दसवीं बार: १९४८
मूल्य डेढ़ रुपया।

मुद्रक
गोपीनाथ सेठ,
वीन प्रेस, दिल्ली।

विषय-सूची

दिव्य जीवन

: १ :

दिव्य विचारों का जीवन पर प्रभाव

हमारे हृदय में जो आशा-भरी तरंगें उठा करती हैं, हमारी आत्मा में जिन महत्त्वाकांक्षाओं का जन्म होता रहता है, हमारे मन में जिन दिव्य भावनाओं का उदय होता रहता है, क्या वे खरगोश के सींग के समान असत्य हैं, व्यर्थ हैं, फ़िजूल हैं ? नहीं, नहीं, वे जीवनप्रद हैं, सत्य हैं, मज़बूत जड़वाली हैं, प्रबल हैं, प्रभावोत्पादक हैं, हमारी शक्ति की सूचक और हमारे उद्देश्य की उच्चता की मापक हैं, हमारी कार्य-सम्पादन की शक्ति के परिणाम की द्योतक हैं।

जिसकी हम चाह करते हैं, जिसकी सिद्धी के लिए उस संपूर्ण अंतःकरण से अभिलाषा करते हैं, उसकी हमें अवश्य ही प्राप्ति होगी। जो आदर्श हमने सच्चे अंतःकरण से बनाया है, मन, वचन और काया को एक करके जिस आदर्श की सृष्टि की है, वह अवश्य ही हमारे सामने सत्य के रूप में प्रकट होगा।

जब हम किसी पदार्थ की अभिलाषा करते हैं, जब हम मन, वचन और काया से उसकी प्राप्ति के लिए यत्नवान होने का मन-सूबा बाँधते हैं, तभी से उस पदार्थ के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना

शुरु करते हैं। हमारा अंतःकरण उसकी सिद्धी के लिए जितना उत्सुक होगा, हमारी आत्मिक भावनाएं जितनी सुदृढ़ होंगी, उतना ही उसके साथ हमारा सम्बन्ध दृढ़ होगा। किन्तु शोक की बात है कि जीवन के स्थूल पहलू पर तो हम अपना विशेष आधार रखते हैं, पर जीवनादर्श की ओर यथोचित ध्यान ही नहीं देते। यही कारण है कि हमें जैसी चाहिए वैसी सफलता नहीं मिलती पूर्ण विजय से हम अपने अंतःकरण को गद्गद् नहीं कर सकते, विजय का डंका बजाकर संसार को आश्चर्य में नहीं डाल सकते। पर जब हम मन, वचन और काया से उस आदर्श पर स्थित रहना सीखेंगे जो हमारा ध्येय है जिसे हम सत्य के रूप में प्रकट करना चाहते हैं, तब हमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। यदि हम चाहते हों कि हम नौजवान बने रहें, नवयौवन का पुरजोश खून हमारे शरीर में बहता रहे, बुढ़ापे की झुर्रियों से हमारी देह जीर्ण-शीर्ण न हो, तो हमें चाहिए कि हम सदा अपने मन को यौवन के सुखद विचारों के आनन्द-समुद्र में लहरें खिलाते रहें। यदि हम चाहते हैं कि हम सदा सुन्दर बने रहें, हमारे मुख मण्डल पर सौन्दर्य का दिव्य प्रकाश झलका करे, तो हमें चाहिए कि सदा हम अपनी आत्मा को सौन्दर्य के मीठे सरोवर में सुख-स्नान कराते रहें।

आत्मा में रमण करने का, आदर्श पर कायम रहने का, क्या यह कुछ कम फ़ायदा है ? इससे शारीरिक, मानसिक और नैतिक अपूर्णताएं नष्ट हो जाती हैं। ऐसी दशा में ऐसी पूर्ण स्थिति में हो नहीं सकता कि हम कभी बुढ़ापा देखें, क्योंकि बुढ़ापा अपूर्णता और जरा का ही तो परिणाम है, और आदर्श से तो ये बलाएं कोसों दूर रहती हैं।

आदर्श में, मनोरथ-सृष्टि में, हर पदार्थ तरोताजा और सुन्दर

रहता है। क्षय और कुरूपता के लिए वहाँ जगह है ही नहीं। आदर्श पर स्थित रहने की आदत से हमें बड़ी सहायता मिलती है, क्योंकि वह हमारे सामने पूर्णता का साक्षात् नमूना रखता है, हमारी श्रद्धा को दृढ़ करता है, क्योंकि हम अपनी मनोरथ-सृष्टि में उस समय के आभास को देखते रहते हैं जिसके विषय में हमें मालूम होता रहता है कि वह कभी न कभी अवश्य हमें प्राप्त होगा।

जिस पुरुष के सदृश होने की आप अभिलाषा रखते हों, सदा उसका आदर्श अपने सामने रक्खें। आप अपना यह आदर्श बना लें कि हममें पूर्णता और कार्य-संपादन की शक्ति बड़ी विलक्षणता से भरी हुई है। आप अपने मन से रोग एवं न्यूनता के विचारों को निकाल दें, अपने मन के द्वारों में कभी निर्बलता, न्यूनता और पराजय के विचारों का प्रवेश न होने दें। आप उक्त आदर्श को पूर्ण करने का मन, वचन और काया से प्रयत्न करें, अवश्य ही आपको यह प्रयत्न सफलता प्राप्त करने में सहायता देगा।

अहा! आशाजनक विचारों में क्या ही विलक्षण शक्ति भरी हुई है! प्रिय पाठको, ज़रा इसका अनुभव तो कीजिए। आप यह विचार पक्का कर लीजिए कि हमारी अभिलाषाएँ पूर्ण होंगी, हमारे मनोरथ सिद्ध होंगे, हमारे सुख स्वप्न सच्चे होंगे, हमें विजय और सफलता प्राप्त होगी। पराजय या असफलता हमारे पास फटकने तक न पावेगी। हमारे लिए जो कुछ होगा अच्छा ही होगा, बुरा कभी न होगा। और फिर देखिए कि इस तरह के दिव्य और आशामय विचारों का आपकी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं सांसारिक उन्नति पर क्या ही दिव्य प्रभाव होता है। मैं ज़ोर देकर कहता हूँ कि इन विचारों को आदत में

बदल लेने से मनुष्य की जैसी उन्नति होती है वैसी दूसरी किसी भी बात से नहीं।

आप अपने अंतःकरण में इस विश्वास की जड़ जमा दें कि जिस कार्य के लिए सृष्टिकर्त्ता परमात्मा ने हमें बनाया है, उस कार्य को हम अवश्य पूरा करेंगे। इसके विषय में अपने अन्तःकरण में तिलमात्र भी सन्देह को जगह न दें। यदि यह संशय आपके मन के द्वारों में प्रवेश करना चाहे तो आप उसे निकाल बाहर करें। आप हमेशा उन्हीं विचारों को अपने मन-मन्दिर में आने दें जो हितकर हैं। आप उसी पदार्थ को आदर्श बनावें जिसकी प्राप्ति आप चाहते हों। उन विचारों को अपने अन्तःकरण से निकाल दें जो आपको अहितकर मालूम होते हों, उन भावों को देश-निकाला दे दें, जो आप को निराश करते हों, निराशा के समुद्र में डुबाते हों। मैं कहूँगा कि आप उन सभी वस्तुओं को अपने पास फटकने न दें जो असफलता और दुःख की सूचना देती हों।

आप चाहे जो काम करें चाहे जो होना चाहें, पर सदा उसके सम्बन्ध में आशापूर्ण, शुभसूचक भाव रखें। ऐसा करने से आप को अपनी कार्य शक्ति बढ़ती हुई मालूम होगी और साथ-साथ यह भी मालूम होगा कि हमारा सुधार हो रहा है। जहाँ आपने अपने मन-मन्दिर में आनन्दमय, सौभाग्यशाली और शुभ चित्रों को देखने की आदत बना ली कि फिर इसके विरुद्ध परिणामों वाली आदत बनाना आपके लिए कठिन हो जायगा। यदि हमारे बच्चे इस प्रकार की अच्छी आदत डालने लग जावें तो मैं निश्चय पूर्वक कहता हूँ कि हमारी सभ्यता में बड़ा ही विलक्षण परिवर्त्तन हो जायगा—हमारे जीवन की स्थिति में अपूर्व उन्नति होगी। यदि हमने अपने मन को इस तरह सुसंस्कृत कर लिया तो हमें

वह शक्ति प्राप्त होगी जिससे हम अनैक्य और उन सैकड़ों शत्रुओं पर पूरी-पूरी विजय प्राप्त कर सकेंगे, जो हमारी शान्ति को, सुख को, शक्ति को, सफलता को लूट लेने वाले हैं।

क्या आप व्यावहारिक संसार में प्रवेश करने के लिए पूँजी चाहते हैं? मैं कहता हूँ कि आप संसार में प्रवेश करने के पहले मन, वचन और काया से इसके लिए प्रयत्नशील हों कि हमारा भविष्य प्रकाशमान होगा, हम उन्नतिशील और सुखी होंगे, हमें सफलता और विजय प्राप्त होगी, एवं सब प्रकार की आनन्द-जनक सामग्री हमें प्राप्त होगी। बस सबसे पहले इसी दिव्य पूँजी को लेकर संसार में प्रवेश कीजिए और फिर उसके मीठे फल चखिए।

बहुत से मनुष्य अपनी इच्छाओं को, अपनी आशाओं को उद्दीप्त रखने के बदले उन्हें कमज़ोर बना डालते हैं। वे इस बात को नहीं जानते कि अपनी अभिलाषाओं की सिद्धि के लिए हम जितना ही दृढ़ भाव, जितना ही अविचल निश्चय रखेंगे उतना ही उनको सिद्ध कर सकेंगे। वे इस बात को नहीं जानते कि अपनी आशाओं को जीवित रखने का सतत प्रयत्न करते रहने से हम उनके साक्षात्कार की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

कोई बात नहीं यदि उनकी सिद्धि का समय बहुत दूर मालूम होता हो, वे हमें असंगत दीखती हों, उनका मार्ग हमें अन्धकाराच्छन्न दिखाई देता हो। यदि हम मन, वचन और काया से उनको प्रत्यक्ष करने के लिए जुट जायं तो धीरे-धीरे अवश्य ही हम उनको सिद्ध कर सकेंगे। पर यहाँ हम यह कहना न भूलेंगे कि हम केवल अभिलाषा ही करते रहें और उसकी सिद्धि के लिए कुछ भी प्रयत्न-परिश्रम न करें तो जल-तरङ्ग की तरह उसका उत्थान और पतन मन का मन ही में हो जाएगा।

अभिलाषा तभी फलोत्पादक होती है जब वह दृढ़ निश्चय में परिणत कर दी जाती है ।अभिलाषा का दृढ़ निश्चय के साथ सम्मिलन होने से उत्पादक शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। फल की प्राप्ति तभी होती है जब अभिलाषा और दृढ़ निश्चय दोनों जुटकर काम करें।

हम हमेशा अपने विचारों मनोभावों और आदर्शों के, गुण-प्रकृति के अनुसार अपनी कार्योत्पादक शक्ति को बढ़ाते घटाते रहते हैं। यदि हम सदा पूर्णता का आदर्श अपने सामने रक्खें, यदि हम हमेशा मानते रहें कि सर्वशक्तिमान परमात्मा के अंश होने से पूर्ण हैं तो हमें वह स्वास्थ्यकर शक्ति प्राप्त होगी जो हमारी रोग-सम्बन्धी भावनाओं को एकदम कमजोर कर देगी।

आप उसी बात को सोचें, उसी बात को अपनी ज़बान से निकालें, जिसे आप चाहते हों कि वह सत्य हो। बहुत से मनुष्य कहा करते हैं—"भाई, अब थक गये, बेकाम हो गए; अब परमात्मा हमें बुला ले तो अच्छा हो।" वे यह रोना रोते रहते हैं कि हम बड़े अभागे हैं, कमनसीब हैं, हमारा भाग्य फूट गया है, दैव हमारे विरुद्ध है; हम दीन हैं, ग़रीब हैं। हमने सिर-तोड़ परिश्रम किया, ऊपर उठना चाहा, पर भाग्य ने हमें सहायता न दी। वे बेचारे इस बात को क्या जानें कि इस तरह के अन्धकारमय, निराशाजनक विचार करने से, इस तरह का रोना रोने से हम अपने हाथों अपना भाग्य फोड़ लेते हैं, उन्नति रूपी कौमुदी को काले बादलों से ढक देते हैं। वे यह नहीं जानते कि इस तरह के कुविचार हमारी शान्ति, सुख और विजय के घोर शत्रु हैं। इस बात को भूले हुए हैं कि इस तरह के विचारों को मन से देश-निकाला देने में ही मंगल है। इसीसे इन विचारों

को अन्तःकरण में बिठाकर वे अपने हाथ अपने पैरों पर कुठाराघात कर रहे हैं। कभी एक क्षण के लिए भी आप अपने मन में इस विचार को स्थान न दें कि हम बीमार हैं, कमजोर हैं (हाँ, यदि बीमारी और कमज़ोरी का अनुभव करना चाहें तो भले ही ऐसे विचारों को अपने मन में टिका लें), क्योंकि इस तरह के विचार शरीर पर इनका आक्रमण होने में सहायता देते हैं। हम सब अपने विचारों के ही फल हैं। उच्चता, महानता और पवित्रता के विचारों से हमें आत्म-विश्राम प्राप्त होता है, ऊँचा उठाने वाली शक्ति मिलती है और ऊंचे दर्जे का साहस प्राप्त होता है।

यदि आप अपने किसी खास विषय में अपनी अपूर्वता प्रकट करना चाहते हों तो आप अपने अभिलषित विषय में उच्च आदर्श को लेकर प्रविष्ट हो जाइए और तब तक अपने अंतःकरण को वहाँ से तिल-मात्र भी मत हटाइए जबतक आपको यह न मालूम हो जाए कि सफलता होने में अब कुछ भी संदेह नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने आदर्श का अनुमान करता है। आदर्श के रंग से वह रंग जाता है—उस आदर्श के अनुसार उसका चरित्र बन जाता है। यदि आप किसी मनुष्य के आदर्श को जानना चाहते हों तो उसके चरित्र को—स्वभाव को देखिए, उस के आदर्श का आपको फौरन पता लग जायगा।

हमारे आदर्श ही हमारे चरित्र के संगठन-कर्ता हैं, और उन्हीं में वह प्रभाव है जो जीवन को वास्तविक जीवन में परिणत करता है। क्या ही आश्चर्य है कि जैसे हमारे आदर्श होते हैं, जैसी हमारी इच्छाएँ अभिलाषाएँ होती हैं, जैसे हमारे हार्दिक भाव होते हैं, ठीक उन्हीं की झलक हमारे मुख-मण्डल पर

दिखाई देने लगती है। हो नहीं सकता कि इनका प्रतिबिम्ब हमारी आँखों में न दीखे। इसलिए हमें अपने आदर्श को, अपने मनोभाव को, अपने विचार प्रवाह को श्रेष्ठता और दिव्यता की ओर झुका हुआ रखना चाहिए। हमें पूर्ण निश्चय और विश्वास कर लेना चाहिए कि निकृष्टता, दीनता, निर्बलता, आधि-व्याधि, दरिद्रता और अज्ञान से हमारा कोई सरोकार नहीं। हमें इस बात का दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि हमारे हाथ से हमेशा उत्तम ही कार्य होगा, कभी बुरा न होगा।

अहा! वह कौन सी दैवी वस्तु है—कौन सा दिव्य पदार्थ है जो हमारी आत्मा को वास्तव में ऊँचा उठाता है, उसे आध्यात्मिकता के आनन्दमय उच्च प्रदेश पर पहुँचाता है। आत्म-बन्धुओ! यह वह प्रभाव है जो हमारे दिव्य आदर्श से उत्पन्न होता है, यह वह ज्योति है जो निर्मल अन्तःकरण से निकल कर हमारे जीवन को प्रकाशित करती है।

हमें अपने जीवनोद्देश्य को सफल करने में श्रद्धा से—आस्था से भी बड़ी सहायता मिलती है। यदि हम कहें कि मनोवांछित पदार्थ का मूल श्रद्धा ही हो सकती है तो कुछ अतिशयोक्ति न होगी। यदि हम यह कहें कि श्रद्धा-आस्था ही हमारे आदर्श की बाह्य-रेखा है तो कुछ भी अनुचित न होगा। पर हमें श्रद्धा ही तक न रुक जाना चाहिए। श्रद्धा के परे भी कोई पदार्थ अवश्य है। विचार करके गहरी दृष्टि डालने से हमें मालूम होगा कि श्रद्धा, आशा, लालसा आदि मनोवृत्तियों के पीछे एक अलौकिक दिव्य पदार्थ—सत्य भरा हुआ है। यह वह सत्य है जो हमारी प्रकृति अभिलाषाओं को सुखरूप प्रदान करता है।

उत्पादक शक्ति का एक नियम है कि जिसका हम दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हैं वह हमें अवश्य प्राप्त होता है। यदि आप इस

बात का पक्का विश्वास करके कि हमें आलीशान मकान रहने को मिलेगा, हम समृद्धिशाली होंगे, हम प्रभावशाली पुरुष होंगे, समाज में हम वज़नदार गिने जायंगे, अपना प्रयत्न आरम्भ करेंगे तो आपमें एक प्रकार की विलक्षण सृजन-शक्ति का उदय होगा और वह आपके मनोरथ पर सफलता का प्रकाश डालेगी।

यदि आप अपने जीवनोद्देश्य को सफल करना चाहते हैं, यदि आप अपने आदर्श को कार्य में परिणत करना चाहते हैं, तो आप अपने सम्पूर्ण विचार-प्रवाह को अपने उद्देश्य की ओर लगा दीजिए। एक ही लक्ष्य की ओर अपने मन, वचन और काया को लगा देने से संसार में बड़ी-बड़ी सफलताएं होती हुई दीख पड़ती हैं आप उन पदार्थों की आशा कीजिए जो दिव्य हों, आप यह विश्वास कर लीजिए कि हमारे प्रयत्न उत्साहपूर्वक होने से हमें कोई उच्च, दिव्य और महान् पदार्थ प्राप्त होनेवाला है और हम अपने जीवनोद्देश्य पर पहुँच रहे हैं। आप इस विचार में हो जाइए कि हमारी सतत उन्नति हो रही है और हमारी आत्मा का एक-एक परमाणु दिव्यता की ओर जा रहा है।

बहुत से मनुष्य कहा करते हैं कि इस तरह के स्वप्नों में डूब जाने से—कल्पना ही कल्पना में रहने से हम वास्तव में कुछ भी काम न कर सकेंगे। केवल हम मन ही के लड्डू खाया करेंगे। पर यह उनकी भूल है। हमारे कहने का यह आशय नहीं है कि आप सदा कल्पना जगत में ही विचरा करें, विचार ही विचार में रह जाएँ, केवल मन के ही लड्डू खाया करें। हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि किसी काम को करने के पहले आप उस काम को करने की दृढ़ इच्छा मन में करलें और सारी मानसिक शक्तियों को उस ओर झुका दें, जिससे आपको बहुत ही अधिक सफलता

प्राप्त हो । मन के विचार को मन ही में लय न करके उसका दृश्य रूप में रखना अत्यन्त आवश्यक है, यह हम पहले भी कह चुके हैं । पर हम इतना अब भी अवश्य कहेंगे कि ये शक्तियां बड़ी कार्य करी हैं, पवित्र हैं । ईश्वर ने दैवी उद्देश्य-सिद्धि के लिए हमें ये शक्तियां दी हैं जिससे हम सत्य की झलक देख सकें । इन्हीं की बदौलत हम उस समय भी अपने आदर्श पर कायम रह सकते हैं जब हम असुविधा-जनक और बुरी परिस्थिति में कार्य करने को लाचार हो रहे हों ।

हवाई क़िले बनाना निस्सार नहीं है । हम पहले अपने मन में उन्हें बनाते हैं—अभिलाषा में उन्हें चित्रित करते हैं, और फिर बाहर उनकी नींव रखते हैं । कारीगर मकान बनाने के पहले उसके नक़शे को अपने मन में स्थिर कर लेता है और फिर उसी के अनुसार मकान बनाता है । सुन्दर और भव्य मकान बनाने के पहले वह अपने मानसिक क्षेत्र में उसकी सुन्दर और भव्य इमारत खड़ी कर लेता है ।

इसी तरह जो कुछ कार्य हम करते हैं, पहले उसकी सृष्टि हमारे मन में होती है, और फिर वह दृश्य रूप सामने आता है । हमारी कल्पनाएँ हमारी जीवनरूपी इमारत के मानचित्र हैं । पर यदि हम उन कल्पनाओं को ख़त्म करने के लिए जी जान से प्रयत्न न करेंगे तो वे मानचित्र मात्र रह जायंगी । जैसे यदि कारीगर मकान का केवल नक़शा ही बनावे और उसे सत्य रूप में प्रकट न करे, अर्थात् उसके अनुसार मकान न बनावे, तो उसकी स्कीम उस नक़शे में ही पूरी हो जायगी ।

सब बड़े आदमी जिन्होंने महत्ता प्राप्त की है, बड़े-बड़े काम किये, अभीष्टों की सिद्धि की है पहले उन सब अभिलषित पदार्थों के स्वप्न ही देखा करते थे । जितनी स्पष्टता से, जितने

आग्रह से, जितने उत्साह से उन्होंने अपने सुख-स्वप्न की—अपने आदर्श की सिद्धि में प्रयत्न किया, उतनी ही सिद्धि उन्हें प्राप्त हुई।

आप अपने आदर्श को इसलिए न छोड़ दें कि उसका प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध होना आप को नहीं दीखता है। आप अपनी सारी शक्तियों का प्रवाह अपने आदर्श की ओर मोड़ कर उस पर मज़-बूती से जमे रहें। आप उसे सदा प्रकाशित रक्खें, कभी उसे अन्धकारमय अथवा धुंधला न होने दें। सदा आनन्दमय नई नई अभिलाषाएँ उत्पन्न करने वाले वायुमण्डल में रहें। वे ही पुस्तकें पढें जो आपकी अभिलाषा को प्रोत्साहन देती रहे, उन्हीं पुरुषों के पास उठें-बैठें जिन्होंने वह काम किया है जिसकी आप कोशिश कर रहे हों, और जो सफलता के रहस्य को प्रत्यक्ष करके आकांक्षी रहे हों।

रात को सोने से पहले आप कुछ देर के लिए शान्तिपूवक बैठकर एकचित्त हो अपने आदर्श का विचार करें, कल्पना सृष्टि में उसकी मूर्ति देखें, और आनन्द में मग्न हो जावें। आप अपनी मनोकल्पना के स्वप्न से मत डरिए, क्योंकि वह मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता—उसका पतन हो जाता है, जो अपने आदर्श के सुखमय स्वप्न नहीं देखा करता। स्वप्न की शक्ति हमें इस वास्ते नहीं दी गई है कि हमारे अन्दर डर पैदा करे। उसके पीछे सत्य छिपा हुआ है। वह एक अपूर्व देन है जो दैवी खजाने से दैवी धन लुटाती है और हमें साधारण पुरुषों की श्रेणी से उठाकर असाधारण पुरुषों की पंक्ति में बिठाती है—हीन दशा से निकाल कर दिव्य आदर्शों पर आसीन करती है।

हम अपने हृदय के आनन्दमय भवन में आदर्श के जिस आभास को देखा करते हैं वह हमें असफलता और आशाभंग

के कारण अधीर होने से रोकता है।

यहाँ स्वप्नों से मेरा मतलब उन स्वप्नों से नहीं है जो जल-तरङ्गों के समान क्षणिक हैं, मेरा आशय उस सच्ची और प्रकृत अभिलाषा एवं उस पवित्र आत्मिक आकांक्षा से है जो हमें हमेशा इस बात का स्मरण कराती रहती है कि हम अपने जीवन को दिव्य और महान् बनावें, जो हमें इस बात की सूचना करती है कि हम बेमेल एवं बुरी परिस्थिति से उठकर उन आदर्शों का साक्षात्कार कर सकते हैं, जिन्हें हम अपने कल्पना-राज्य में देखा करते थे।

हमारी प्रकृत अभिलाषाओं के पीछे ऐश्वर्य—ईश्वरत्व छिपा हुआ है।

दैवी और फलप्रद अभिलाषाओं के विषय में हम यह नहीं कहते कि आप अपनी उन अभिलाषाओं का उन पदार्थों के लिए उपयोग करें जिनको आप चाहते हैं पर वास्तव में जिनकी आप को आवश्यकता नहीं। मैं उन अभिलाषाओं का जिक्र नहीं करता जो मरुदेश के उस फल के सदृश हैं जो देखने में सुन्दर है पर मुँह पर लाते ही जिसकी हेयता प्रकट होती है। हमारा आशय आत्मा की उन प्रकृत अभिलाषाओं से है जो हमारे आदर्श की सिद्धि में सहायक होती हैं, उन असली आकांक्षाओं से है जो हमें पूर्णता पर पहुँचाने में—आत्म-विकास करने में मददगार होती हैं।

हमारी मानसिक वृत्तियाँ—हमारी अभिलाषाएँ हमारी नित्य की प्रार्थनाएं हैं। इन प्रार्थनाओं को प्रकृति देवी सुनाती है और उनका यथोचित उत्तर देती है। यह इस बात को मान लेती है कि हम वही चीज़ चाहते हैं जिस की सूचना हमारी अन्तरात्मा करती है और यह हमारी सहायता करने लगती है।

लोग इस बात को बहुत कम जानते हैं कि हमारी कामनाएं ही हमारी नित्य की प्रार्थनाएं हैं। ये प्रार्थनाएं नकली नहीं, बनावटी नहीं; किन्तु शुद्ध हृदय से निकली हुई, आत्मिक हैं और परमात्मा उनका सुफल हमें अवश्य देता है।

हम सब इस बात को जानते हैं कि एक दैवी उपदेशक हमारी आत्मा में बैठा हुआ है और वह समय-समय पर हमारी रक्षा करता है, हमें ठीक राह बताया करता है और हमारे हर प्रश्न का उत्तर देता रहता है। जो मनुष्य अपने मानसिक भाव को ठीक करके उत्साह और प्रामाणिकता से अपने लक्ष्य पर पहुँचना चाहता है वह उस पर जरूर पहुँचेगा, पूरा न पहुँचे तो उसके करीब-करीब तो जरूर पहुँच जायगा।

हमारी हार्दिक अभिलाषाएँ हमारे उत्पादक अन्तर्बल को उत्तेजित करती हैं। वे हमारी शक्तियों को जोर देती रहती हैं, हमारी योग्यता को बढ़ाती हैं। प्रकृति देवी की दुकान ऐसी है कि वहाँ एक कीमत बोली जाती है, और मनुष्य वह कीमत देकर हर चीज को खरीद सकता है। हमारे विचार उन जड़ों के समान हैं जो शक्ति रूपी अनन्त सागर में फैली हुई हैं, और जिनको गति और स्पन्दन देने से वे हमारी अकांक्षा एवं अभिलाषा का स्नेहाकर्षण कर लेती हैं।

वनस्पति संसार की प्रत्येक वस्तु, क्या फल क्या फूल, अपने नियत समय पर ही फलते-फूलते और पकते हैं। जाड़ा तब तक वृक्षों के पल्लवों पर हमला नहीं करता जब तक उन्हें पूरी तरह खिलने का अवसर न मिला हो। फल बर्फ पड़ने के पहले वृक्ष पर से गिरने को तैयार रहते हैं, यही कारण है कि उनकी वृद्धि रुकती नहीं।

पर यदि हम देखें कि जाड़ा आने पर भी सब फल हरे ही

हैं, फूल कलियों में हैं और विकसित होने के बदले वे ठण्ड के शिकार बन गये हैं, तो हमें समझ लेना चाहिए कि उनमें कहीं न कहीं किसी तरह की भूल हुई होगी।

इसी तरह जब हम देखते हैं कि करोड़ों मनुष्यों में विरले ही ऐसे होते हैं जो अपनी पूर्ण आयु तक पहुँचते हैं और बहुत से मनुष्य अर्द्ध-विकसित होने के पहले ही काल के ग्रास बन जाते हैं, तो हमें मानना होगा कि यहाँ भी कुछ भूलें अवश्य हुई हैं।

हमारा जीवन-वृक्ष अपने समय से पहले ही क्यों मुर्झा जाता है? इसमें ईश्वर-सदृश गुण और अनन्त शक्ति एवं योग्यता होने पर भी क्यों हमारा जीवनफल अर्द्ध-विकसित होने के पहले ही वृक्ष से गिर जाता है? इससे तो हमें मानना होगा कि इसमें कहीं न कहीं हमारी भूल अवश्य है।

जब हम अन्य जीवधारियों से मानव-जीवन की तुलना करते हैं तो हमें मालूम होता है कि मानव-जीवन के लिए पूरी तरह फलने-फूलने और आत्म विकास करने का ठीक अवसर है। यदि हम अपने दिव्य-स्वप्नों का अनुकरण करते जाएं तो हमारी अभिलाषाओं के फलने-फूलने का—हमारी अकांक्षाओं के सिद्ध होने का—हमारे आदर्श की परिणति का—समय ज़रूर आएगा, क्योंकि ये बन्द कली में दबी हुई उन पंखड़ियों के समान हैं जो कभी कहीं समय आने पर खिलेंगी और अपनी सुरभी और सुन्दरता से वायुमण्डल को सुगन्धित बना देंगी। किसी तरह का क्षय इनकी बाढ़ को न रोक सकेगा।

हम यह बात देखते हैं कि हर मनुष्य में कुछ ऐसी सामग्री मौजूद है जो उसे पूर्ण और आदर्श मनुष्य बना सकती है। यदि हम अपने आदर्श को मज़बूती से पकड़ लें, सांसारिक

कष्टों से घबरा कर मन, वचन और काया से अपने जीवनोद्देश्य के पीछे चलें, तो अवश्य ही हममें मानवी शक्तियों का आविर्भाव होकर हमारी सफलता पर प्रकाश पड़ेगा।

ईश्वर की हमें यह आज्ञा कि तुम पूर्ण बनो, जैसा कि मैं हूँ, कुछ अर्थहीन नहीं है। उसके सदृश विकास करने की हममें भी शक्ति है, यह बात अक्षरशः सत्य है।

: २ :

सुख और सफलता

मनुष्य यदि व्याधि, दरिद्रता और दुर्दैव का ही विचार करता रहे तो उसे ये प्राप्त होंगे और उसे ऐसा मालूम होने लगेगा मानो ये उसके ही पास पड़े हों। फिर भी वह उनसे गहरा सम्बन्ध न करना चाहेगा—वह अपने उत्पन्न किये हुए इन पुत्रों से घबराता रहेगा और कहता रहेगा कि दुर्भाग्य से ये बलाएं मेरे सिर पर आ पड़ी हैं।

"दरिद्रता एक नरक है जिससे इस समय के अंग्रेजों का कलेजा काँपता है।"

—कार्लाइल

किसी मनुष्य को यह अधिकार नहीं है; यह हक़ नहीं है कि वह उसी लाचारी की, दरिद्रता की, निर्धनता की, मूर्खता की हालत में पड़ा रहे जिसमें वह रहता आया है। उसका आत्म-सम्मान कहता है कि वह ऐसी परिस्थिति से एकदम बाहर निकल आवे। उसका धर्म है, कर्त्तव्य है, फ़र्ज़ है कि वह अपने को ऐसी स्थिति में रखे जो सम्मानपूर्ण हो, जो स्वतन्त्रता की मधुर सुगन्ध से सुवासित हो, जिसमें रहकर वह बीमारी तथा आकस्मिक विपत्ति के समय अपने मित्रों को बोझ-सा न हो पड़े और जो लोग उसके ऊपर आश्रित हैं उन्हें किसी तरह का कष्ट न हो।

डाक्टर ओरिसन स्विट मार्डन महोदय कहते हैं कि यदि आप अमेरिका के किसी धनिक से पूछें तो वह कहेगा—"वे दिन

मेरे लिए सबसे ज्यादा संतोषपूर्ण और आनन्दमय थे जब मैं दरिद्रता के पंजे से निकल कर समृद्धि के आनन्द-भवन में प्रवेश कर रहा था; जब मैं अपूर्णता और लाचारी से निकल कर पूर्णता के द्वार में दाखिल हो रहा था; जब मुझे ऐसा मालूम होने लगा था कि दीनता से निकल कर समृद्धि के विशाल प्रवाह की ओर मैं जा रहा हूँ और उस मार्ग में बाधा डालने वाला कोई नहीं है।" वह गद्गद् हृदय से कहेगा—"वह समय मेरे लिए बड़ा सुखकर, बड़ा आनन्दप्रद, बड़ा सन्तोष और प्रोत्साहन देने वाला था। उस समय मुझे मालूम होने लगा था कि मेरा आत्म-विकास हो रहा है। उस समय मैं सोच रहा था कि अब दिव्यानन्द के साथ मनोहर जङ्गलों में घूमकर प्रकृति देवी के स्वाभाविक सौंदर्य से मैं अपने हृदय को उत्फुल्ल कर सकूँगा, उसकी हरी-भरी पोशाक और मनोहर छटा देखकर एकदम ही आनन्द के मधुर समुद्र में निमग्न हो जाऊँगा, और अपने मित्रों को दरिद्रता के दुःखद पञ्जों से मुक्त करके ऊँचा उठाऊँगा।" सच है, ऐसे मनुष्य को स्वयं मालूम होने लगता है कि मुझमें ऊंचा उठने की शक्ति है। मुझमें वह शक्ति है जिससे संसार में मैं अपना महत्त्व सिद्ध कर सकता हूँ। उसे इस बात का विश्वास हो जाता है कि 'मेरे लड़कों को शिक्षा प्राप्त करने में मुझ-सा कष्ट न सहना पड़ेगा।' मतलब यह कि इस समय उसका कार्यक्षेत्र संकुचित परिधि से बहुत बड़े मैदान में परिवर्तित होने लगता है।

इस बात के सैकड़ों प्रमाण हैं कि हम महान् और दिव्य वस्तुओं के लिए बनाए गए हैं, न कि दरिद्रता के पंजे में फंसने के लिए। अभाव और दरिद्रता मनुष्य की दैवी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। पर कठिनाई इस बात की है कि हमें उस दैवी

खज़ाने पर आधा विश्वास भी नहीं है। हमें यह हिम्मत नहीं होती कि अपनी दैवी क्षुधा को लुप्त करने के लिए अपनी आत्मिक इच्छा को मुक्त हृदय से प्रकाशित करें और बिना हिचकिचाये उस पूर्णता की याचना करें जिस पर हमारा स्वाभाविक अधिकार है। हम क्षुद्र वस्तुओं की आकांक्षा करते हैं और उन्हीं को पाते हैं। इस तरह हम अपनी इच्छाओं को छिन्न-भिन्न कर डालते हैं और उस दैवी खज़ाने को संकुचित कर देते हैं जो हमारे लिए रक्षित रखा गया था। अपनी आत्मिक अभिलाषाओं की याचना न कर मानों हम अपने मन-मन्दिर के उस द्वार को बन्द कर लेते हैं जो महान्, दिव्य और उपयोगी वस्तुओं का प्रवेश-द्वार है। इस तरह हमारा मानसिक- क्षेत्र इतना संकुचित हो जाता है, हमारा आत्म-विकास इतना दब जाता है कि हमें क्षुद्रता और संकीर्णता के सिवा और कुछ दिखाई ही नहीं देता।

हम उस सृष्टिकर्ता परमात्मा की विवेचना नहीं करते जिसके विषय में लोगों की ऐसी धारणा है कि वह हमारी प्रार्थनाओं, हमारी याचनाओं को पूर्ण करने से शक्तिहीन हो जाता है। हमारा विश्वास है कि उसका यह स्वभाव ही है कि वह प्रदान करे और हमारी हार्दिक अभिलाषाओं को परिपूर्ण करे। हम यदि उससे ज्यादा माँगते हैं तो मत समझो कि उसके खज़ाने में कुछ कमी हो जाती है। गुलाब का फूल सूर्य के पास प्रकाश माँगने नहीं जाता। सूर्य का स्वभाव ही ऐसा है कि वह अपना प्रकाश खुले तौर से उसे तथा अन्य सब पदार्थों को बाँट-देता है। एक मोमबत्ती के जलते हुए यदि दूसरी मोमबत्ती जला दी जाय तो पहली मोमबत्ती की कुछ हानि न होगी। मैत्री भाव रखने से हम अपने मैत्री भाव एवं तत्संबंधी योग्यता बढ़ाते हैं, खोते कुछ नहीं।

यह जान लेना कि हम दैवी शक्ति के प्रबल प्रवाह को किस तरह अपनी ओर ला सकते हैं और उसका ठीक उपयोग कर सकते हैं, जीवन के एक अलौकिक रहस्य को मालूम कर लेना है। यदि मनुष्य को इस दैवी तत्त्व का ज्ञान हो जाय तो वह अपनी कार्य्य-सम्पादन शक्ति को हज़ारों गुना बढ़ा लेगा, क्योंकि फिर तो वह ऐश्वर्य-विभूति का सहयोगी और हिस्सेदार हो जायेगा।

जब हम अनन्त से एकता करने लगते हैं, अपनी आत्मा को संस्कृत करने लगते हैं, जब हम अप्रमाणिकता, स्वार्थ और अपवित्रता को कूड़े करकट की तरह अपने हृदय से निकाल कर फेंक देते हैं, तब हमें इन दोषों से रहित शुद्ध परमात्मा के दर्शन होते हैं और हमें ईश्वर की श्रेष्ठता दीखने लगती है। हम श्रेष्ठता को जानने लगते हैं; पवित्रता के उपासक हो जाते हैं।

वही मनुष्य ईश्वर के दर्शन कर सकता है जिसका अंतःकरण निर्मल और पवित्र है।

अपने भाइयों-बहनों से स्वार्थपूर्ण और कुत्सित लाभ उठाने का विचार जब हमारी आत्मा से निकल जायगा तब हम ईश्वर के इतने निकट पहुँच जायंगे कि विश्व की तमाम अच्छी चीजें हमारी ओर बहने लगेंगी, पर कठिनाई इस बात की है कि हम अपने कुकृत्यों और कुविचारों से उस दैवी प्रवाह के मार्ग में बाधा डाल रहे हैं जो हमारी आत्मा की ओर आ रहा है। अपनी आँखों के सामने आने वाला कोई भी दुष्ट कार्य्य काले-स्याह परदे के समान है, अथवा यों कहिए कि वह हमारी आँखों का जाला है जिससे हम ईश्वर को नहीं देख सकते, उसकी श्रेष्ठता के दर्शन नहीं कर सकते। दुष्ट कार्य ईश्वर से हमें सदा अलग

रखता है।

जब हम व्यापक दृष्टि से देखना सीखेंगे, जब हम संकीर्णता का विचार करना छोड़ देंगे, जब हम अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारना बन्द कर देंगे, तब हमें मालूम होगा कि वह वस्तु जिस की हम खोज कर रहे थे, खुद हमारी खोज कर रही है और वह हमें आधे रास्ते ही में मिल जायगी।

कभी इन बातों का रोना मत रोइये कि हमें अमुक चीज़ की कमी है, हमारे पास वे वस्तुएं नहीं हैं जो दूसरों के पास हैं, हम वह काम नहीं कर सकते जो दूसरे करते हैं। ऐसा करने से आप अपने भविष्य को अन्धकारमय कर लेंगे। जबतक आप अपने दुर्दैव के विचारों में डूबे रहेंगे, जबतक अपने निष्फल अनुभव पर आश्रित रहेंगे, तबतक आपके अन्दर पड़ी हुई आत्म-शक्ति मुरझाई रहेगी और वह आपके अभिलषित पदार्थों को आकर्षित करने में नितान्त असमर्थ रहेगी। वह आपकी कठिन दशा का कुछ भी उपाय न कर सकेगी।

हमारा मानसिक भाव—हमारा आदर्श उस सत्य के समान होना चाहिए जिसकी हम खोज कर रहे हैं।

समृद्धि के अंकुर पहले हमारे मन में ही उगते हैं और फिर इधर-उधर फैलते हैं। दरिद्रता का भाव रखकर हम समृद्धि को अपने मानस-क्षेत्र की ओर कैसे आकृष्ट कर सकते हैं। क्योंकि इस दुर्भाव के कारण वह वस्तु जिसकी हम चाह करते हैं, एक कदम भी हमारी ओर नहीं बढ़ती। यत्न करना किसी एक चीज़ के लिए और आशा करना किसी दूसरी की, यह बात बहुत ही शोचनीय है। मनुष्य समृद्धि की चाहे जितनी इच्छा करे पर दुर्दैव के विचार समृद्धि के आने के द्वारों को बन्द कर देते हैं। सौभाग्य और समृद्धि दरिद्रता एवं निरुत्साह के विचारों के

प्रवाह द्वारा नहीं आ सकते, उन्हें पहले मानस-क्षेत्र में उत्पन्न करना चाहिए। यदि हम समृद्धिशाली होना चाहें तो पहले हमें अपने विचारों को उसके अनुकूल बना लेना चाहिए।

क्यों आप एक विभिन्न श्रेणी में हैं ? इसका कारण केवल यही है न कि आप अपने को ऐसा मानते हैं। यदि आप अपनी आत्मा में संकीर्णता देखते हैं तो आप अपने आपको बेशक क्षुद्र मानिए, पर याद रखिए ऐसा करने से आप अपने और समृद्धि के बीच खाई खोदते हैं। यदि समृद्धि की ओर से निराश होकर आप अपने विचार-प्रवाह को उसकी ओर न प्रवाहित कर रहे हों तो समझ लीजिए कि वह हमेशा आपसे पहलू बचाती रहेगी, कभी आपके पास न आयगी।

किस नियम से आप चीज़ की आशा कर सकते हैं जिसके लिए आपको विश्वास नहीं है कि वह प्राप्त होगी ? किस दर्शनशास्त्र से आप यह बात सिद्ध कर सकते हैं कि आप उन चीज़ों को प्राप्त कर सकेंगे, जिनके विषय में आपको यह पक्का विश्वास है कि वे आपकी नहीं हैं ?

संकीर्णता—सीमाबन्धन हमीं में है, जगत्पिता परमात्मा में नहीं। वह चाहता है कि उसके पुत्रों को विश्व की सब चीज़ें प्राप्त हों, क्योंकि उसने इन पदार्थों की सृष्टि अपने पुत्रों ही के लिए की है। यदि हम उन्हें लेने में असमर्थ हो रहे हैं तो दोष हमारा है। इसका कारण यही है कि हम अपनी आत्मा को संकुचित कर रहे हैं।

कुछ लोगों का दृढ़ विश्वास है कि कुछ आदमियों को तो ग़रीब होना ही चाहिए। वे ग़रीबी ही के लिए बनाये गये हैं। पर हम कहते हैं कि सृष्टिकर्ता परमात्मा ने मनुष्य के लिए जो ढाँचा बनाया है उसमें ग़रीबी, दरिद्रता, न्यूनता किसी की जगह

नहीं रक्खी है। पृथ्वी पर ग़रीब आदमी नहीं होना चाहिए। उसके भण्डार में ऐसी विपुल सामग्री भरी हुई है, जिसे हमने शायद ही स्पर्श किया हो। शोक की बात है कि समृद्धि के भण्डार में रहते हुए भी हम दरिद्र रहते हैं। इसका कारण यह है कि हम अपने विचारों को क्षुद्र और संकीर्ण बनाए हुए रहते हैं।

अब हमें इस बात का पता चलता जा रहा है कि विचार वह वस्तु है जो हमारे चरित्र को संगठित करता है। यदि हम भय और दरिद्रता के विचारों में रमण किया करते हैं, यदि हम दरिद्रता से डरते रहते हैं, यदि आवश्कता के भय से काँपते रहते हैं, तो दरिद्रता और भय के विचार हमारे जीवन-प्रदेश में जड़ जमा लेंगे और उनके प्रभाव से हम ऐसे चुम्बक बन जायंगे कि दरिद्रता और लाचारी अधिकाधिक परिमाण में हमारी ओर खिंचकर आती रहेंगी।

दयानिधि परमात्मा की यह इच्छा कदापि नहीं है कि हमें अपने उदर-निर्वाह के लिए भी कठिन समस्या का सामना करना पड़े, हमारा अमूल्य समय केवल इसी झगड़े में लगा रहे, जीवन के सुधार का हमें अवकाश ही न मिले। जीवन हमें इसलिए दिया गया है कि हम उसकी पूर्णता का, सौन्दर्य का प्रकाश करें। हमारी सबसे बड़ी अभिलाषा यह होनी चाहिए कि हम अपने मनुष्यत्व का विकास करें, अपने जीवन को सुन्दर और ऐश्वर्यशाली बनावें, केवल जड़ द्रव्य में ही अपना सारा जीवन खोने के बजाय मानवी गुणों को सङ्गठित करने में अपने समय का अधिक उपयोग करें।

निश्चय कर लीजिए कि दरिद्रता के विचार से हम अपने मुँह को मोड़ लेंगे। हम केवल समृद्धि ही की आशा रक्खेंगे,

केवल पूर्णता ही के विचारों को अपने पास फटकने देंगे, ऐश्वर्य-शाली आदर्श को ही अपनी आत्मा में जगह देंगे, जो हमारी स्वाभाविक प्रकृति के अनुकूल है। निश्चय कर लीजिए कि हमें सुख-समृद्धि प्राप्त करने में अवश्य सफलता होगी। इस तरह का निश्चय, आशा और अभिलाषा आपको वह पदार्थ प्राप्त करायगी जिसकी आपको बड़ी लालसा है। आन्तरिक अभिलाषा में उत्पादक शक्ति भरी हुई है।

सच बात यह है कि हम अपने ही संसार में रहते हैं। हम अपने ही विचारों के फल हैं। हर एक मनुष्य अपने विचारा-नुसार अपने संसार को बनाता रहता है। वह अपने आसपास के वायुमण्डल को या तो समृद्धि, ऐश्वर्य और पूर्णता से सुवासित रखता है, या दरिद्रता, न्यूनता और अभाव के विचारों से उसे गंदा और निरादरपूर्ण कर देता है।

ईश्वर के पुत्र–मानवगण इसलिए नहीं बनाए गए कि वे व्यर्थ ही इधर-उधर मारे-मारे फिरें। वे इसलिए बनाए गये हैं कि ऊँची आकांक्षा करें, ऊपर की ओर देखें न की नीचे की ओर। वे इस वास्ते नहीं बनाए गए हैं कि पड़े-पड़े ग़रीबी में ही सड़ा करें; वे इसलिए बनाए गए हैं कि महान् और श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करें। शांति के अधिराज परमात्मा के पुत्रों के भीतर पूर्ण श्रेष्ठता, पूर्ण महत्ता और पूर्ण ऐश्वर्य मौजूद है। पर दरिद्रता के भाव ने, विचारों की संकीर्णता ने हमें सँकीर्ण बना रक्खा। यदि हम जीवन के आदर्श को ऊँचा बनाये रक्खें, यदि हम अपने ऐश्वर्य के लिए बराबर दावा करते रहें, तो अवश्य ही हमारा जीवन परि-पूर्ण और ऐश्वर्यशाली हो जायगा। परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि हम गरीब रहें, पर हमारे भावों की संकीर्णता के कारण हमारे जन्मसिद्ध आदर्श में नीचता आजाने के कारण, हमारी

ऐसी शोचनीय दशा हुई है। मनुष्य की रचना और परिस्थिति का विचार करने से इस बात के सैकड़ों प्रमाण मिलते हैं कि वह उन महान् और दिव्य पदार्थों के अनन्त उपभोग के लिए बनाया गया है जिन्हें, मैं समझता हूँ, आजकल का कोई विरला ही भाग्यशाली प्राप्त करता और उनसे आनन्द उठाता होगा।

क्यों न हम महान् और उत्तम चीज़ों की आशा करें जबकि हममें ईश्वरीय गुण रक्खे गए हैं, जब कि हम ईश्वर के पुत्र कहे जाते हैं? विश्व में जो कुछ सौंदर्य एवं सुख-समृद्धि है वह ईश्वर की ही उत्पन्न की हुई है और हम अवश्य ही उसके हक़दार हैं। अपने मन के भाव को पूर्णतया उत्तम पदार्थों की ओर अभिमुख कर लेना—उन्हें मन, वचन,काया से न्यौता देकर बुलाते रहना ही उनकी प्राप्ति का राजमार्ग है।

अवश्य ही वहाँ कोई ग़लती, कोई भूल होनी चाहिए जहाँ राजाओं के राजा परमात्मा के पुत्र और पुत्रियाँ विश्व के महान् और दिव्य पदार्थों का उनसे उत्तराधिकार पाने पर भी, अवर्णनीय समृद्धि से भरे समुद्र के किनारे रहने पर भी, भूखों मरते हैं, अपनी पेट की ज्वाला को नहीं बुझा सकते।

क्या हमारे जीवन की अवस्थाएं, क्या हमारी आर्थिक दशा, क्या हमारे मित्र तथा शत्रु, क्या हमारा मेल और विरोध—सभी हमारे विचारों के फल हैं? यदि हमारा मानसिक भाव दरिद्रता के विचारों में मिल जायगा, यदि हमें अभाव दीखता रहेगा, तो हमारी परिस्थिति भी इन्हींके अनुकूल बन जायगी। इसके विपरीत यदि हमारे विचार खुले, उदार और विशाल होंगे, उनमें सुख-समृद्धि के भाव गूँजते रहेंगे और अभिलषित सुस्थिति को प्राप्त करने के लिए मन, वचन, काया से हम प्रयत्न करते रहेंगे, तो हमारी परिस्थिति भी हमारे मनो-

वांछित पदार्थों के अनुकूल बन जायगी। जो कुछ हम अपने जीवन में प्राप्त करते हैं वह हमारे विचार-द्वारों में होकर ही आता है और उसीके समान उसका रूप-रङ्ग और गुण भी होते हैं।

यदि हम देखें कि कोई मनुष्य किसी असाध्य तथा लम्बी बीमारी और अपरिहार्य दुर्दैव के न होने पर भी वर्षों से गरीबी से सताया जा रहा है, तो हम समझ लेंगे कि उसके मानसिक भावों में कोई त्रुटि अथवा विकार प्रवेश कर गया है जो उसे सफल होने नहीं देता।

यदि हम अपनी अवस्था से असन्तुष्ट हैं, यदि हमको ऐसा मालूम होता है कि हमारा जीवन कठोर है, हम भाग्यहीन हैं, यदि हम अपने भाग्य को दोष देते रहते हैं, तो इस बात को समझ लीजिए कि यह सब हमारे विचारों और बहुत छोटे आदर्श का स्वाभाविक परिणाम है और इसमें हमारे सिवा और कोई दोषी नहीं है।

सुसंगत विचार ही हमारे जीवन को ठीक करते हैं, शुद्ध विचार ही हमारे जीवन को शुद्ध करता है, और समृद्धियुक्त तथा उदार विचार ही उत्साहपूर्ण प्रयत्न का सहयोग पाकर वांछित फल की प्राप्ति कराता है। यदि हम पूर्णतया सफल श्रेष्ठता के दाता, अनन्त खज़ाने के मूल पर तथा उस शक्ति पर जो हमें खाने को देती है, हमारी आकांक्षाओं को पूरा करती है, और जो हमें अपनी दशा सुधारने के लिए प्रेरणा किया करती है—विश्वास करें, तो हमें यह ज्ञान ही न पड़ेगा कि दीनता क्या चीज़ है।

मनुष्य-जाति में यही एक बड़ा रोग है कि उसका दैवी खज़ाने पर यथेष्ट विश्वास नहीं। हमें चाहिए कि हम उस दैवी खज़ाने के साथ वही सम्बन्ध रक्खें जो बच्चा अपने पिता के साथ

रखता है। बच्चा रोटी खाते समय यह नहीं कहता—"मैं इस डर से कि फिर मुझे खाने को न मिलेगा, यह रोटी नहीं खाता।" वह इस विश्वास और भरोसे पर कि मुझे खाने की कमी नहीं है सब कुछ खा लेता है।

हमें अपनी सम्भावनाओं पर आधा भी विश्वास नहीं रहता, यही कारण है कि जो कुछ हमें प्राप्त होता है वह बहुत ही क्षुद्र परिमाण में होता है। हम उस ऐश्वर्य पर अपना दावा नहीं करते जिस पर हमारा अधिकार है, यही कारण है कि अपूर्णता, संकीर्णता और कृशता हमारे बाँटे पड़ती हैं। हम उदारतापूर्वक किसी वस्तु की माँग नहीं करते। हम क्षुद्र वस्तुएँ पाकर ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। ईश्वर की इच्छा है कि हम सुख-समृद्धिशाली जीवन व्यतीत करें, जो वस्तु हमारे लिए है वह विपुलता से हमारे पास रहे। कोई मनुष्य दुःखी और दरिद्र न रहे। आवश्यक वस्तुओं का अभाव मानव स्वभाव के अनुकूल नहीं है।

दृढ़तापूर्वक मान लीजिए कि आपकी उस वस्तु के साथ एकता है जिसकी आपको ज़रूरत है। आप अपने मन, वचन और काया को उस वस्तु की ओर लगा दें। उसकी प्राप्ति में तिलमात्र भी सन्देह न रक्खें। आपको उसके प्राप्त करने में अवश्य सफलता होगी—आप उसे अवश्य आकृष्ट कर सकेंगे।

ग़रीबी हमारा मानसिक रोग है। यदि आप इससे पीड़ित हों, यदि आप इस रोग के शिकार हों, तो अपने मानसिक भाव को बदल दें और दुःख-दरिद्रता और लाचारी के विचार मन में लाने के बदले सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य, स्वाधीनता और आनन्द के विचारों से अपने मानस-क्षेत्र को प्रकाशित करें। फिर यह देख कर आप के आश्चर्य का पार न रहेगा कि आपका सुधार, आपकी उन्नति कितने जोरों से हो रही है।

हमें विजय और सफलता पूर्णतया मन की वैज्ञानिक क्रिया से प्राप्त होती है। जो मनुष्य समृद्धिशाली होता है उसका पूर्णतया यह विश्वास रहता है कि मैं समृद्धिशाली एवं सौभाग्यशाली हो रहा हूँ। उसे अपनी पैसा कमाने की योग्यता पर विश्वास रहता है। वह अपने व्यवसाय को सन्देहयुक्त और शंकाशील मन से शुरू नहीं करता। वह अपने समय को ग़रीबी की बातों तथा विचारों में नहीं गँवाता। वह दरिद्रता से लड़खड़ाता हुआ नहीं चलता और न वह ग़रीब की सी पोशाक ही पहनता है। वह अपनी शक्ति को उस वस्तु की ओर मोड़ता है जिसके लिए वह कोशिश कर रहा है तथा जिसकी प्राप्ति में उसका पूरा विश्वास और दृढ़ निश्चय है।

देश में ऐसे हजारों ग़रीब लोग हैं जो अपनी ग़रीबी से अर्द्ध-सन्तुष्ट हो गए हैं और जिन्होंने उसके विकराल पंजों से निकलने का प्रयत्न ही छोड़ दिया है। अब चाहे कितना ही कठिन परिश्रम करें उन्होंने तो अपनी आशा खो दी है—स्वाधीनता प्राप्त करने की आशा नष्ट कर दी है।

बहुत से मनुष्य ऐसे होते हैं जो ग़रीबी के डर से अपने आपको ग़रीब बना लेते हैं।

देखा जाता है कि बहुत से बच्चों का मन ग़रीबी के विचार से भर दिया जाता है, सुबह से शाम तक वे ग़रीबी ही ग़रीबी की सुनते रहते हैं। उनकी दृष्टि जिधर जाती है उधर ही दरिद्रता के चित्र उनको दिखाई पड़ते हैं। वे प्रत्येक मनुष्य के मुँह से ऐसे ही आत्म-घातक विचार सुनते हैं। मतलब यह कि उनमें चारों ओर से दरिद्रता ही दरिद्रता की प्रेरणा हुआ करती है।

इस बात में क्या आश्चर्य है कि जो बच्चे इस तरह के वायु-मण्डल में छोटे से बड़े होते हैं वे अपने माँ-बाप की दीनता भरी

स्थिति को फिर ताज़ा कर देते हैं, अर्थात् वे कटे पर नमक छिड़क देते हैं।

क्या आपने कभी इस बात का विचार किया है कि ग़रीबी से आप जो भय खाते हैं, सफलता में आपकी जो खिन्नता है, दुर्दिन से आपका जो कलेजा काँपता है, ये बातें आपको केवल दुःखी नहीं करती हैं परन्तु आपको अपनी आर्थिक दशा सुधारने के योग्य भी नहीं रखतीं ? इस तरह आप उस दुःसह भार को और भी भारी कर रहे हैं जो पहले ही आपसे नहीं उठता था।

कुछ परवाह नहीं कि आपके आसपास का दृश्य भयजनक हो, कुछ परवाह नहीं कि आपकी परिस्थिति कठोर हो। उस पदार्थ से आप अपने मन को हटा लीजिए जो आपको अहितकर मालूम होता हो, उस स्थिति से अपने मुख को मोड़ लीजिए जो आपको गुलाम बनाती हो और आपके सर्वोत्कृष्ट विकास में बाधा देती हो।

दुःख दरिद्रता के विचार रखकर कौन से तत्त्व से आप समृद्धि को उत्पन्न कर सकते हैं ? आपकी दशा आपके मानसिक भावों के—आपके आदर्श के अनुकूल रहेगी। क्या हमारे आदर्श और क्या हमारे मानसिक भाव, ये हमारी आत्मा में पैठ जाते हैं। यदि वे दरिद्रता के विचारों से ग्रस्त होंगे तो हमारी दशा भी वैसी ही रहेगी।

मान लीजिए, कि एक लड़का है जो वकालत के लिए प्रयत्न कर रहा है, पर उसे आशा नहीं है कि इसमें उसे पूरी सफलता मिलेगी, तब ज़रूर वह अपने प्रयत्न में असफल होगा। हम वही पाते हैं जिसकी हम आशा करते हैं। यदि हम किसी चीज़ की आशा न करें तो हमें कुछ भी न मिलेगा। नदी अपने उद्गमस्थान

से ज्यादा ऊंची नहीं उठ सकती। जो मनुष्य ग़रीब होने की पूरी या आधी अपेक्षा रखता है वह धनवान कभी नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपने सौभाग्य सूर्य की ओर मुंह करके सीधा खड़ा रहे। विजय और सुख प्रत्येक मानवप्राणी के स्थायी स्वत्व हैं।

कुछ लोग पैसा कमाना चाहते हैं पर वे अपने मन को इतना संकुचित रखते हैं कि वे उसे विपुलता से नहीं पा सकते।

वह मनुष्य जो समृद्धि की आशा करता है, हमेशा अपने मन-मन्दिर में समृद्धि की स्थापना करता रहता है और उसकी आर्थिक इमारत को बनाया करता है।

हमें चाहिए कि अब से हम सुख-समृद्धि की नई मूर्ति—नया आदर्श बनावें। क्या हमने बहुत दिनों तक दरिद्रता, दुःख और दुर्भाग्य के मालिक शैतान की आराधना नहीं की? अब हमें इसी विचार पर जम जाना चाहिए कि हमें हर एक चीज़ देने वाला ईश्वर ही है। यदि हम उसके साथ तल्लीन हो जावें, उससे निकटस्थ सम्बन्ध कर लें, तो परमात्मा के अटूट भण्डार से हर चीज़ विपुलता से हमें प्राप्त होगी और हमें किसी बात की कमी न रहेगी।

ग़रीब मनुष्य वह नहीं है जिसके पास थोड़ी-सी जायदाद है या जिसके पास कुछ जायदाद नहीं, ग़रीब वह है जो दरिद्रता के विचारों से ग्रस्त है, जिसकी भावना में दरिद्रता झलकती है, जिसके विचारों में दरिद्रता की परछाई दीख पड़ती है, जिसके गुण-ग्रहण की शक्ति में कंजूसी है, जो आत्म-पतन का अपराध करता है। मानसिक दरिद्रता अर्थहीनता के समान ही है जो हमें

ग़रीब बनाती है।

कितने थोड़े लोग इस बात को जानते हैं कि मन के साहसिक कार्य में कैसी ग़ज़ब की शक्ति भरी हुई है! दृश्य संसार में प्रकट होने के पहले हर चीज़ मानस-संसार में उद्भूत होती है। यदि हम किसी पदार्थ का मानसिक सृष्टि में अच्छी तरह निर्माण कर सकेंगे तो दृश्य सृष्टि में भी हम उसे अच्छी तरह बना सकेंगे।

कोई भी करोड़पति पहले अपनी मानस-सृष्टि में समृद्धिशाली स्थिति को उत्पन्न करता है जिससे समृद्धि उसकी ओर प्रबल वेग से जा पहुँचती है। बड़े-बड़े समृद्धिशाली पुरुष अपने हाथ से बहुत काम करते हैं, पर वे ख़ास कर अपने मन में समृद्धि की इमारत खड़ी किया करते हैं। वे कार्य्यकर स्वप्नों को देखते रहते हैं, वे अपने मानस-प्रवाह को अनन्त शक्ति के महासागर की ओर प्रवाहित करते रहते हैं और अपने आदर्श एवं अपनी अभिलाषा के अनुकूल फल उसमें से निकालते रहते हैं।

समृद्धि के नियमों का यथोचित रीति से पालन करने से जैसा प्रत्यक्ष लाभ होता है वैसा कंजूसी करके एक-एक कौड़ी जोड़ने से नहीं होता। कंजूसी से हमारी आत्मा मलिन, संकीर्ण, एवं अनुदार हो जाती है और इससे हमें विशेष लाभ भी नहीं होता। हम अपनी मनोधारा की ओर ही जाते हैं। यदि हम अपने मन को दु:ख, दरिद्रता और लाचारी की ओर लगायेंगे तो हमें इन्हीं की सी दशा प्राप्त होगी।

सौभाग्य और समृद्धि को प्राय: हम इसी अर्थ में लेते हैं कि हर चीज़ जो हमारे लिए लाभदायक है हमें मिलती रहे। आत्मा को प्रकाशित करने वाली प्रत्येक वस्तु हमें विपुलता से प्राप्त होती रहे। उन चीज़ों का हमारे पास भण्डार रहे जो श्रेष्ठ और अत्युच्च

हैं। सौभाग्य-समृद्धि उस प्रत्येक पदार्थ का नाम है जो हमारे व्यक्तित्व, हमारे अनुभव को वैभवशाली बनाता रहे।

सच्चा सौभाग्य, सच्ची समृद्धि तो आत्मिक वैभव, आत्मिक पूर्णता का आन्तरिक ज्ञान ही है।

: ३ :

कार्य और आशा

समृद्धि का आरम्भ पहले मन में होता है और जब तक मानसिक भाव उसके अनुकूल नहीं हो लेते तबतक उसकी प्रत्यक्ष सिद्धि होना असम्भव है। यह बात बहुत बुरी है कि हम यत्न करें एक वस्तु के लिए और आशा रक्खें किसी दूसरी की। जब आपको पद-पद पर असफलता दीखती है तब बताइए विजय-द्वार में आपका प्रवेश कैसे हो सकेगा ?

बहुत से लोग जीवन को ठीक राह पर नहीं लगाते। वे अपने प्रयत्न के अधिकांश को निर्बल और शक्तिहीन बना देते हैं, क्योंकि वे अपने मानसिक भाव को अपने प्रयत्न के अनुकूल नहीं बनाते, अर्थात् वे यत्न तो किसी और चीज़ के लिए करते हैं और चाहते हैं किसी और को। हाथ में लिये हुए कार्य के विपरीत मनोभाव रखने से वे उस कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। वे उस कार्य को इस निश्चय से हाथ में नहीं लेते कि उसमें हमें अवश्य सफलता और विजय प्राप्त होगी। यही कारण है कि उन्हें सफलता और विजय का आनन्द नहीं मिलता, क्योंकि सफलता और विजय के लिए दृढ़ निश्चय हो जाना ही मानो उनके लिए क्षेत्र तैयार करना है।

एक ओर तो हम धन की आकांक्षा किया करते हैं और दूसरी ओर यह कहते रहते हैं कि क्या करें हम ग़रीब हैं, दरिद्र हैं। इसका मतलब और कुछ नहीं केवल अपनी धन कमाने की योग्यता को कम करना है। ऐसे मनुष्यों के लिए यह कहना अनुचित

न होगा कि वे जाना तो चाहते हैं पूर्व की ओर पर अपने पैरों को बढ़ा रहे हैं पश्चिम की ओर।

ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो मनुष्य को उस दशा में सफलता लाभ करने में सहायता करे जब वह अपनी तत्सम्बन्धिनी योग्यता तथा शक्ति पर सन्देह कर रहा हो और यों असफलता के तत्वों को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा हो।

जो मनुष्य सफलता प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें विचार भी वैसे ही रखने चाहिए। उन्हें सुख, समृद्धि, उन्नति और सफलता की ही बातें सोचनी चाहिए।

जिस ओर आप अपना मुँह करेंगे उसी दिशा को आप जायंगे। यदि आप दरिद्रता, भीरुता की ओर मुंह करेंगे तो आपकी गति इन्हीं की ओर होगी। इसके विपरीत यदि आप इन की ओर से अपना मुँह मोड़ लेंगे, इन्हें धिक्कारेंगे, इनका विचार करना छोड़ देंगे, इनकी बात को ज़बान पर न लायंगे, तो आपकी उन्नति होने लगेगी, समृद्धि के आनन्द-भवन में आपका प्रवेश होने लगेगा।

बहुत से मनुष्य विपरीत भावना से, उलटे इरादे से कार्य करते हैं, अर्थात् उन्हें समृद्धिशाली होना रुचता है, पर उनके हृदय में यह विश्वास नहीं होता कि हम वैसे कैसे हो जायंगे। यही कारण है कि सफलता उनके लिए असम्भव-सी हो जाती है। सच है, हमारी दरिद्रता और अर्थहीनता के भाव ने ही, हमारे संशय और भय ने ही—हमारे आत्मविश्वास की कमी ने ही—हमारे अनन्त ऐश्वर्य के अविश्वास ने ही हमें ग़रीब, दरिद्र और लाचार बना रखा है।

आप ग़रीब का सा आचरण न करें जब कि आप अपनी सारी शक्ति पैसा कमाने में खर्च कर रहे हैं। आपको चाहिए कि

अपने मन का भाव ऊँचा और समृद्धियुक्त रक्खें। यदि आप अपने आस-पास के वायुमण्डल को बुरे विचारों से गन्दा रखेंगे तो आपके मन में भी वैसे ही संस्कार जम जायंगे और कभी आप अपनी ओर धन को आकृष्ट न कर सकेंगे। अंग्रेज़ी में एक कहावत है कि भेड़ जब-जब में-में करती है तब-तब वह अपने मुँह का ग्रास गँवा देती है। यही बात आप पर भी घट सकती है। हर बार जब आप अपने भाग्य को यों कोसते हैं कि "मैं ग़रीब हूँ, मैं वह काम नहीं कर सकता जो दूसरे करते हैं, मैं कभी धनवान न होऊंगा, मुझमें दूसरों की सी बुद्धि नहीं है, मेरी आशा और सफलता पर पानी फिर चुका, दैव मेरे विपरीत है", तब अपने आप पर विपत्ति का पहाड़ गिराते हैं और सुख-शांति को लूटने वाले शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के मार्ग को और कठिन बना देते हैं; क्योंकि जितनी बार आप उनके विषय में विचार करेंगे उतना ही उनके संस्कार आप की आत्मा में बैठते जायंगे।

ये विचार चुम्बक हैं जो अपने समान पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं। यदि आपका मन ग़रीबी और आधिव्याधि ही के विचारों में रमता रहेगा तो आप को अवश्य ही ग़रीबी और व्याधि से तङ्ग होना पड़ेगा। इस बात की संभावना नहीं हो सकती कि आप जिस तरह के विचार रखते हों उनके परिणाम उनके विपरीत हों, क्योंकि आपका मानसिक भाव ही उस इमारत का नमूना है जो आपके जीवन में बनती है। आपकी कार्य-निपुणता का आरम्भ पहले आपके अपने मन में ही होता है।

यदि आप हमेशा क्षुद्र व्यवसाय, तुच्छ व्यापार ही का विचार करते रहेंगे, उसीके लिए तैयारी करते रहेंगे, उसी की आशा लगाये रहेंगे, और हमेशा झींखा करेंगे कि "क्या करें वक्त बड़ा

नाज़ुक आगया है, व्यापार मंदा होता जा रहा है", तो समझ लीजिए कि इसका परिणाम आपके लिए बड़ा ही घातक होगा, व्यापार की उन्नति के सब द्वार आपके लिए बन्द हो जायंगे। सफलता—कामयाबी प्राप्त करने के लिए आप चाहे जितना जीतोड़ परिश्रम करें, यदि आपका विचार असफलता के भय से ग्रस्त हो रहा है तो समझ लीजिए कि यह विचार आपके परिश्रम को बेकार कर देगा, आपके प्रयत्न को पंगु बना देगा। इससे विजय—सफलता पाना आपके लिए असम्भव हो जायगा।

इस बात का डर रखने से कि कहीं हम असफल न हो जायं—हम तङ्गी में न आ जायं—लाचार न हो जायं, हजारों आदमी अपनी इष्ट सिद्धि से अर्थात् उन पदार्थों से जिनकी उन्हें चाह है बिल्कुल कोरे हाथ रह जाते हैं। क्योंकि इस तरह के डर से वे अपनी शक्ति को पंगु बना देते हैं, फिर उन्हें सफलता कैसे प्राप्त हो सकती है?

हमें चाहिए कि हर एक पदार्थ को ऐसे पहलू से देखें जो उज्वल, आशाजनक और निश्चयात्मक हो। हमें विश्वास कर लेना चाहिए कि जो कुछ होगा अच्छा ही होगा। सत्य की सदा विजय होगी। हमें निश्चय कर लेना चाहिए कि सत्य असत्य पर विजयी होगा। हमें जान लेना चाहिए कि एकता और स्वास्थ्य ही सत्य हैं, विरोध और व्याधि असत्य हैं—मानवी स्वभाव के प्रतिकूल हैं। ऐसे दिव्य विचार रखने से हम आशावादियों की शुभ श्रेणी में आ जायंगे, क्योंकि आशावादियों के ही ऐसे विचार होते हैं। इन्हीं विचारों से संसार में एक प्रकार का अलौकिक सुधार हो जाता है।

आशावाद मानव प्राणियों के लिए अमृत है। जैसे सूर्य से बनस्पति को लाभ होता है अथवा यों कहिए कि जीवन प्राप्त

होता है वैसे ही आशावाद से मनुष्यों में जीवन-शक्ति का संचार होता है। यह मनः-सूर्य का प्रकाश है जो हमारे जीवन को बनाता है—सौंदर्य की अलौकिक छटा से उसे विभूषित करता और उस का विकास करता है। मानसिक शक्तियाँ इस प्रकाश से वैसे ही फलती-फूलती हैं जैसे सूर्य के प्रकाश से वनस्पतियाँ।

निराशावाद का परिणाम ठीक इसका उलटा होता है। यह भयङ्कर राक्षस है जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है, जो हमारी बढ़ती नहीं होने देता।

जो मनुष्य हर चीज़ के अन्धकारमय पहलू को देखता है, जो हमेशा बुराई और असफलता के ही वचन मुंह से निकाला करता है, जो केवल जीवन के अंधकारमय एवं अप्रीतिकर अंश ही को देखा करता है, उसकी राह दुःख और दारिद्य सदा देखते रहते हैं।

किसी वस्तु में यह शक्ति नहीं कि उस पदार्थ को खींचे जो उसके विपरीत गुण वाला है। हर पदार्थ अपने गुण को ही प्रकाशित करता है और उन्हीं चीज़ों को अपनी ओर आकृष्ट करता है जो उसके समान गुण-धर्म वाली होती हैं। यदि कोई चाहे कि मैं सुखी और समृद्धिशाली होऊं तो उसे चाहिए कि वह सुख-समृद्धि के विचार किया करे, इफ़रात के ख़याल से अपने मन को हरा-भरा करता रहे, अपनी आत्मा को उदार बनाता जाय। जिसे ग़रीबी का भय है उसके पीछे ग़रीबी भी हाथ धो कर पड़ती है।

यदि आप सुख प्राप्त करना चाहते हों तो दुःख के विचार को हटा दें; यदि धन प्राप्त करना चाहते हों तो ग़रीबी के ख़याल को तिलांजली दे दें। जिन चीज़ों से आप भय मानते हों उनसे अपना किसी तरह का सम्बन्ध मत रखिए। ये आपकी उन्नति

के, आपके विकास के घोर शत्रु हैं । उनका समूल नाश कर दीजिए । अपने मन से उन्हें निकाल डालिए, उन्हें भूल जाइए । आप अपने मनोमन्दिर में उन्हीं पदार्थों के विचारों को जगह दें जिन्हें आप चाहते हों, जिनकी प्राप्ति से आपकी आत्मा सन्तुष्ट और आनन्दित होती हो; फिर यह देखकर आपके आश्चर्य का पार न रहेगा कि वे पदार्थ जिनकी आप बाट जोह रहे थे खुद आपकी ओर खिंचे चले आ रहे हैं ।

हम अपने कार्य के लिए, उद्देश्य के लिए जो मनोभाव बनाते हैं उसका उनके साथ अर्थात् उस कार्य और उस उद्देश्य के साथ गहरा सम्बन्ध हो जाता है । यदि आप यों झींखते हुए किसी काम पर जाते हों कि "क्या करें मजबूरन ऐसा क्षुद्र काम करना पड़ता है, इसमें तो बड़ी परेशानी है । इससे हम कैसे तरक्की पा सकेंगे ? क्या भगवान ने ऐसा काम हमारे सिर रखकर जन्म भर ही के लिए रूखी-सूखी रोटी हमारे पल्ले बाँधी है ? क्या हम हमेशा कड़ी धूप में मरा करेंगे ? क्या हमें कभी आराम न मिलेगा ? क्या हमेशा ही ग़रीबी में सड़ा करेंगे ?" तो निश्चय समझ लें कि इस तरह के कातर विचार आपको उन्नति से बहुत दूर रक्खेंगे । आप ऐसी ही परेशानी की हालत में सड़ा करेंगे ।

इसके विपरीत यदि आप अपने भविष्य को प्रकाशमय देखते रहें, यदि आप यह विश्वास कर लें कि शीघ्र ही तुच्छ काम से निकलकर हम उन्नति के शिखर पर पहुँचने वाले हैं, हम अपने क्षुद्र जीवन से निकलकर उस समुन्नत जीवन में जा रहे हैं जहाँ सौन्दर्य, शान्ति और आनन्द भरे हुए हैं, यदि आपकी अभिलाषाएं निर्दोष हैं और आप अपनी आँखों को अपने उस चरम उद्देश्य पर लगाये हुए हैं जिसके विषय में आपको

विश्वास है कि वह अवश्य सिद्ध होगा और यदि आपको यह विश्वास है कि आप में उस उद्देश्य को सिद्ध कर लेने की योग्यता है, तो आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

यदि हम अपने मन में यह निश्चय कर लें कि कभी न कभी हम अमुक कार्य को अवश्य पूरा कर सकेंगे, हम अपने उद्देश्य पर दृढ़ता से जमे रहेंगे। यदि इस बात का पक्का भरोसा हो जाय कि कहीं भी किसी तरह हम उसे सफलतापूर्वक सिद्ध कर सकेंगे, तो हमारे मनमें वह उत्पादन-शक्ति आ जायगी जो हमारा मनोवांछित फल प्राप्त कराने में हमारी बड़ी सहायक होगी।

मैंने एक भी मनुष्य नहीं देखा कि जिसको अपनी आत्मा में विश्वास होते हुए भी, हाथ में लिए हुए कार्य को पूरा करने की योग्यता पर पूरा भरोसा होने पर भी, अपने उद्देश्य की ओर निरन्तर अपनी आँख लगाये रखने पर भी, उसकी प्राप्ति के लिए उचित प्रयत्न करने पर भी सफलता प्राप्त न हुई हो। उच्चाभिलाषा पहले आत्म-प्रेरणा के रूप में प्रकट होती है और फिर सिद्धि के रूप में।

आप हमेशा इस बात का यत्न करते रहिए कि आपके विचार उच्च और महत् बने रहें। जो कुछ आप करना चाहते हों उसके विषय में कभी संशय मत कीजिये।

संशय बड़े घातक हैं। ये हमारी उत्पादक शक्ति को नष्ट कर देते हैं—हमारी अभिलाषा को पंगु और शक्तिहीन कर देते हैं। आप अपने हृदय पर हाथ रखकर अपने मन को यह सूचना करते रहें कि जिस चीज़ की ज़रूरत मुझे है वह मुझे अवश्य मिलेगी, यह मेरा अधिकार है और मैं उसे प्राप्त करने जा रहा हूं।

हमेशा अपने मन में यह विचार रखिए कि हम सफलता के लिए, विजय के लिए, सुस्वास्थ्य एवं सुख के लिए और परोपयोग

के लिए बनाये गये हैं और हमें इनसे कोई वंचित नहीं रख सकता। इस तरह के आशामय उद्गारों को बार-बार दुहराने की अपनी आदत डाल लीजिए। अपनी अन्तिम विजय पर निश्चयात्मक विचार प्रकट करने की अपनी बान बनाइए और उसका चमत्कारिक फल देखिए कि आपका मनोवांछित पदार्थ किस तरह आप की ओर खिंचता चला आ रहा है। पर एक बात का स्मरण रखिए कि आपके उद्गारों में, आपके मनमें तिलमात्र भी संशय न घुसने पाए।

शक्तिसागर परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि मनुष्य अपनी परिस्थिति के हाथ की कठपुतली—अपने आस-पास की दशा का गुलाम बना रहे। उसकी यह इच्छा है कि मनुष्य अपनी परिस्थिति को आप बनाए।

हमारी मानसिक शक्तियाँ हमारी सेविकाएँ हैं। जो कुछ हम उनसे चाहते हैं वे हमें वही देती हैं। यदि हम उन पर विश्वास रखें, उन पर अवलम्बित रहें तो वे अपनी बढ़िया से बढ़िया चीजें हमें देंगी।

जिन लोगों की प्रकृति निशेधात्मक रहती है वे इस बात की राह देखा करते हैं कि देखें क्या होता है, ऊंट किस करवट बैठता है। उनमें यह शक्ति नहीं होती कि वे हर चीज़ को अपने अनुकूल बना लें।

वह निश्चयात्मक प्रकृति ही है जिससे दुनिया के बड़े-बड़े काम हुए हैं। इससे मनुष्य अपना मन-चाहा काम कर सकता है।

प्राय: ऐसा भी देखा जाता है कि बहुत से मनुष्य बाहरी प्रभाव से अपनी निश्चयात्मक प्रकृति को निषेधार्थक प्रकृति में बदल देते हैं। वे अपने आत्म-विश्वास को खो देते हैं। उनका

अपनी शक्ति से विश्वास उठता जाता है, क्योंकि वे लोगों के निराश जनक वचनों से प्रभावित हो जाते हैं, लोगों से वे हमेशा अपूर्णता के विचार सुना करते हैं। लोग उनसे कहा करते हैं कि तुम्हें अपने व्यवसाय का ज्ञान नहीं। तुम उस व्यवसाय के योग्य नहीं हो। इससे उनकी प्राथमिक शक्ति मारी जाती है और फिर वे किसी कार्य को पहले जैसे उत्साह से नहीं करते। वे अपनी निर्णय करने की शक्ति खो देते हैं, किसी महत्वपूर्ण कार्य का निर्णय करने से डरते हैं। उनका मन स्थिर नहीं रहता। इस तरह वे नेता होने के बदले अनुयायी हो जाते हैं।

हमारी आत्मा में एक बड़ी अलौकिक शक्ति भरी हुई है, जिसका विवेचन हम नहीं कर सकते पर जिसका अनुभव हमें होता है। वह हमारी आज्ञाओं को मानती है, हमारे निश्चय को कर्यान्वित करती है।

मान लीजिए, हम यह विचार करें, यह मान बैठें कि हम नाचीज़ हैं, तुच्छ हैं, क्षुद्र हैं; हीन कीड़े हैं; हम दूसरों के समान नहीं हैं। तो हमारी आत्मा के रजिस्टर में ये सब बातें लिख ली जायंगी और उसका परिणाम यह होगा कि हम सचमुच वैसे ही बन जायंगे। यदि हम तङ्गी, कमज़ोरी, अयोग्यता, अकर्मण्यता के विचारों को ही प्रकट करते रहेंगे तो इनका प्रतिबिम्ब हमारी आत्मा में पड़ेगा, जो बड़ा ही अशुभ है।

इसके विपरीत यदि हम निश्चयपूर्वक यह मानें कि विश्व की तमाम अच्छी चीज़ों के हम अधिकारी हैं,उन पर हमारा स्वाभाविक अधिकार है; और यदि हमें ऐश्वर्य पर दृढ़ विश्वास है, हम दृढ़ता से इस बात को मानते हैं कि हम अपने जीवनोद्देश्य को भली भांति पूरा कर रहे हैं, यदि हमारा यह निश्चय है कि शक्ति मेरी है, स्वास्थ्य मेरा है, आधि-व्याधि, निर्बलता और विरोध से

मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है, तो मानो हम अपने मनमें ऐसी उत्पादक और निश्चयात्मक शक्ति उत्पन्न कर रहे हैं जो हमारी सब अभिलाषाओं, सफल मनोरथों को, ऊंचे जीवनोद्देश्य को परिपुष्ट कर सफल करेगी, पतित दशा से हमारा उद्धार करेगी।

विचार दो तरह के होते हैं। एक वे जो हमारे शरीर, हमारे मन, हमारी आत्मा को परिपुष्ट और पूर्ण करते हैं, उनमें दिव्यता लाते हैं,उन पर आनन्द,उत्साह और तेज की वर्षा करते हैं। दूसरे वे जो हमारे शरीर, हमारी आत्मा को गिराते हैं, उन्हें निर्बल और हीन बनाते हैं, दुःख दरिद्रता, आधि-व्याधि के दुर्भाव से उन्हें गंदा करते हैं। पहले प्रकार के विचार हमारे रक्षक हैं, दूसरे प्रकार के विचार भक्षक।

हमारी विचार-शक्ति में कितना बल है, कितना दृढ़ाग्रह है, इस बात से हम अपनी कार्य-सम्पादिका शक्ति का परिमाण जान सकते हैं। बहुत से मनुष्यों की विचार-शक्ति इतनी कमज़ोर,इतनी निर्बल होती है कि वे अपने मन को आवश्यक कार्यकारी बल से सुसंगठित नहीं कर सकते। इससे वे संसार में अधिक कार्य नहीं कर सकते।

हम किसी मनुष्य से मिलते ही यह बात कह देंगे कि उसकी विचार-शक्ति प्रबल है या निर्बल, क्योंकि उसके मुंह से निकलने वाले शब्दों से इस बात का पता चल जायगा।

बहुत से मनुष्यों की विचार-शक्ति ऐसी प्रबल होती है कि दूसरों पर वे अपना प्रभाव तत्काल जमा लेते हैं। उनके दर्शन से ही लोगों में नवजीवन का संचार होने लगता है। दुनिया अपने आप ऐसे आदमियों के लिए रास्ता कर देती है। संसार में वे शक्ति का प्रकाश फैलाते हैं; संसार का संचालन करते हैं। उनके शब्दों से संसार के बड़े-बड़े कार्य हो जाते हैं, क्योंकि लोगों की

यह स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वे उच्च आत्मा की आज्ञा पालन करने में अपना अहोभाग्य मानते हैं।

जब हम किसी सच्चे महात्मा से, किसी दिव्य पुरुष से मिलते हैं, तो उसकी और हमारी पहले की जान-पहचान न रही हो तो भी उसके दर्शनमात्र से हमें ऐसा मालूम होने लगता है मानो वह हमारे शरीर में एक अलौकिक भावना का—दिव्य जीवन का संचार कर रहा है। उस समय हमारे हृदय पर एक अद्भुत प्रभाव पड़ने लगता है। हमें यह तत्काल मालूम होने लगता है कि इस पुरुष में नेता होने की शक्ति मौजूद है; इसमें वह शक्ति विद्यमान है जो सृष्टि का संचालन कर सकती है। ऐसे पुरुष के विषय में हमें विश्वास होने लगता है कि इसकी कार्यसिद्धि में कोई भी बाधा उपस्थित नहीं कर सकता। इसके विपरीत जब हम किसी संकीर्ण हृदय वाले मनुष्य से मिलते हैं तो उसके हृदय का हम पर निर्बल और निषेधात्मक प्रभाव पड़ता है। उसको देखते ही हमें मालूम होने लगता है कि इसका अधःपतन हो चुका, यह अपने पथ पर प्रकाश नहीं डाल सकता। यदि हम चाहते हों कि लोगों को हमारी शक्ति का परिचय मिले तो हम अपनी शक्तियों का विकास करें।

यह विद्या सब विद्याओं में शिरोमणि है कि हम अपने जीवन को स्थायी सफलता और विजय से विभूषित करें, और यह कार्य कुछ कठिन नहीं है, यदि हमारा जीवन ठीक तरह से संस्कृत किया जाय।

यदि कोई ग्रेजुएट उक्त विद्या का ज्ञान प्राप्त किये बिना ही संसार में प्रवेश करता है तो समझ लीजिए उसका नाश, उसकी असफलता बहुत दूर नहीं है। उसके संशय, उसका भय, उसकी आत्मविश्वास की न्यूनता, उसकी डरपोक और निषेधात्मक प्रकृति

उसके मन को निषेधात्मक बनाकर उसकी निश्चयात्मक, उत्पादक और स्वाभाविक शक्ति को पूर्णतया नष्ट कर देंगे और उसे बहुत ही बुरी स्थिति में ला पटकेंगे।

सारे संसार के दर्शनशास्त्र और भाषाएं जानने की अपेक्षा विद्यार्थी के लिए यह जान लेना विशेष लाभदायक है कि अपने मन को निश्चयात्मक रखकर वह किस तरह अपनी सर्वोच्च उत्पादक शक्ति की उन्नति कर सकता है।

प्रायः हम देखते हैं कि बहुत से कालेजों में उपाधिधारी ग्रेजुएट इस कारण असफल हो जाते हैं कि उन्होंने अपनी मानसिक प्रकृति को निषेधात्मक बना रक्खा है। हम समझते हैं कि अपनी असंस्कृत और अविकसित मानसिक शक्तियों को संस्कृत करना और अपनी कमज़ोर और लूली प्रकृति को वैज्ञानिक रीति से सुसंगठित करना कहीं अधिक श्रेयस्कर है; क्योंकि ऐसा करने से हम कालेज के पठन-पाठन में भी बहुत अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं और अपने भावी संसार को भी सुख-सफलता से भरा हुआ बना सकते हैं।

निश्चयात्मक विचार से निर्माण-शक्ति का विकास होता है जो अन्य सब मानसिक शक्तियों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। यदि आपका मन निषेधात्मक वृत्ति की ओर झुक रहा है, आप में किसी कार्य का आरम्भ करने की शक्ति का अभाव है, और आप चाहते हैं कि हममें निर्माणकारी शक्ति का विकास हो तो इसका अच्छा उपाय यही है कि आप अपने मनको इस दुष्प्रवृत्ति से हटाकर हर वस्तु की ओर निश्चयात्मक दृष्टि से देखने का अभ्यास कीजिए। यह बात उस दशा में भी हो सकती है जब आप बाह्य कार्य से प्रवृत्त होकर आराम कर रहे हों। निषेधात्मक विचार हमेशा कमज़ोरी पैदा करते हैं। सचमुच यह बहुत अच्छी

बात है कि हम अपने मन को कुछ समय तक बाह्यप्रपञ्चों से निवृत्त रक्खा करें, समय समय पर उसे थोड़ा आराम लेने दें। निषेधात्मक मन और निवृत्त मन में बड़ा फ़र्क़ है। निषेधात्मक मन दोषपूर्ण है, निवृत्त मन निर्दोष।

हम अपने मनक्षेत्र में जैसे बीज बोते हैं वैसे ही अंकुर उगते हैं। यदि हम उसमें दुःख, दरिद्रता, द्रोह, वैर, विरोध के बीज बोएंगे तो फल भी इन्हींके निकलेंगे। और यदि हम उसमें सुख, संतोष, समृद्धि, ऐक्य, प्रेम, दया और सहानुभूति के विचार बोयेंगे तो फल इन्हींके से मीठे निकलेंगे।

मान लीजिए—मन, वचन और काया से इस बात का विश्वास कर लीजिए कि अब भी हम वैसे ही मनुष्य हैं जैसे हम होना चाहते हैं, जैसा कि हमारा आदर्श है। हम कमज़ोर नहीं, दरिद्र नहीं; शक्तियुक्त और महान् आत्मा हैं। ऐसा करने से थोड़े ही दिनों में आपको मालूम होगा कि आपके आदर्शों की सिद्धी बड़ी शीघ्रता के साथ आपकी आत्मा में हो रही है, और उन आदर्शों से आपका चरित्र परिपुष्ट हो रहा है।

हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो हमें ऊंचा उठावें, उन गुणों की जो हमारी आत्मा में दिव्यता लावें, उन गुणों की जो हमारे विकास पर दिव्य प्रकाश डालें, उन गुणों की जो हमारी निर्माण-शक्ति को तेज़ और हमारी अकर्मण्यता और दुःख-दारिद्रय का नाश करें।

जब भूमि की, वायुमण्डल की, सूर्य के प्रकाश की और वर्षा की रासायनिक शक्ति पेड़-पौधों पर अपना रासायनिक प्रभाव डालना छोड़ देती है तभी से उनके नाश का सूत्रपात होता है। उनमें वे कीटाणु घुसने लगते हैं जो उनके नाश के कारण होते हैं। इसी तरह मनुष्य में जब उत्पादन शक्ति का—उस शक्ति का

जो उसकी आत्मा, मन और शरीर को सुसंगठित करती है, आविर्भाव होना बन्द हो जाता है, तब उसकी दशा भी ठीक इन पेड़-पौधों जैसी होने लगती है, नाशक तत्त्व उसको खाने लगते हैं।

जब मनुष्य अपने मन के भाव को सुनिश्चित कर लेता है तब उसमें दूसरों की बुरी विचार-प्रेरणा से बचने की शक्ति आ जाती है। मान लीजिए, आप किसी ऐसी स्थिति में रखे गए हों जहाँ आपको बुरे विचार सुनने को मिलते हैं, चारों ओर से बुरे-ही-बुरे दृश्य आपकी नज़र में पड़ रहे हैं। ऐसी दशा में यदि आपने अपने मनको उस शक्ति से सम्पन्न कर रखा हो जो आपको इनके बुरे प्रभावों से बचाती रहे तो आप इनके विघातक पंजों से अपनी रक्षा कर सकते हैं।

इसके विपरीत यदि हम अपने मनोभाव को बुराई के अनु-कूल, बुराई का ग्राहक बनावें, यदि हम अपने मन से उसको प्रोत्साहन दें, उसका आदर करें, तो वह हम पर अपना ज़बरदस्त प्रभाव जमाना शुरू कर देगा।

यदि हम अपने मन को अपने उद्देश्य की ओर झुकाए रखें, यदि हम अपने जीवन-प्रवाह, अपनी आत्मिक शक्तियों के स्रोत को अपने चरमोद्देश्य की ओर बहाएं, तो हमें वह अलौकिक साधन प्राप्त होगा,जिससे हम अपने इष्ट की सिद्धि कर सकेंगे।

विरोध उत्पन्न करने वाला विचार हमारे परिश्रम को पंगु कर देता है। यदि हम कार्य-सम्पादन की शक्ति उत्पन्न करना चाहते हैं तो हमें तल्लीनता, एकता, मानसिक शान्ति और विचार स्वातन्त्र्य को उत्पन्न करना चाहिए। इसी बात को हम दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि हमारा विचार-प्रवाह जीवन-नाशक होने के बदले जीवनप्रद होना चाहिए। यह मानसिक प्रवाह जो

साहस से भरा हुआ है, आत्म-विश्वास से पूर्ण है, विद्युतशक्ति से भरा मानसिक बल है जो सफलता और विजय को हमारी ओर आकृष्ट करता है।

बहुत से मनुष्य जो असफलता और पराजय के पंजे में फंसे हुए हैं, आसानी से उससे अपने आपको मुक्त कर सकते हैं, यदि वे अपने मन से इस तरह के विचारों को हटा दें। अपने मन को भय, चिन्ता, दारिद्र्य, आधि-व्याधि से साफ़ रखना और उसे प्रबल, आशाजनक तथा उन्नति के विचारों से भरना, यह भी एक उत्कृष्ट विद्या है।

हमारे मानसिक भावों का, हमारी आशाओं का, हमारी कीर्ति का हमारी सफलता से घनिष्ट सम्बन्ध है। दूसरे लोग हमें कैसा समझते हैं, इस बात से भी हमारी सफलता का सम्बन्ध है। यदि लोग हमारा विश्वास न करते हों, हमें निर्बल और भीरू मानते हों, तो समझ लेना चाहिए कि हमारा मानसिक प्रकाश मन्द है, हमारी मानसिक शक्ति कमज़ोर और निर्बल है और हम महत्त्व के पद पर न पहुँच सकेंगे।

जो मनुष्य विजय का जीवन व्यतीत करता है, संसार में विजेता बन कर विचरता है उसमें और उस मनुष्य में जो दास होकर संसार में रहता है, बड़ा फ़र्क़ है।

अमेरिका के स्वर्गीय राष्ट्रपति थियोडोर रुज़वेल्ट जैसे महापुरुषों की, जो चारों ओर अपनी शक्ति का प्रकाश फैलाया करते हैं आप यदि उन लोगों से तुलना करेंगे जो डरपोक हैं, निर्बल हैं, दासभाव रखने वाले हैं,जिनका प्रभाव दुनिया पर बहुत कम पड़ता है, तो आपको दोनों का फ़र्क़ मालूम हो जायगा। संसार उस पुरुष का, उस वीर का सम्मान करता है जो दास नहीं किन्तु विजयी बनकर निकलता है, जो दुनिया को इस बात का विश्वास

करा देता है कि उसकी विजय अवश्यम्भावी है।

अपनी शक्ति पर विश्वास करना ही संसार में उसका प्रकाश करना है। यदि आपके मानसिक भाव में शक्ति की स्फूर्ति नहीं होती तो दुनिया आपको शक्तिशाली के पद से सम्मानित नहीं करती।

कुछ लोगों को इस बात पर आश्चर्य होता है कि समाज में वे इतने तुच्छ क्यों गिने जारहे हैं, क्यों उनका महत्त्व नहीं बढ़ता। इसका कारण यही है कि वे अपने आपको विजेता नहीं मानते, न विजेता का-सा आचरण ही करते हैं।

वे अपने मन में विजय के उत्साहमय विचारों का प्रवाह नहीं बहाते। वे सदा निर्बलता के ही भावों का सृजन करते हैं। कोई मनुष्य तबतक प्रभावशाली नहीं हो सकता जबतक वह शक्ति के रहस्य का ज्ञान प्राप्त न कर ले। निश्चयात्मक प्रकृति के मनुष्य ही प्रभावशाली हो सकते हैं। वीरों ने पहले मानस-संसार पर विजय प्राप्त की है, फिर पार्थिव संसार पर।

हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों के मन को विजय के विचारों से भर दें। उन्हें समझा दें कि तुम्हारा जीवन ही विजय के लिए, सफलता प्राप्त करने के लिए है। हमें उन्हें बता देना चाहिए कि विजयी को ही संसार में स्थान मिलता है, विजय की ही धाक से संसार में बड़े-बड़े परिवर्तन होते हैं। इसके विपरीत निर्बल को संसार में स्थान नहीं मिलता, अत्याचारों से बचने की शक्ति न होने के कारण उस पर बड़े-बड़े अत्याचार होते हैं। वह जगह-जगह ठोकरें खाता है, घोर अपमान सहता है। दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि विजय ही जीवन है और पराजय मृत्यु।

युवा पुरुष को संसार में प्रवेश करते समय यों नहीं सोचना चाहिए कि "मैं विजय तो प्राप्त करना चाहता हूं पर मुझे अभी

इसका विश्वास नहीं कि मैं कहां तक इसके योग्य हूं। मैं जिस व्यवसाय में लगा हुआ हूं उसमें पहले ही से इतने लोग घुसे हुए हैं कि उन्हींका पेट नहीं भरता। बहुत से लोग बेकार हो रहे हैं। मैं समझता हूं कि मैंने सख्त ग़लती की। पर मैं अपने कार्य को अच्छी तरह करने की शक्तिभर कोशिश करूंगा; कुछ तो अच्छा-बुरा फल निकलेगा ही।"

सच बात यह है कि लोग जो कुछ काम करते हैं उसीसे हमारा वज़न करते हैं, न कि जो कुछ हम कहते हैं उससे। हमें अपने सत्य का प्रकाश करना चाहिए। हम मनमानी बातें बना सकते हैं,पर हमारे मानसिक प्रकाश की जो प्रभा लोगों पर पड़ेगी उसीसे वे हमारे प्रभाव की क़ीमत आंकेंगे, क्योंकि यही हमारा सत्य है। चाहे आप कितनी ही चिकनी-चुपड़ी बातें बनावें, पर आप अपने विषय में दूसरों के विचार बदल नहीं सकते। यदि आपके हृदय में द्वेष और प्रतिहिंसा के विचार गूंज रहे हैं, यदि आपका अंतःकरण दूसरों की जलन से जल रहा है, यदि आपके मन में निर्बलता घुसी हुई है, तो दूसरों को आपके मन के ये सब कुभाव फौरन मालूम हो जायंगे। हम अपने शब्दों से लोगों को धोखा दे सकते हैं,पर तब तक अपनी मानसिक प्रभा को नहीं बदल सकते जबतक हम अपना सारा मानसिक प्रभाव ही न बदल डालें।

ज़रा उस आदमी की शोचनीय दशा की ओर आंख उठाकर देखिए, जो यों कहता रहता है—"हे समृद्धि! तू मुझसे दूर रह। मेरे पास मत आ। अवश्य ही मैं तुझे प्राप्त करना चाहता हूँ, पर ईश्वर ने तुझे मेरे लिए नहीं सृजा। मेरा जीवन बहुत ही असहाय है। यद्यपि मैं चाहता हूं कि मुझे वे सब उत्तम वस्तुएं प्राप्त हों जो भाग्यवानों को प्राप्त हैं, पर मैं आशा नहीं करता कि

वे मुझे मिलेंगी।" जिस मनुष्य के इस तरह के विचार होते हैं, समृद्धि और ऐश्वर्य उसके पास फटकते तक नहीं। जहां मन में भय और संशय रहता है वहां ऐश्वर्य का प्रवेश नहीं हो सकता।

पर समय आ रहा है जब हम लोग उत्पादक शक्ति से अपने मन को भर लेंगे और तब हमारा जीवन ऐश्वर्य में परिपूर्ण हो जायगा।

: ४ :

आत्म-विश्वास

वह पशुपालक सफलता मिलने की आशा कैसे कर सकता है जो भयङ्कर और जंगली जानवर के कटघरे में शुरू ही में भय और संदिग्ध मन से प्रवेश करता है। कोई यों सोचता हुआ उस में घुसता है—"मैं जंगली जानवरों को वश में लाने की कोशिश करूँगा, पर मुझे इसका पूरा विश्वास नहीं कि वास्तव में मैं ऐसा कर सकूंगा। अफ्रीका के जंगलों से शेर पकड़ लाने की कोशिश करना मनुष्य के लिए मौत के साथ खेलना कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। ऐसे आदमी हैं जो ऐसे भयानक कार्य कर सकते हैं, पर मुझे सन्देह है कि शायद ही मैं ऐसे काम में सफलता प्राप्त करूँ।" यदि मनुष्य इस प्रकार के निर्बल, संदिग्ध और भययुक्त विचारों से किसी जंगली जानवर का सामना करे तो इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि वह जानवर उसकी हड्डी-पसली चबा जायगा। ऐसे समय तो अविचल साहस और धैर्य ही उसकी रक्षा कर सकते हैं। ऐसे मनुष्य को चाहिए कि पहले उस पशु को अपनी आँख से वश में लाए। उसकी आँख में वह भाव झलकना चाहिए जो चित्ताकर्षक, हृदयग्राही, निडर और निश्चयात्मक हो, क्योंकि जहाँ उसकी आँख में ज़रा भी भय या भीरुता का भाव झलका कि समझ लीजिए उसकी जान गई।

इसी प्रकार जीवन-संसार में मनुष्य तबतक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता जबतक उसके मन में यह विश्वास न हो जाय

कि जिस वस्तु के लिए मैं यत्न कर रहा हूँ उसे प्राप्त भी करता जा रहा हूँ।

हम व्यापार में प्रवेश करने की इच्छा रखने वाले उस नवयुवक से सफलता की किस प्रकार आशा रख सकते हैं जिसके मन में शुरू ही में यह सन्देह होता है कि देखूं मैं इस व्यापार में सफलता प्राप्त कर सकता हूँ या नहीं। तबतक किसी को किसी तरह की सफलता प्राप्त नहीं हो सकती जबतक कि सफलता पर उसका हार्दिक विश्वास न हो जाय, जबतक कि उसका यह दृढ़ निश्चय न हो जाय कि एक दिन मैं बहुत बड़ा व्यापारी हो जाऊंगा। मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है जिसकी सिद्धि में उसका सच्चा विश्वास हो।

वह नवयुवक कैसे धनवान हो सकता है जिसका विश्वास नहीं है कि मैं धन पैदा कर सकूंगा, जो यह मानता है कि थोड़े ही मनुष्यों के भाग्य में धन बदा है, ज्यादातर आदमी ग़रीब रहते हैं और मैं भी उन्हीं में से हूँ।

वह मनुष्य कैसे विद्या प्राप्त कर सकता है जिसकी दृष्टि में निराशा का भाव भरा हुआ है, जो हमेशा झींखा करता है कि "हाय! क्या करूँ। मैं चाहता तो हूँ कि लिखूं-पढ़ूँ, पर परमात्मा ने मुझे निःसहाय उत्पन्न किया है। मुझे किसी तरह का सुभीता नहीं है। न मेरे पास पैसा है और न मेरा कोई सहायक ही है। इस बुरी स्थिति के कारण मैं लाचार हो रहा हूँ। इसीसे पढ़ाई-लिखाई के द्वार मेरे लिए बन्द होगए हैं।" वह युवक किस तरह ऊंचे पद पर पहुँच सकता है जिसका ख़याल है कि मैं उस पद के योग्य नहीं हूँ।

मैंने ऐसे बहुत से नवयुवकों को देखा है जिनमें से कोई वकील,

कोई डाक्टर और कोई व्यापारी होना चाहता था पर उनकी इच्छा-शक्ति इतनी निर्बल थी, उनका निश्चय इतना ढीला था कि पहली ही कठिनाई ने उन्हें अपने उद्देश्य से विचलित कर दिया, उनके पैर फिसला दिए। वे अपने काम को ठीक तरह से शुरू भी न कर पाए थे कि निर्बल निश्चय ने उन्हें उससे विरत कर दिया। मैं कहता हूँ कि उनकी दिशा बदलने में एक छोटी-सी बात ने अद्भुत प्रभाव दिखाया।

मैं ऐसे भी बहुत से नवयुवकों को जानता हूँ जिन्होंने अपने व्यवसाय को निश्चित करने में इतने उत्साह और शक्ति से काम लिया था कि कोई उन्हें अपने उद्देश्य से हटा न सका। क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण अन्तःकरण से इस बात को मान लिया था कि हमारा उद्देश्य हमसे अलग नहीं, वह हमारे शरीर का एक विशेष और महत्त्वपूर्ण अंग है। यदि हम अविचल साहस द्वारा सम्पादित उन बड़े-बड़े कार्यों का उनके कर्त्ताओं से विश्लेषण करें तो आत्म-विश्वास ही सबसे प्रधान गुण निकलेगा। वह मनुष्य अवश्य सफलता प्राप्त करेगा जिसको अपनी कार्य-सम्पादन-शक्ति पर विश्वास है, जो मानता है कि मुझमें वह योग्यता है जिससे मैं उस कार्य को जिसको मैंने हाथ में लिया है अवश्य ही पूरा कर सकूंगा। इस तरह के विश्वास का मानसिक प्रभाव केवल उन्हीं लोगों पर नहीं होता जो ऐसा विश्वास रखते हैं, उन लोगों पर भी होता है जो उनके पास उठते-बैठते तथा उनसे सम्बन्ध रखते हैं।

जब मनुष्य को मालूम होने लगता है कि मैं प्रभुता प्राप्त करता जा रहा हूँ—ऊंचा उठता जा रहा हूँ, तभी वह आत्म-विश्वास-भरी बातें करने लगता है, तभी वह अपनी विजय पर

है। संसार विजयी पर विश्वास करता है। संसार उस मनुष्य का विश्वास करता है जिसके चेहरे पर विजय के भाव झलकते हों।

हम उन लोगों का स्वभाव ही से विश्वास करने लगते हैं जो अपनी शक्ति का प्रभाव हम पर डालते हैं। बिना आत्म-विश्वास के वे ऐसा नहीं कर सकते। वे ऐसी हालत में हमपर प्रभाव नहीं डाल सकते जब उनका मन भय और शंकाओं से भरा हुआ रहता है। कुछ मनुष्यों में ऐसी अलौकिक शक्ति होती है कि उनके दर्शन-मात्र से ही हमारे हृदय पर अपने आप उनका आध्यात्मिक प्रभाव पड़ने लगता है। हमें उनमें एक अद्भुत प्रकार की दिव्यता दिखने लगती है। वे हमारे विश्वास को अपनी ओर खींच लेते हैं। हम उनकी शक्ति पर विश्वास करने लगते हैं। ऐसा क्यों न हो जब कि वे अपनी शक्ति पर निरन्तर दिव्य प्रकाश डाला करते हैं—उसे अधिकाधिक उज्वल बनाते रहते हैं।

आपने अवश्य ही ऐसे बहुत से लड़कों को देखा होगा जो शिक्षा और योग्यता के लिहाज़ से समान होते हैं, पर उनमें से कुछ तो अपने उद्देश्य की ओर वीरता और धीरता के साथ पैर बढ़ाते जाते हैं और कुछ इसी बात की प्रतीक्षा किया करते हैं कि कोई दूसरा आदमी हमारे लिए मार्ग ढूंढ़ दे। आप जानते हैं कि दुनिया को इस बात की फ़ुरसत नहीं कि वह आपकी योग्यता की ओर ताका करे, वह देखेगी इस बात को कि आप अपने उद्देश्य की ओर किस गति से जा रहे हैं।

जितना ही आप अपनी योग्यता पर अविश्वास करेंगे, जितना ही आप भय और शंका को अपने हृदय में स्थान देंगे, उतना ही आप विजय से, सफलता से दूर रहेंगे। हमारा पथ कितना ही कंटकाकीर्ण और अन्धकारमय क्यों न हो पर

हमें चाहिए कि हम कभी अपने आत्म-विश्वास को, मानसिक धैर्य को न खोयें। हमारी शंका और भय दूसरों के विश्वास को जैसा नष्ट करते हैं वैसा और कोई पदार्थ नहीं। बहुत से मनुष्यों की असफलता का कारण यह है कि वे अपने निराशाजनित भावों को ही प्रोत्साहन देते रहते हैं और अपने पास उठने-बैठने वालों को भी ऐसी ही निराशामय प्रेरणा किया करते हैं।

यदि आप अपने आपको पतित समझेंगे, यदि आप समझेंगे कि हम सामर्थ्य-हीन हैं, हमारा कोई महत्त्व नहीं, तो दुनिया आपको ऐसा ही समझेगी। वह आपका कोई महत्त्व न मानेगी। वह आपकी आवाज़ की कुछ क़ीमत न समझेगी।

मैंने कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जिसने अपने आपको तुच्छ, हीन और बेकार समझते हुए कोई महान् कार्य किया हो। जितनी योग्यता का हम अपने आपको समझेंगे उतना ही महत्त्वपूर्ण काम कर सकेंगे।

यदि आप बड़े-बड़े पदार्थों की आशा करते हैं, उनकी माँग करते हैं और अपने मनोभाव को विशाल बनाए हुए हैं, तो आपको बड़ी ही ऊंचे दर्जे की सफलता प्राप्त होगी।

जैसा आप अपने आपको गिनेंगे, जितना आपको अपनी योग्यता पर विश्वास होगा, जितना आपको अपनी उन्नति का महत्त्व मालूम हो रहा होगा, संसार के लिए अपने आपको आप जैसा उपयोगी और महत्त्व-पूर्ण समझेंगे, वैसा ही भाव आपके चेहरे और आपके आचार-विचार पर दीखने लगेगा।

यदि आप अपने को मामूली आदमी मानेंगे तो आपके चेहरे पर भी ऐसा ही भाव झलकने लगेगा। यदि आप अपने आपका सम्मान करेंगे तो आपका चेहरा इस बात की गवाही दे

देगा। यदि आप अपने आपको ग़रीब और नाचीज़ समझेंगे तो खूब समझ लीजिए आपके चेहरे पर कभी भाग्यवान की प्रभा न चमकेगी, ग़रीबी की ही झलक उसपर झलका करेगी। जो कुछ गुण आप अपने आप में प्रकट करते हों उनका अंश उस प्रभाव में भी रहता है जो दूसरों पर डालते हैं।

जिन गुणों को आप प्राप्त करना चाहते हों उन्हीं गुणों का यदि आप अपने मानस-भवन में सृजन करते रहेंगे तो धीरे-धीरे ये गुण आपके होने लगेंगे और इसका प्रकाश आपके चेहरे पर चमकने लगेगा। यदि आप चाहते हों कि आपके मुख-मण्डल पर दिव्यता की द्युति रहे तो पहले आप अपने हृदय में वैसे भावों को उत्पन्न कीजिए। यदि आप चाहते हों कि आपके चेहरे और आचार-व्यवहार में उच्चता का भाव झलके तो इसके लिए आवश्यक है कि आप अपने विचारों को उच्च बनावें।

हमारे कार्य की नींव हमारे आत्म-विश्वास पर रखी हुई है। "हम कार्य कर सकते हैं", इस विचार में अद्भुत शक्ति भरी हुई है।

जिस मनुष्य में पूरा आत्म-विश्वास है वह इस तरह की उलझन में नहीं पड़ता कि मैं ठीक रास्ते पर हूँ या नहीं, मुझमें कार्य-सम्पादन की योग्यता है या नहीं। उसे अपने भविष्य के विषय में किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती।

जो मनुष्य आत्म-विश्वास से सुरक्षित है वह उन चिंताओं, आशंकाओं से मुक्त रहता है जिनसे दूसरे आदमी दबे हुए रहते हैं। उसके विचार और कार्य उन बलाओं से बचे रहकर स्वाधीनता प्राप्त करते हैं। अथवा दूसरे शब्दों में यों कहिए कि उसे कार्य और विचार की वह स्वाधीनता मिल जाती

है जो उच्च कार्य-सम्पादन की शक्ति प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है।

किसी महान् साहसिक कार्य के लिए स्वाधीनता की बड़ी ही आवश्यकता है। जिस मनुष्य का मन भय, चिन्ता और शङ्का से तलमला रहा हो, वह कभी कोई महान् कार्य नहीं कर सकता। प्रभावशाली मानस-कार्य के लिए पूर्ण स्वाधीनता की बड़ी आवश्यकता है। शङ्का और सन्देह हमारे मन की एकाग्रता में बाधक होते हैं जो हमारी कार्यकारिणी शक्ति का रहस्य है। आत्म-विश्वास, आत्म-श्रद्धा किसी भी कार्य का मूल है। जीवन-व्यवसाय की प्रत्येक शाखा में इससे अद्भुत प्रकाश फैलता है। जिस आत्म-विश्वास, आत्म-श्रद्धा के द्वारा मनुष्य ने बड़े-बड़े साहसिक कार्य किये हैं, बड़ी-बड़ी विघ्न-बाधाओं का सामना कर उनपर विजय प्राप्त की है, जिसके द्वारा मनुष्य ने विपत्तियों के पहाड़ों को तोड़ डाला है, उसमें कैसी अद्भुत शक्ति भरी हुई है, इनका अंदाज़ा कौन लगा सकता है ?

विश्वास ही से हम अपनी शक्ति को दूना कर लेते और अपनी योग्यता को बढ़ा लेते हैं।

एक हट्टे-कट्टे और मजबूत आदमी के मन से जबसे आत्म-विश्वास उठने लगता है तभीसे उसके पैर फिसलने लगते हैं। विश्वास ही हमें हमारे अंदर की दिव्यता के दर्शन कराता है, विश्वास ही वह पदार्थ है जो ईश्वर से हमारा ऐक्य स्थापित करता है, विश्वास ही वह वस्तु है जो हमारे हृदय-कपाटों को खोल देती है, विश्वास ही वह चीज़ है जो अनन्त से हमें मिला देती है, जिससे अनन्त-शक्ति, अनन्त-ज्ञान और अनन्त-दर्शनों का हमें अनुभव होने लगता है। हमारा जीवन महान् है या साधारण, उच्च है या शुद्ध, यह बात हमारी अंतर्दृष्टि और विश्वास की

शक्ति पर ही अवलंबित हैं । बहुत से मनुष्य अपने विश्वास और श्रद्धा पर विश्वास नहीं करते, क्योंकि वे इस बात को नहीं जानते कि वे क्या वस्तु हैं। वे यह नहीं जानते कि विश्वास ही हमारी आत्म-रक्षा की ध्वनि है । विश्वास एक आध्यात्मिक कार्य-शक्ति है। वह एक ज्ञान है जो उतना ही सच्चा है जितना इन्द्रियों द्वारा मिला हुआ ज्ञान । विश्वास और श्रद्धा हमारे मन को ऊंचा उठाने वाले हैं । इन्हींका अद्भुत प्रभाव हमारे आदर्श पर पड़ता है। ये हमें ऊंचा उठाते हैं और दिव्यता-उस सफलता के दर्शन कराते हैं जिनके लिए ये हमारी आत्मा-प्रीति करा रहे थे। ये ही सत्य और बुद्धि के प्रकाश हैं। मेरी समझ में बच्चों को आत्म-विश्वास से हटाना और उनसे यह कहना कि तुम्हारा कोई महत्त्व नहीं, तुम नाचीज़ हो, तुम यह नहीं कर सकते, भारी अपराध है ।

माता-पिता और अध्यापकगण इस बात को बहुत कम जानते हैं कि बच्चों का मन कितना कोमल होता है और उनके सामने इस तरह के दिलतोड़ वचन कहने से उनपर कितना बुरा असर पड़ता है । मैं निश्चयपूर्वक कहता हूं कि संसार में जो दुःख दरिद्रता या असफलता दीख रही है वह अधिकांश में हीन प्रेरणाओं का ही बल है। डाक्टर ल्यूथी जो न्यूयार्क की पाठशालाओं के फ़िज़ि-कल डाइरेक्टर हैं, कहते हैं—"हमारी सार्वजनिक पाठशालाओं के बहुत से विद्यार्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने के सदमे से अकाल में ही काल के ग्रास बन जाते हैं। परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का कारण आंखों की कमज़ोरी, खराब दांत या पौष्टिक भोजन न मिलना बताया जाता है। बच्चे हमारे बताए हुए मार्ग पर नहीं चलते। वे यह नहीं जानते कि हम क्यों इतने अपूर्ण हैं ? वे तो अपनी असफलता से दुखी और उदास हो जाते हैं, उनका साहस टूट

जाता है, उनका मन अव्यवस्थित हो जाता है । हर साल इसी कारण कितने ही विद्यार्थी आत्म-हत्या कर लेते हैं ।" लड़के ही क्यों विश्वास-नाश का बुरा फल जानवरों तक पर होता है । यह घोड़ा जो दौड़ में सबसे आगे निकलने वाला है कभी इनाम न पायगा यदि उसका विश्वास नष्ट कर दिया जाय,शाबाशी के शब्दों से उसे बढ़ावा न दिया जाय। जो लोग घोड़े आदि जानवर पालते हैं सबसे पहले उन्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वे हमेशा उनके विश्वास को बढ़ाते रहें । विश्वास से ही हमारी शक्ति का विकास होता है । विश्वास से ही हमें वह क्षमता प्राप्त होती है जिससे हम अपनी योग्यता को बढ़ा सकें । इसीसे समय पर बड़े-बड़े चमत्कारिक कार्य हुए हैं । जो कोई आपका आत्म-विश्वास बढ़ाता है वह मानो आपकी शक्ति को बढ़ाता है ।

संसार में जो आदमी बड़े-बड़े काम करते हैं उन सबमें ऊंचे दर्जे का आत्म-विश्वास होता है। अपनी शक्ति,अपनी योग्यता, अपने कार्य, अपने बल पर उनका पूरा-पूरा विश्वास होता है ।

हमें चाहिए कि हम निरन्तर अपने आत्म-विश्वास पर जमे रहें, उसे किसी तरह ढीला और कमज़ोर न होने दें । हमें इस बात का पूरा-पूरा विश्वास होना चाहिए कि जो-जो कार्य हमने हाथ में लिये हैं उन्हें हम अवश्य ही पूरा करेंगे, उन्हें अवश्य ही अन्त तक पहुँचायंगे । संसार में जिन लोगों ने अद्भुत कार्य किये हैं वे आत्म-विश्वास ही के तत्त्व को पकड़ कर चलते रहे हैं । यदि आप संसार के उन महान पुरुषों की जीवनियों का अवलोकन करेंगे जिन्होंने संसार की सभ्यता को ऊपर उठाया है तो आपको मालूम होगा कि उन्होंने जिस समय अपने कार्य का आरम्भ किया था उस समय वे बहुत ग़रीब थे और कितने वर्ष उनके

लिए इतने अन्धकारमय गुज़रे जिनमें उन्हें अपनी सफलता का कोई भी चिन्ह न दीख पड़ा। पर वे इस दृढ़ विश्वास के साथ उद्योग करते रहे कि कभी-न-कभी हमें अवश्य सफलता प्राप्त होगी—हमारे मार्ग पर प्रकाश पड़ेगा। इस तरह के आशामय और विश्वासपूर्ण विचार से कैसे-कैसे अद्भुत आविष्कार हुए हैं? क्या आप जानते हैं कि पहले इन आविष्कारों के कर्ताओं को कैसी-कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ा था? क्या आपको यह मालूम है कि अनेक वर्षों तक उन्हें सफलता का कोई चिन्ह न दीख पड़ा, कितने ही वर्ष उनके लिए अन्धकारमय गुज़रे, पर उन्होंने आशा को न छोड़ा, विश्वास को तिलांजली न दी, और अपने उद्देश्य पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे। अन्त में उन्हें प्रकाश मिला। वे कृत-कार्य हुए। वर्षों का परिश्रम सफल हुआ। यदि वे आशा को छोड़ देते तो उन्हें वह प्रकाश कभी न मिलता; कभी वे वैसे अद्भुत आविष्कार कर संसार को अचम्भे में न डाल पाते।

यह उन्हीं महान् आत्माओं का पुण्य प्रताप है कि आज हम तरह-तरह के सुख भोग रहे हैं, बिना तकलीफ के घण्टों में सैंकड़ों मील चले जाते हैं, आकाश की हवा खा लेते हैं, अपने इष्ट-मित्रों के पास मिनटों में सुख-दुःख का सन्देश भेज सकते हैं। इन महान् आत्माओं के पथ में विपत्ति के पहाड़-पर-पहाड़ आए, पर उन्होंने वीरतापूर्वक उन्हें तोड़ डाला। उन्हें निरुत्साह करने में, अपने पथ से च्युत करने में लोगों ने कोई बात न उठा रखी, पर उन्होंने किसी की बात पर कान न दिया। वे अपने रास्ते पर आगे बढ़ते ही गए और बिना किसी की सहायता और सहानुभूति के उन्होंने वह अद्भुत काम किया जिसे देखकर दुनिया दंग रह गई।

हर काम उसी दशा में अच्छा होता है जब विश्वास की प्रब-

लता रहती है। विश्वास ही हमें वह मार्ग बताता है जो हमें अपनी मंजिल पर पहुँचा देता है। विश्वास ही कार्य का बल है। वह हमें बड़े काम उठाने से नहीं रोकता, क्योंकि हममें वह शक्ति का एक ऐसा स्रोत देखता है जिसके द्वारा सब कुछ हो सकता है।

आजतक कोई मनुष्य विश्वास के तत्त्व को ठीक तरह समझ न सका। वह कौनसी वस्तु है जो मनुष्य को अपने कार्य पर दृढ़तापूर्वक जमा देती है? वह कौन-सा पदार्थ है जिससे मनुष्य निराशा के अन्धकार में रहते हुए भी आशा के प्रकाश की झलक देखा करता है? वह क्या चीज़ है जो मनुष्य को विपत्ति सहने में धैर्य देती है? वह क्या चीज़ है जो दुःख में भी मनुष्य को आनन्द के सुख-स्वप्न दिखाती है? वह क्या चीज़ है जो दरिद्रता के पंजे में फँसे हुए मनुष्य को आश्वासन देती रहती है? वह क्या चीज़ है जो मनुष्य के हृदय को उस समय टुकड़े टुकड़े होने से बचाती है जब कि वह कौड़ी-कौड़ी को मुहताज हो जाता है और उसके इष्ट मित्र तक उसकी ओर से मुँह मोड़ लेते हैं? वह कौन-सी वस्तु है जो लाखों विपत्तियों के गिरने पर भी उसे धीरतापूर्वक खड़ा रहने का बल देती है? दुनिया उन वीरों की ओर देखकर दंग रह जाती है जिन्होंने अपना सब कुछ खो दिया पर इस विश्वास को मजबूती से पकड़े हुए हैं कि हम वह कार्य अवश्यमेव सिद्ध करेंगे जिसे करने का हमने संकल्प किया है।

विश्वास ही वह चीज़ है जो हमसे ज़ोर से कहती है कि अपने लक्ष्य की ओर क़दम उठा दो। वही हमारी आत्मा है, वही हमारी आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि है,वही हमारा पथ-प्रदर्शक है, वही हमारी विघ्न-बाधाओं पर जय प्राप्त कर हमारे रास्ते को साफ़

करती है।

दुनिया में जो बड़े-बड़े आविष्कार हुए हैं, जो नई-नई बातें निकली हैं, जो अद्भुत कार्य हो रहे हैं—सब विश्वास ही के फल हैं।

उस नवयुवक के भविष्य की कुछ चिन्ता नहीं जिसके हृदय में विश्वास ने जड़ पकड़ ली है। आत्म-विश्वास में वह ताकत है जो हज़ार विपत्तियों का सामना कर उन पर विजय प्राप्त कर सकती है। यही निर्धन जन का मित्र है और यही उसकी सबसे बड़ी पूंजी है। हमने देखा है कि धनहीन पर आत्म-विश्वासी पुरुषों ने दुनिया में ग़ज़ब के काम किये हैं, जब कि कितने ही धनवान मनुष्य विश्वासहीनता के कारण ही बुरी तरह असफल हुए हैं, वे कोई मार्के का काम नहीं कर सके। यदि हमें विश्वास है कि हम बड़े-बड़े कार्य कर सकेंगे, दुनिया को बदल देंगे, यदि हमें इस बात का विश्वास हो कि हममें एक दैवी तत्त्व मौजूद है, हममें पूर्णता भरी हुई है, तो हमारे हाथ से दुनिया के बड़े-बड़े काम होंगे।

जब मनुष्य राजकुमार है अर्थात् राजेश्वर ईश्वर का पुत्र है, जब दैवी रक्त उसकी नस-नस में बह रहा है, जब वह दैवी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी है, तो क्यों न उसे अपने इस जन्मसिद्ध अधिकार पर दृढ़ता और विश्वासपूर्वक दावा करना चाहिए?

बात यह है कि हम लोग अपने सद्गुणों पर पूरी तरह नज़र नहीं रखते। इसीसे हम उनका ठीक विकास नहीं कर सकते, इसीसे दैवी भाव हमारे चेहरे पर नहीं झलकता।

हम देखते हैं कि बहुत से मनुष्य सदा ही ग़रीब बने रहते हैं, समाज में सम्मान प्राप्त नहीं कर सकते। इसका

कारण यही है कि वे अपने आपको हीन समझते हैं, उन्हें उन सद्गुणों की पहचान नहीं होती जो उनकी आत्मा में निहित हैं। यदि आप भारत की नीची जातियों पर दृष्टि डालेंगे तो आपको मालूम होगा कि शताब्दियों से नीच वातावरण में पलने के कारण वे इस बात को भूल गए हैं कि हम भी मनुष्य हैं, हममें भी वे ही दिव्य गुण मौजूद हैं जो दूसरे आदमियों में हैं, हममें भी वही शक्ति है जो दुनिया के बड़े-बड़े काम कर सकती है, हम भी मनुष्य होने के कारण वे ही अधिकार रखते हैं जो दूसरे लोग भोग रहे हैं, आत्म-गौरव, आत्म-सम्मान के हम भी वैसे ही पात्र हैं जैसे अन्य मनुष्य।

वे समझे हुए हैं कि ईश्वर ने हमें जन्म से ही ऐसा दीन-हीन बनाया है, हमारी योनि नीच रखी है। पर वे इस बात को नहीं जानते कि ईश्वर की नज़र में मनुष्य-मात्र एक-से हैं। मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही वह बन जाता है। हर आदमी को अच्छे कर्म कर ऊंचा उठने का अधिकार है। पर वे बेचारे शताब्दियों से अत्याचार सहते आ रहे हैं, इसलिए वे मनुष्योचित अधिकार को भूल गए हैं। वे ईश्वर ही को दोष देकर रह जाते हैं, ऊंचा उठने का प्रयत्न नहीं करते, इसलिए सदा दीन दशा में ही पड़े रहते हैं। इन पंक्तियों के लेखक ने बड़ोदा में अपनी आंखों देखा है कि बहुत से ढेढ़, चमार, भंगी, जो पशुओं से भी बदतर समझे जाते थे, शिक्षित होकर अपने आत्म-गौरव को समझने लगे हैं। वे अब इस बात को मानने लगे हैं कि हमें भी ऊपर उठने का हर हालत में हक़ है। इसीसे वे बड़े-बड़े ओहदों पर काम कर रहे हैं। उन्होंने अपने आपको नीच समझना छोड़ दिया है। कई लोगों ने अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय देकर डंके की चोट इस बात को

ाद्ध कर दिया है कि बुद्धि और प्रतिभा के ठेकेदार केवल
ाह्मणादि उच्च जाति वाले ही नहीं हैं, दूसरों में वे भी वैसे ही
ाकसित हो सकती हैं जैसे ब्राह्मणादि में। शीघ्र ही वह दिन
ाने वाला है, शीघ्र ही वह प्रभात होने वाला है, जब इन हीन
ाने जाने वाले अत्याचार-पीड़ित मनुष्यों के अलौकिक प्रकाश की
ोर सारा जगत् टकटकी लगाकर देखेगा और अपने किये हुए
त्याचार पर पश्चात्ताप करेगा। देर केवल इस बात की है कि
अपने को मनुष्य मानने लगे।

हम इस बात को मानें या न मानें, पर यह सच है कि हम
अपने आत्म-विश्वास से भिन्न नहीं हो सकते। जैसा हमारा
आत्म-विश्वास है उससे बढ़ कर हम कोई कार्य नहीं कर
सकते।

यदि हम अपने आत्म-विश्वास को दृढ़ करते रहें—इस बात
को मानते रहें कि हममें ऊंची शक्ति और योग्यता मौजूद है,
ो इससे हमारी मानसिक शक्तियों पर बड़ा उत्तम और दिव्य
प्रभाव पड़ेगा।

यदि मनुष्यों में सबसे ज्यादा किसी बात की कमी है तो
वह आत्म-विश्वास की ही है।

बहुत से आदमी ऐसे पाये जाते हैं कि जहां उनमें दूसरी
शक्तियां बहुतायत से मिलती हैं वहां आत्म-विश्वास की उनमें बड़ी
ही कमी रहती है। बहुत से मनुष्य जो असफल होरहे हैं वे फिर
सफलता प्राप्त कर सकते हैं, यदि वे अपनी इस शक्ति को ठीक
तरह से संस्कृत और प्रबल कर लें।

आप किसी डरपोक, शङ्काशील मनुष्य को पास बैठाकर
हमेशा यह पाठ पढ़ाइए कि "तुम अपनी आत्मा में विश्वास करना
सीखो, तुममें वह शक्ति मौजूद है जो दुनिया के बड़े-बड़े काम

कर सकती है, तुममें वह योग्यता मौजूद है जिससे समाज में तुम अपना महत्त्व स्थापित कर सकते हो।" आप उसके आत्म-विश्वास को इस तरह पुष्ट करते रहें, फिर आप देखेंगे कि उसका साहस किस तेजी से बढ़ रहा है, उसकी मानसिक शक्तियों में किस तरह नया जीवन आ रहा है।

जैसा हम अपने आपको मानेंगे वैसा ही आदर्श हमारी आत्मा का बनेगा। हो नहीं सकता कि जैसा हम अपने आपको समझते हैं उससे ज्यादा बड़े आदमी बन जायं। यदि किसी प्रतिभाशाली मनुष्य को भी यह विश्वास करा दिया जाय कि वह क्षुद्र है तो उसकी गति भी नीचता, क्षुद्रता की ओर होने लगेगी। वह तबतक गिरता ही जायगा जबतक कि फिर अपने आपको बलवान न गिनने लगे। मनुष्य की योग्यता चाहे जितनी बढ़ी-चढ़ी क्यों न हो, फल तो उसे उतना ही मिलेगा जितनी योग्यता का वह अपने आपको समझता होगा। अल्प बुद्धिवाला आत्म-विश्वासी उस बल-बुद्धि सम्पन्न व्यक्ति से कहीं अधिक कार्य कर सकता है जिसे अपनी आत्मा में विश्वास नहीं है।

मेरी समझ में हीन और क्षुद्र प्रकृति से रक्षा पाने का इससे अच्छा और कोई उपाय नहीं कि हम अपने आत्म-गौरव को बढ़ाते रहें, यह मानते रहें कि संसार में हमारा भी कुछ महत्त्व है। इससे हमारी आत्मा की सब शक्तियां एकत्र होकर हमारे आदर्श को पूरा करने में लग जायंगी, क्योंकि हमारे जीवन का यह एक नियम है कि वह हमारे उद्देश्य का अनुसरण करता है।

आप अपना और दैवी सम्भावनाओं का उन्नतिशील और अत्युच्च आदर्श अपने सामने रखिये और इस आदर्श को सिद्ध करने के लिए जी-जान से लग जाइए, अवश्य आपको सफलता मिलेगी।

हमारी मानसिक शक्तियां चाहे जितनी प्रबल क्यों न हों, पर उनका संचालन अविचल आत्म-विश्वास द्वारा न किया जायगा तो उनका विशेष उपयोग न होगा। मानसिक शक्तियों पर आत्म-विश्वास का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो मनुष्य को इतना ऊंचा उठा सके, जो हीन-प्रकृति से उसकी इतना रक्षा कर सके, जितना कि दृढ़ आत्म-विश्वास। मानव सभ्यता में आत्म-विश्वास बहुत ही ऊंची शक्ति माना गया है। मानवीय कार्यों में इस शक्ति की गणना सबसे पहले की गई है। अधिक क्या कहें, इसी दिव्य शक्ति द्वारा मनुष्य जगदात्मा से ऐक्य का दिव्यानुभव तक करने लगता है। आत्म-विश्वास हमारी दूसरी शक्तियों को भी बड़ा प्रोत्साहन देता रहता है। आत्म-विश्वास की मात्रा हममें जितनी अधिक होगी उतना ही हमारा सम्बन्ध अनन्त-जीवन और अनन्त शक्ति से गहरा होता जायगा।

संशय ही हमारी कार्य-सम्पादन शक्ति को पंगु करने वाला है। कार्य करने के पहले मनुष्य का यह विश्वास होना ही चाहिए कि मैं उस कार्य को अवश्य कर सकूंगा। जबतक संशय का लेश भी उसमें बना रहेगा तबतक वह अपने कार्य में पूरी सफलता न पा सकेगा। वह मनुष्य जिसका उद्देश्य आत्म-विश्वास और अभिलाषा से भरा हुआ है, तबतक चैन नहीं पा सकता, संतोष प्राप्त नहीं कर सकता जबतक कि वह उसे पूरा न कर ले। अवश्य ही ऐसा मनुष्य अद्भुत सफलता प्राप्त करेगा, चाहे कितनी ही कठिनाइयां उसके मार्ग में बाधा क्यों न डालती रहें।

मैं जानता हूं कि जिन लोगों ने संसार में अद्भुत सफलता प्राप्त की है वे सदा इसी बात को मानते रहे हैं कि हमारा पासा हमेशा सीधा पड़ेगा कभी उलटा न पड़ेगा। अपने लक्ष्य का

मार्ग उन्हें चाहे जितना कंटकाकीर्ण और अन्धकारमय दिखाई देता हो, पर वे इस बात की दृढ़ आशा और विश्वास रखते हैं कि हमें अपने लक्ष्य पर पहुंचने में अवश्य सफलता होगी। इसी तरह के आशामय मनोभाव रखने से वे सफलता के तत्त्वों को अपनी ओर खींचते रहते हैं।

हमारी शक्तियां वैसा ही काम करेंगी जैसा कि हम हुक्म देंगे। वे स्वभावतया उन्हीं वस्तुओं को उत्पन्न करेंगी जिनकी चाह हम उनसे करेंगे। यदि हम उनसे बहुत कुछ मांगा करें और यह आशा रक्खें कि वे हमें अवश्य सहायता देंगी तो वे जरूर हमारे मनोरथों के सफल होने में सहायक होंगी।

हमारी मानसिक शक्तियां हमारे आत्म-विश्वास और धैर्य पर अवलंबित रहती हैं। वे हमारी कार्यकरी इच्छा-शक्ति के पूर्णतया अधीन होती हैं। अतः यदि हमारी इच्छा-शक्ति क्षुद्र और कमज़ोर होगी तो हमारी मानसिक शक्तियों का कार्य भी वैसा ही होगा। जहां हमारे आत्म-विश्वास और धैर्य में कमज़ोरी आई कि हमारी कार्य-सम्पादन शक्ति में भी कमज़ोरी आ जायगी।

मेरा विश्वास है कि मनुष्य के जीवन के लिए इससे अच्छी और कोई बात नहीं है कि वह सदा यह मानता रहे कि मेरे लिए सब कुछ अच्छा ही होगा। जो कोई कार्य मैं हाथ में लूंगा उसमें मुझे अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

बहुत से मनुष्य शंका कर कि हमें कभी सफलता प्राप्त न होगी, दैव हमारे विपरीत है, अपने आप सफलता को जवाब दे देते हैं। उनका मानसिक भाव सफलता और विजय के अनुकूल नहीं होता। वे असफलता के परमाणुओं को अपनी ओर खींचा करते हैं। सफलता और विजय के

भाव पहले मन में ही उत्पन्न होते हैं। यदि हमारा मन शंकाओं से भरा हुआ होगा तो इसका परिणाम वैसा ही निराशाजनक निकलेगा। विजय प्राप्त करने के लिए अविचल श्रद्धा की अत्यन्त आवश्यकता है।

बहुत से आदमियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति ही विजय की ओर होती है, वे विजय ही विजय के स्वप्न देखा करते हैं। उनकी दृष्टि में सफलता ही की झलक पड़ा करती है। उनकी आदत होती है कि वे विजय के विश्वास ही से किसी काम को शुरू करते हैं और वे उसमें अद्‌भुत सफलता पा जाते हैं।

बहुत से आदमियों के नाकामयाब होने तथा अच्छे अवसरों के रहते भी मध्यम स्थिति में पड़े रहने का कारण यही है कि वे अपने मार्ग की विघ्न-बाधाओं का ही ख़याल किया करते हैं। इससे उनका दिल टूट जाता है। साहस के कार्य करने के योग्य वे नहीं रहते। उनकी उत्पादन-शक्ति नष्ट हो जाती है। उनका मन निषेधात्मक हो जाता है। आशा और आत्म-विश्वास ही वे वस्तुएँ हैं जो हमारी शक्तियों को जाग्रत करती हैं और हमारी उत्पादन-शक्ति को दुगुना-तिगुना बढ़ा देती हैं।

जिस आदमी को चारों ओर विघ्न-बाधाएँ ही दीख पड़ती हैं उसका आत्म-बल क्षीण हो जाता है। वह कोई महान् कार्य नहीं कर सकता। उसके मस्तिष्क से किसी नए आविष्कार की उत्पत्ति नहीं हो सकती, क्योंकि उसकी उत्पादन-शक्ति पर निराशा का काला परदा पड़ा रहता है। उसकी संकीर्ण दृष्टि के कारण वह उससे अलग नहीं हो सकता। यदि हम किसी ऐसे मनुष्य को देखें जो महान् कार्य कर रहा हो तो हमें समझ लेना चाहिए कि वह अपने मार्ग पर आनेवाली विघ्न-बाधाओं का बड़ी वीरता के साथ सामना कर रहा है।

नेपोलियन की जीवनी से आपको मालूम होगा कि जब इस महावीर के मार्ग में आल्प्स का पर्वत पड़ा तब उसके साथियों ने कहा हमारी सेना इस दुर्भेद्य पर्वत को कैसे लाँघ सकेगी ? इस पर नेपोलियन ने हँस कर कहा कि इसमें रास्ता बना दिया जायगा। बस फिर क्या देर थी ? काम शुरु कर दिया गया। आल्प्स में मार्ग बना दिया गया। फौज के जाने का रास्ता खुल गया। क्या किसी को यह कहने में संकोच हो सकता है कि यह सब उस वीर के साहस और आत्म-विश्वास का ही परिणाम था ?

हमारी समझ में मनुष्य कहलाने का अधिकारी वही है जो अपने आदर्श को पूरा करने के लिए तन-मन-धन से लग जाता है—मन, वचन और काया को एक कर डालता है, जो दावे के साथ कह सकता है कि असफलता, पराजय कोई चीज़ ही नहीं, जिसे विजय और सफलता पर पूरा विश्वास होता है।

यदि हमें यह विश्वास है कि हम बड़े-बड़े कार्य कर सकेंगे क्योंकि हममें वह योग्यता है जिससे महान् कार्य सम्पादन किये जा सकते हैं, तो हमें अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

परमपिता परमात्मा ने श्रद्धा और विश्वास को इसीलिए उत्पन्न किया है कि वे हमें गिरने से बचाने के लिए हमारी बाँह पकड़ें, हमें मुसीबत के समय धैर्य और आश्वासन देते रहें। मनुष्य के लिए ये उतने ही काम के हैं जितना तूफ़ान के वक्त नाविक के लिए दिग्दर्शन यन्त्र। जिस तरह भयानक तूफ़ान के समय भी नाविक को इस यन्त्र के कारण इस बात का भरोसा रहता है कि चाहे जैसा तूफ़ान क्यों न आए, समुद्र में चाहे जितना अन्धकार क्यों न छा जाय मैं इस यन्त्र के द्वारा दिशा का पता लगाकर अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच सकता हूँ। उसी तरह जब मनुष्य को पूरा आत्म-विश्वास है उसे इस बात का भरोसा

रहता है कि मुसीबतों के चाहे जितने पहाड़ मेरे रास्ते में क्यों न आयं, मुझमें वह शक्ति है कि मैं उसमें अपना रास्ता बना लूँगा।

दुनिया उस मनुष्य के लिए खुद रास्ता कर देती है जो शक्तिशाली, आत्म-विश्वासी और दृढ़ाग्रही है; जो इस बात को जानता है कि संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं, ऐसी कोई विपत्ति नहीं जो मेरी शक्ति का रास्ता रोक सके। कायर मनुष्य ही इनसे डर सकता है, रास्ते में इन्हें पाकर पथ-भ्रष्ट हो सकता है; पर मैं तो इनपर पूरी-पूरी विजय पा सकता हूं।

उत्तरदायित्व,जिम्मेदारी अपने सिर लेने से न घबराइए। इस बात का पक्का इरादा कर लीजिए कि जो उत्तरदायित्व मेरे सिर पड़ेगा उसे मैं दूसरों से कहीं अच्छा निभाऊंगा। मेरी राय में यह एक बड़ी भूल है कि हम अपने वर्त्तमान उत्तरदायित्व से यह सोचकर भागने की कोशिश करते हैं कि आगे हम अधिक योग्य बनकर ऐसे उत्तरदायित्व को अपने ऊपर ले लेंगे। मान लीजिए आपको कोई पद मिलता है जो जिम्मेदारी का है। आप उसे लेने से घबराते हैं, सोचते हैं कि इसे फिर ले लेंगे, अभी नहीं। तो कहिये इसमें आपको क्या लाभ होगा? यदि आप उसे ग्रहण कर लेंगे और ठीक तरह से चलाते रहेंगे तो धीरे-धीरे यह बात आपकी आदत में बदल जायगी और आपको उसकी तनिक भी झुंझलाहट न मालूम होगी, तनिक भी बोझ मालूम न पड़ेगा। और इससे आपकी ऊंचे पद ग्रहण करने की योग्यता बढ़ जायगी, सहज स्वभाव से आप भारी जिम्मेदारी के काम कर सकेंगे।

जो वस्तु आपके लिए परम हितकर है, चाहे वह कितनी ही कठिन एवं अप्राप्य क्यों न मालूम होती हो, आप उसे प्राप्त करने के लिए निश्चय कर लीजिए। अवश्य वह आपको मिलेगी। इस तरह के निश्चय से आपका मनुष्यत्व बढ़ेगा।

महानता की आकांक्षा करने से मत डरिए। खुले दिल से इस तरह की आकांक्षाएँ करते जाइए। आपमें वे शक्तियाँ विकसित होकर आपकी सहायता करेंगी जिनकी आपको स्वप्न में भी कल्पना न थी।

महानता की आकांक्षा करने से हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है, वे जाग्रत हो जाती हैं।

आप अपने आपको सदा सौभाग्यशाली समझिये, ऐसा मानने की आदत डाल लीजिए। फिर देखिए कि इसका कैसा प्रभावकारी फल निकलता है। आप इस बात की आदत डाल लीजिए कि आप जीवन के प्रत्येक अनुभव से श्रेय की ही आशा रख सकें। लोगों को आप इस बात का विश्वास करा दीजिए कि आप सौभाग्यशाली हैं, उनका ख़याल हो जाय कि हर कार्य में आपको यश मिलेगा।

अमेरिका के स्वर्गीय राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट की लोगों में यह ख्याति हो चुकी थी कि जिस काम को वे हाथ में लेते हैं उसीमें यश पाते हैं। इस तरह की ख्याति से इन महानुभाव को बड़ा लाभ हुआ। महाशय रूज़वेल्ट की यह ख्याति थी कि वे राज्य के मामलों में बड़े ही कुशल हैं, बे-जोड़ हैं। उनसे बड़ी बड़ी आशाएँ की जा सकती हैं। वे चाहे जो काम करते हों, चाहे जिस मार्ग पर जा रहे हों, पर लोगों का विश्वास रहता था कि वे अवश्य विजयी होंगे। इस तरह के आशामय विचारों के प्रभाव से रूज़वेल्ट की कार्य-सम्पादन-शक्ति को बड़ी सहायता मिलती थी। उनकी इच्छा-शक्ति इस तरह दिव्य सहायता पाने से खिल उठती थी, उन्हें विश्वास होजाता था कि परमपिता जगदीश्वर ने महान् कार्य करने ही के लिए मुझे उत्पन्न किया है। सृष्टिकर्त्ता का उद्देश्य यह है कि मैं महान कार्य करूं, देश की सुख, समृद्धि

और सभ्यता के बढ़ाने में लग जाऊं। मेरे ही हाथों यह कार्य होना है।

कहना न होगा कि उनकी आत्म-श्रद्धा ने देश के विश्वास को अपनी ओर खींच लिया। उनकी सुकीर्ति की मनोहर सुगंध आज अमेरिका राष्ट्र के हृदय को आनन्द के हिलोरे खिला रही है। जितना आप अपने इस आत्म-विश्वास को बढ़ा लेंगे कि जो कुछ हम चाहते हैं वह हम कर सकेंगे उतनी ही आपकी कार्यकरी योग्यता बढ़ती जायगी। आप बड़प्पन का ख़याल कीजिए, आप ज़रूर बड़े होंगे।

: ५ :

आत्म-प्रेरणाओं का प्रभाव

देखा जाता है कि बहुत से आदमी योग्यता रहते हुए भी अपने सारे जीवन में बहुत ही कम काम कर पाते हैं, क्योंकि वे निराशाजनक प्रेरणाओं के बुरी तरह शिकार बन जाते हैं। जब वे किसी काम में हाथ डालते हैं तभी से असफलता के चिह्न दीखने लग जाते हैं। लाचारी के ही विचार उनके मन में ज्यादातर आने लगते हैं, इसीसे उनकी कार्यकरी शक्ति मारी जाती है।

मैं अभागा हूँ, परमात्मा ने मुझे भाग्य-हीन ही पैदा किया है, दैव मेरे विपरीत है, इस तरह की प्रेरणाओं का हमारे मन पर जैसा भयङ्कर परिणाम होता है वैसा और किसी बात का नहीं। हमें जानना चाहिए कि भाग्य हमारे मानस-क्षेत्र में ही छिपा है, वह किसी तरह उसके बाहर नहीं रह सकता। हमीं अपने भाग्य के कर्त्ता-विधाता हैं। हममें वह शक्ति है कि हम अपने भाग्य पर पूरी तरह शासन कर सकते हैं।

हम देखते हैं कि हमारी परिस्थिति अनुकूल नहीं है, हमें किसी प्रकार की सुविधाएं नहीं हैं, वहाँ वैसी ही अवस्थाओं के दूसरे लोग उन्नति करते और दुनिया में अपना वज़न बढ़ाते जाते हैं।

उस मनुष्य के लिए क्या किया जाय जिसका ख़याल ही ऐसा है कि मैं अभागा ही जन्मा हूं, मुझे सफलता, विजय प्राप्त नहीं हो सकती।

असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है जितना बबूल के पेड़ से गुलाब के फूल का निकलना।

जब मनुष्य ग़रीबी के, असफलता के विचारों से बहुत हैरान हो जाता है, जब केवल यह ही विचार उसके दिमाग़ में घूमा करते हैं, तो उसके मन पर इन्हीं विचारों का सिक्का जम जाता है जिसका परिणाम उसके लिए बुरा होता है। ये विचार उसके मनोरथों को सिद्ध नहीं होने देते।

हम अपने भाग्य को बहुत दोष दिया करते हैं जो वास्तव में हमारे ही विचारों का फल है। हम देखते हैं कि बहुत से लोग बड़ी योग्यता के न होने पर भी उन्नति करते दिखाई देते हैं, जबकि हम योग्यता के होते हुए भी असफलता के बड़ी बुरी तरह शिकार बन जाते हैं। हम केवल यह सोचकर बैठ जाते हैं कि दैव उनकी मदद कर रहा है, विधाता ने उनके भाग्य में वैभवशाली होना लिख दिया है, हमारा भाग्य वैसा अच्छा नहीं, दैव हमारे विपरीत है, हम क्या करें! हम इस बात को नहीं सोचते कि उनका भाग्यशाली और हमारा अभागा होना, यह अपने-अपने विचारों का ही फल है।

हम यह नहीं जानते कि हम अपने विचारों का किस तरह संचालन करें। हम अपने विचारों पर बराबर अधिकार नहीं रखते। हम अपनी आत्मा पर अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ पूरी कराने के लिए ज़ोर नहीं डालते। हमें चाहिए कि हम अपने आपको दिव्य और अलौकिक प्रकाश में देखें। हमें चाहिए कि हम अपने आपको सर्वोत्कृष्ट प्राणी मानें और यह दावा करते रहें कि अनन्त-शक्ति, अनन्त-वीर्य हमारी आत्मा में मौजूद है। अपने आपको दिव्य मानने से आप मत डरिए, क्योंकि यदि जगत-कर्त्ता

परमात्मा ने आपको बनाया है तो अवश्य आपमें उसकी दिव्य शक्ति मौजूद है, अवश्य आपको ईश्वरीय शक्ति पर अधिकार है।

आकांक्षाओं के अनुकूल प्रयत्न और आचरण करते रहना, इस बात में सचमुच एक अजीब प्रकार की सृजन-शक्ति भरी हुई है।

यदि आप तन्दुरुस्त रहना चाहते हैं तो तन्दुरुस्ती के विचारों को प्रचुरता से अपने मन में आने दीजिए। उनके मार्ग में किसी तरह की रोक मत लगाइये। आप तन्दुरुस्ती का भाव रखिए, तन्दुरुस्ती की बातें कीजिए। दावा कीजिए इस बात का कि उस पर आपका स्वाभाविक अधिकार है।

यदि आप समृद्धिशाली होना चाहते हैं तो समृद्धि के विचारों को बहुतायत से अपने मनोमन्दिर में प्रवेश करने दीजिए। कभी इस बात को मत सोचिए कि समृद्धि के विपरीत गुण रखनेवाली कोई वस्तु हमारे मन में प्रवेश कर जायगी। अपने मानसिक भाव, अपने आचरण को समृद्धि के अनुकूल बना लीजिए; आप समृद्धिशाली, उन्नतिशील मनुष्य का सा बर्ताव कीजिए, उसके जैसे कपड़े पहनिए, उसके सदृश अपने विचारों को बना लीजिए। ज़रूर आपको सफलता प्राप्त होगी। समृद्धि के तत्त्व आपकी ओर खिंच आयंगे।

आप जैसा बनना चाहते हों वैसे ही विचारों से हृदय को भर दीजिए।

यदि आप शूरवीर और बहादुर बनना चाहते हैं तो निर्भयता के, बहादुरी के विचारों को ही अपने मन में आने दीजिए। निश्चय कर लीजिए कि हम किसी बात से न डरेंगे, कोई हमें डरपोक नहीं बना सकता। यदि आप डरपोक हैं, बात-बात में आपको शङ्का होती है और आप इस तरह की कायरता को छोड़ना

चाहते हैं, तो अबसे इस बात का ख़याल कर लीजिए कि हम मनुष्य हैं, कायर जन्तु नहीं, हमें डर किस बात का। डर हमारे सामने नहीं आ सकता। हमारी रचना ही परमात्मा ने ऐसी की है कि उसमें भय के तत्त्व रखे ही नहीं। हम दुनिया में महान् काम करने के लिए बनाए गए हैं। इस तरह के विचारों को रोज़ दुहराइए और फिर देखिए कि वीरता के कैसे क़ीमती जौहर आपकी आत्मा में पैदा होते हैं।

यदि आपके माता-पिता यह कहें कि तुम मन्द-बुद्धि हो, डरपोक हो तो इस बात को मानने से साफ इनकार कर दीजिए। कभी ऐसी बातों का असर अपने मन पर मत होने दीजिए। हृदय से इस बात का विश्वास करते रहिए कि हम मन्द-बुद्धि नहीं, हम कायर नहीं। हमारे अन्दर वह योग्यता है, वह साहस है जिससे हम बड़े-बड़े कार्य कर सकते हैं; दुनिया हमारे कामों को देखकर दंग रह जायगी।

इस निश्चय से कि हम जो चाहते हैं वह कर सकेंगे जितना आप अपने आत्म-विश्वास को बढ़ायंगे उतनी ही आपकी योग्यता बढ़ेगी।

लोग आपकी बाबत चाहे जो ख़याल करें पर आप इस विचार पर जमे रहिए कि जो कुछ मैं करना चाहता हूँ कर सकूंगा, जो मैं होना चाहता हूँ हो सकूंगा।

आपको यह बात न भूलनी चाहिए कि आत्म-प्रेरणा (Self-Suggestion) में बड़ी शक्ति भरी हुई है। आप हमेशा इस तरह से बर्तिए जिससे आपकी मानसिक प्रेरणा अपने आप विजय, वृद्धि, उन्नति और उच्चता के लिए स्फुरित हुआ करे। लोगों में आपकी यह प्रसिद्धि हो जाना कि आप उन्नति के मार्ग पर बड़ी तेज़ी से अग्रसर हो रहे हैं, आप महापुरुष होते जा रहे

हैं, समाज में महत्त्व प्राप्त कर रहे हैं, क्या कुछ कम बात है।

जब आप किसी आदमी से मिलते हैं तो तत्काल आपके मानसिक भावों का प्रभाव उसपर पड़ने लगता है। यदि आप में कुछ प्रभाव भरा हुआ होगा तो वह उसपर पड़े बिना न रहेगा। यदि वह आपमें यह बात देखेगा कि आपकी वृत्ति उच्चता की ओर है दिन-दिन आप उन्नति कर रहे हैं, तो उसका यह ख़याल ज़रूर हो जायगा कि आप होनहार हैं।

आप कभी अपने आपको नीच, दीन, दुखी, दरिद्र मत ख़याल कीजिए। कभी यह बात मत मानिए कि हम निर्बल, अकर्मण्य और रोगग्रस्त हैं। आप अपने को सदा पूर्ण और सर्वांगयुक्त ख़याल कीजिए। कभी इस विचार को पास मत फटकने दीजिए कि हमें असफलता का सामना करना पड़ेगा।

दुःख दरिद्रता और असफलता उस मनुष्य के पास कभी फटक नहीं सकती जिसने अपने प्रकाशमय पहलू को देख लिया है, जो दैवी तत्त्वों में तन्मय रहता है। ये तो उन्हीं के बांटे पड़ती हैं जिन्होंने अपने दैवी तत्त्वों में तन्मयता नहीं प्राप्त की है जिन्होंने अपनी शक्तियों का विकास नहीं किया है।

इस बात को आग्रह के साथ मानते रहिए कि संसार में हमारे लिए जगह है और हम उसपर अधिकार करेंगे। अपनी आत्मा को ऐसी शिक्षा दीजिए जिससे वह ऊंची आशा रखना सीखे। अपनें आचार-विचार, तौर-तरीके से कभी इस बात को मत प्रकट कीजिए कि दुनिया में आप क्षुद्र कामों ही के लिए बनाए गये हैं। आप अपनी प्रकृति को निश्चयात्मक रखने की आदत डालिए, सदा सुख-समृद्धि के विचारों का प्रवाह अपने मन में बहाइए; ये गुण आपको अवश्य संसार में उचित स्थान दिलायंगे।

विचार ही शक्ति है। हम और हमारी अवस्थाएँ विचारों

के फल हैं। हम अपने विचारों के बाहर नहीं जा सकते।

किसी महापुरुष ने कहा है—"मानवी कर्त्तव्य बस इस बात में समा गया है कि पहले यह जान लेना कि हम क्या होना चाहते हैं और फिर निरन्तर उसीका विचार करते रहना।" सेण्ट पाल नामक सुप्रसिद्ध ईसाई साधु ने शुद्ध विचार के तत्त्व को अच्छी तरह समझ लिया था। वह इस बात को जान गया था कि जो आदर्श निरन्तर हमारे मन में रहते हैं वे ही हमारे चरित्र को संगठित करते हैं, वे ही हमारी आत्मा को सुश्रृङ्खलित करते हैं। इसीसे उनका उपदेश बड़े सुन्दर विचारों से भरा हुआ है। वह यह है—"जो कुछ सत्य है, जो कुछ प्रामाणिक है, जो कुछ न्याय-पूर्ण है, जो कुछ प्रेममय है, अर्थात् जिसमें श्रेष्ठता और उच्चता विद्यमान है, उसीका विचार करो।"

"उसीका विचार करो" यह कहने से साधु पाल का यह आशय नहीं कि आप उन बातों को मन में केवल इधर-उधर घुमाया करें, बल्कि यह है कि उनपर अपने आप को स्थित कर लें, मन-मन्दिर में उनकी नींव जमा दें। तबतक उनका पीछा मत छोड़िए जबतक कि वे आप की आत्मा का एक विशेष अङ्ग न बन जायं। यदि हम बुरे विचार पर स्थित रहेंगे तो हममें बुराई ही पैदा होगी। यदि हमारी आत्म-प्रेरणाएँ हीन और अशुद्ध होंगी तो हम भी हीन बन जायंगे। साधु पाल ने इस बात को अच्छी तरह जान लिया था कि जिन पदार्थों पर हम अपनी स्थिति क़ायम करते हैं, जिनका हम मनन करते हैं, वे ही हमारी मानसिक माला में गुँथ जाते हैं।

हम चाहे जो करें, पर हम अपने विचारों के बाहर नहीं जा सकते। हम अपने विचारों के ही वायुमण्डल में रहते हैं। हमारे आदर्श हमारे सिर के आसपास हमेशा चक्कर लगाया

करते हैं,आत्म-प्रेरणाओं का हमपर हमेशा असर हुआ करता है।

यदि हमारे विचार संकीर्ण हैं तो हम संकीर्ण-संसार की परिधि से बाहर नहीं जा सकते। यदि हमारे विचार दुष्ट, उदासीन और असहिष्णु हैं तो हम कभी उदार और श्रेष्ठ संसार में नहीं रह सकते, उसके सच्चे आनन्द को नहीं लूट सकते। और हमें यह अधिकार भी नहीं है कि संकीर्ण विचार रखते हुए यह दावा करें कि हमें श्रेष्ठ संसार में स्थान मिले। यह दावा करना ठीक वैसा ही है जैसा बबूल का पेड़ रोपकर आम के मीठे फलों की आशा करना।

यह बात सच है कि हम अपने ही बनाए हुए वायुमण्डल में रहते हैं, पर इसके साथ-साथ यह बात भी सत्य है कि हम विचार-परिवर्तन द्वारा उसे बदल सकते हैं। जिस तरह के हमारे विचार होंगे जैसा हमारे विचारों का गुण होगा, वैसा ही और उसी गुणवाला वायुमण्डल हमारे आस-पास बना रहेगा।

अब यह बात भली भाँति सिद्ध हो चुकी है कि जो आदमी बुरी आदतों के पंजे में फँस चुके हैं वे अपने आपको पूरी तरह सुधार सकते हैं, यदि वे सुधारने का निश्चय करके अपने विचारों में परिवर्तन करना आरम्भ कर दें, यदि वे मन, वचन और काया से इस बात को मान लें कि अब हम बुरी और हीन आदतों से कोई वास्ता न रखेंगे, शराबखोरी आदि सब व्यसनों से हम सदा के लिए अपना सम्बन्ध तोड़ लेंगे।

मैं नहीं समझता कि आप अच्छी तरह से कार्य करने की शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं जबकि क्लेश, भय, चिन्ता, अनुत्साह आपकी आन्तरिक शक्ति को नोच-नोच कर चबा रहे हों। आप इन शत्रुओं से अपने मन को मुक्त कीजिए। अन्यथा आपमें ये कुछ भी बाकी न छोड़ेंगे, सब खा जायंगे।

द्वेष ने हज़ारों जीवों का नाश कर दिया। मानव-मन में द्वेष जैसी भयंकरता उत्पन्न करता है वैसी दूसरी कोई वस्तु नहीं करता। इस भयंकर राक्षस ने संसार का कितना संहार किया है! इसीके प्रभाव से बड़े-बड़े बुद्धिमान एवं प्रतिभा-सम्पन्न मनुष्यों का जीवन मिट्टी में मिल गया। इसीने संसार में रक्त की नदियां बहवायीं, भाई-भाई में तलवारें खिंचवाईं, राष्ट्र के राष्ट्र ग़ारद करा दिये। उन लोगों के हाथ से भी इस दुष्ट ने कैसे-कैसे अत्याचार करवाये जिनका मन इसके आक्रमण के पहले बड़ा ही शुद्ध और निर्मल था।

आप उन विचारों को अपने मन के बाहर निकाल दें जो आपके मन को बुरे मालूम होते हों। क्या चिन्तापूर्ण विचार, क्या दुष्ट विचार, क्या भययुक्त विचार—सभी आपकी उत्पादन-शक्ति को पंगु बनानेवाले हैं।

छाती पर हाथ रख कर इस बात को कहिए कि हममें योग्यता, बल और कार्य-सम्पादन की शक्ति भरी हुई है। ये शक्तियां हमारी मानसिक शक्ति को अपूर्व लाभ पहुंचानेवाली हैं। इसी तरह के विचार से, इसी तरह के आदर्श से मनुष्य बलवान बनता है।

अपने जीवन के दुःखमय अनुभवों को भूल जाइए, कभी उन्हें याद मत कीजिए, क्योंकि इससे आपकी उत्पादन-शक्ति मारी जाती है, आपकी प्रतिभा का विनाश होता है। आप अपने जीवन के सुखमय अनुभवों को याद करें, इससे आपकी मस्तिष्क की शक्ति खिल उठेगी, आपकी प्रतिभा को अधिक प्रोत्साहन मिलेगा। परवाह मत कीजिए इस बात की कि लोग आपके विषय में क्या ख़याल रखते हैं। आप अपने मन में यह बात कहते रहें—"मुझ में वह शक्ति है, वह योग्यता है, कार्य-सम्पादन का वह बल है कि

दुनिया में मैं अपनी अपूर्वता प्रकट कर सकता हूँ। दूसरे बड़े लोगों के समान मैं भी हो सकता हूँ। संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो मेरी मानसिक शक्ति को भंग कर सके, जो मेरी कार्य सम्पादन-शक्ति का नाश कर सके। मैं दुनिया में अपनी अपूर्वता का सन्देश फैलाऊंगा। दुनिया में मैं उस अलोक का उजाला करूंगा जिससे वह अन्धकार में से निकल जाय और उसकी गति प्रकाश की ओर हो जाय। ईश्वर ने मेरी रचना में ही वह तत्त्व रखा है जिससे मैं ये महान् कार्य कर सकूंगा। दूसरे मनुष्य जो अपने आन्तरिक प्रकाश को प्रकट करने में हिचकते हैं, उसका कारण यह है कि उन्हें इस बात का विश्वास नहीं रहता कि अनन्त शक्ति—परमात्मा के हम अंश हैं, हममें अपूर्व योग्यता भरी हुई है, हमारी कार्य-सम्पादन-शक्ति अद्भुत है। पर मुझे तो इस बात का कोई कारण ही दिखाई नहीं दिया कि मैं दुनिया में अपना सन्देश सुनाने के योग्य क्यों नहीं हूँ?"

जब आपको मालूम हो कि उदासी का परदा हम पर पड़ा चाहता है, जब आपको मालूम हो कि हीन विचार हमारे पास आना चाहते हैं, जब आपको मालूम हो कि हमारा मन बेक़ाबू हो रहा है, तब आप नीचे लिखा उपाय किया कीजिए।

आप तुरत काम बन्द कर दीजिए और घर से बाहर निकल कर किसी शान्त जगह में चले जाइए। हो सके तो किसी ऐसी जगह में चले जाइए जो शान्त और प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त हो। वहां एकचित्त होकर इस बात का विचार कीजिए कि अब मैं अपने मन से उन कुविचारों को देश-निकाला दे रहा हूँ जो मेरी मानसिक एकाग्रता में विघ्न डालते हैं और मन को ठिकाने नहीं रहने देते। उस समय आप केवल उन पदार्थों का जो सुन्दर, आनन्दमय और एकाग्रता के सूचक हों, ध्यान कीजिए ऐसी ही

वस्तुओं का वहां मनन कीजिए। वहां आप यह निश्चय कर लीजिए कि अब मेरे मन में आनन्द से परिपूर्ण विचारों का ही प्रवाह बहेगा। उदासीनता के विचार मेरे पास फटकने तक न पायंगे।

दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि आप प्रशान्त स्थान में जाकर निश्चय कर लीजिए कि अब मैं उन गुणों का विकास करूंगा जो सच्चे मनुष्यत्व के द्योतक हैं। इस बात का विश्वास पूर्वक मनन करते रहिए कि संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो उस महापुरुष को प्राप्त न हो जिसने अपनी शक्तियों का पूर्ण रूप से विकास कर लिया है। परमात्मा ने हमें इसलिए बनाया है कि हममें दिव्य शक्तियों का विकास हो, किसी तरह की कमी और अपूर्णता न रहे। इस तरह के दिव्य विचारों के समुद्र में अपने मन को हिलोरें देते हुए आप अपने मकान पर जाइए। खुली हवा में सानन्द विजय की सफलता के श्वासोच्छ्वास लीजिए और फिर अपने काम पर लौटिए तथा उस सफलता का मजा चखिए जो ऐसा करने से आपको प्राप्त होगी। मैं निश्चय-पूर्वक कहता हूँ कि आप अपने में दिव्य शक्ति और नव-जीवन का संचार होता हुआ देखकर आश्चर्य-चकित हो जायंगे।

मेरे एक मित्र हैं जिन्हें उपर्युक्त क्रिया से बहुत लाभ पहुँचा है। जब कभी उन्हें मालूम होता था कि उनके हाथों से इच्छानुसार काम नहीं हो रहा है, बुद्धि भ्रमित होती जा रही है, निर्णय-शक्ति का ह्रास हो रहा है, तब वे अकेले किसी निर्जन शान्त और सुन्दर बन में चले जाया करते थे और हृदयपूर्वक ये उद्गार निकालते थे —

"हे नवयुवक! अब तुम्हें उस मार्ग पर जाने की आवश्यकता है जो उन्नति के द्वार तक पहुँच रहा हो। अभी कुछ ही पहले

तुम्हारे जीवन की मधुरता जा रही थी, तुम्हारा आदर्श गिर रहा था। तुम अपनी ग़रीबी की हालत से बेपरवाह थे। तुम कोई भी काम अच्छी तरह नहीं कर रहे थे। तुम यह नहीं जानते थे कि इस तरह की निश्चेष्टता और आलस्य से तुम्हारी कार्य-शक्ति को बड़ा गहरा धक्का लगता है। अच्छे-अच्छे अवसरों को तुम हाथ से चले जाने देते थे, क्योंकि तुम उन्नति के पथ पर नहीं थे।

"अब तुम्हें अपने आदर्शों को साफ करने की ज़रूरत है, क्योंकि उन पर ज़ंग जमता जा रहा है। तुम सुस्त होते जारहे हो। हर बात की आसानी तुम चाहने लगे हो। याद रखो कि कोई मनुष्य उस आदमी को नहीं मानता जो अपनी शक्तियों को व्यर्थ खोता है, अपने आदर्श को गिरने देता है, अपनी महत्त्वाकांक्षा को मुरझाने देता है। पर हे नवयुवक! अबसे मैं तुमपर तबतक नजर रखूंगा जबतक तुम अपनी ठीक राह पर न जाओगे, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ऐसा किये बिना तुम्हारा ध्यान अपने ध्येय पर पहुंचना असम्भव है।

"तुममें वह योग्यता है जिससे तुम वर्तमान समय से बहुत अच्छा काम कर सकते हो। आज रात को तुम इस दृढ़ निश्चय से कार्य आरम्भ करो कि नित्य ही तुम्हें अधिक सफलता प्राप्त होगी, तो तुम्हारे लिए विजय प्राप्त करना कोई बड़ी बात नहीं है। तुम्हारा जीवन विजय के लिए है। निश्चय करलो कि आज का दिन तुम्हारे लिए विजय का दिन होगा। तुम अपने आपको कार्य में लगा दो। अपने मानसिक जालों को बाहर निकाल कर फेंक दो, उसे बिल्कुल साफ़ कर डालो और केवल अपने उद्देश्य का, अपने ध्येय का मनन करो।

"तुम अपने हाथ से एक भी अवसर मत जाने दो। उसे धरकर पकड़ लो। उसका अच्छा उपयोग करो। जितना लाभ

तुम उससे खींच सकते हो, खींच लो।"

बहुत से मनुष्य रोया करते हैं कि क्या करें हमारे ग्रह अच्छे नहीं हैं, पर वे यह नहीं जानते कि हमारी सफलता हमसे प्रकट होती है, न कि हमारे ग्रहों से! वही आदमी मार खाता है जो अपने को कमज़ोर समझता है, वही क्षुद्र है जो अपने को क्षुद्र और हीन मानता है, जो यह मानता है कि संसार के सर्वोत्कृष्ट पदार्थ दूसरों के भाग्य में लिखे हैं, मेरे भाग्य में नहीं। दुनिया उसीकी रहती है जो उसपर विजय पाता है। अच्छे पदार्थों के स्वामी वे ही हो सकते हैं जो अपनी शक्ति से उन्हें प्राप्त करते हैं।

जिस मनुष्य ने यह शक्ति प्राप्त करली है कि वह अपने मन को उन्हीं विचारों से भरे जो ऊंचा उठाने वाले हों, आशापूर्ण हों, आनन्दमय हों, वही संसार में सफलता प्राप्त कर सकता है।

: ६ :

उदासीनता से हानि

जो आदमी खुशमिज़ाज है, जिसकी प्रकृति आनन्दमय है, जो हमेशा आनन्द-समुद्र में हिलोरें लेता रहता है, भारी-से-भारी विपत्ति आ पड़ने पर भी जिसकी मुस्कराहट सदा बनी रहती है, घोर-से-घोर दुःख का आक्रमण होने पर भी जिसके मुख-मण्डल पर हास्यरेखा बराबर झलका करती है वह इस प्रकार की आनन्द-मय प्रकृति से, इस खुशमिज़ाजी से केवल अपने आपको ही फ़ायदा नहीं पहुँचाता, उस मनुष्य को भी जीवन की मधुरता का अनुभव कराने में सहायक होता है जिसका धैर्य, आशा और भरोसा ही नष्ट हो गया है। क्या हम उस आदमी को बहादुर नहीं कह सकते, वीर की सम्माननीय उपाधि से उसे विभूषित नहीं कर सकते, जिसके मुख-मण्डल की हास्यरेखा उस समय भी नहीं मिटती जब उसके जीवन का हरएक पासा उलटा ही पड़ता है, हर बात उसके विपरीत होने लगती है? ऐसे मनुष्य के लिए हम ज़रूर यह कह सकते हैं कि उसका निर्माण जड़-प्रकृति पर विजय पाने के लिए हुआ है, क्योंकि साधारण मनुष्य इस तरह की अलौकिक वीरता नहीं दिखा सकता।

अंग्रेज़ी के सुप्रसिद्ध विचारक कार्लाइल महोदय का कथन है कि "कुछ मनुष्य केवल दरिद्र होने की शक्ति में ही धनी होते हैं।" ऐसे मनुष्य मानसिक विष फैलाते हुए दीख पड़ते हैं। ऐसा मालूम होने लगता है मानो उनमें मानसिक विष फैलाने की ही

प्रतिभा काम कर रही है। उनसे मिलने-जुलने वाले हर एक आदमी के मनमें वे अन्धकारमय और निराशाजनक विचारों का प्रवाह बहाते रहते हैं। अपनी उदासी की अन्धकार-भरी छाया वे हर आदमी पर डाला करते हैं। उनका विश्वास होता है कि परमात्मा ने हमारे लिए आनन्द उत्पन्न किया ही नहीं, उदासी का परदा उनके अंतःकरण पर से किसी तरह नहीं हट सकता, निराशा उनकी चिरसंगिनी होती है।

पर यह सब खामखयाली है। कोई मनुष्य दुःखी और दरिद्र होने के लिए नहीं जन्मा है; कोई दुनिया में उदासी का अंधकार फैलाने के लिए, दूसरों के आनन्द को नष्ट करने के लिए नहीं आया है। परमपिता परमात्मा की इच्छा है कि उसके हम सब पुत्र आनन्द में मग्न रहें, प्रसन्न चित्त रहें, मस्त रहें।

आपको इस बात का अधिकार ही नहीं है कि मुँह पर गहरी उदासी एवं खिन्नता की मुद्रा दरसाते, मानसिक विष फैलाते, भय, शंका, निरुत्साह और निराशा के कीटाणु बिखराते हुए मानव-समाज में विचरण करें। जिस तरह किसीके शरीर को चोट पहुँचाना आपके अधिकार के बाहर है उसी तरह यह बात भी आपके अधिकार की सीमा में नहीं है। आपको यह अधिकार नही कि आप इस तरह दूसरों के सुखों पर भी पानी फेरें, उनकी आनन्दमय प्रकृति पर उदासी का काला परदा डालें।

देखा जाता है कि बहुत से आदमी उदासी-निराशा की खिन्न मुद्रा लिये घर के कोने में बैठे मक्खियां मारा करते हैं।उदासी के विचारों को वे बड़े आदर, बड़े सम्मान के साथ बुलाते रहते हैं। वे अपनी दरिद्रता और दुर्भाग्य का ही बार-बार ध्यान किया करते हैं; जब देखिए अपने कष्टों, व्यथाओं की ही बात छेड़ा करते हैं। हर आदमी से वे यही कहा करते हैं कि क्या करें हम

कमनसीब हैं, ईश्वर ने हमारे भाग्य में सुख नहीं लिखा, हमारी तक़दीर फूटी हुई है, दैव हमारे विपरीत है। उनके चेहरे की ओर देखने से साफ़ मालूम होता है कि मानो उन पदार्थों से उन्होंने अपना गहरा सम्बन्ध जोड़ लिया है जो उनके जीवन के माधुर्य का नाश कर रहे हैं, उनके उन्नति के मार्ग में काँटे बिछा रहे हैं। इस तरह वे हमेशा अनजान में ऐसे घोर निराशामय विचारों की जड़ अपने मन में जमाते जाते हैं।

मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूं जो उदासीन और निराशा-जनक विचारों की बलि हो चुका था। उसकी स्वाभाविक वृत्ति कुछ ऐसी हो गई थी कि वह जहां जाता था वहीं उदासी के, निराशा के वायुमण्डल को अपने साथ ले जाता था। जो आदमी उसकी ओर देखता था उसके चेहरे पर भी उदासी की छाया पड़े बिना न रहती थी। उसकी उदासीनता से भरी मुद्रा की ओर देखने से मालूम होता था मानो समस्त संसार का दुःख, विपत्ति इसीके सिर आ पड़ी है। उसके सामने हँसना और आनन्द की बातें करना जैसे दूसरे मनुष्य के लिए भी कठिन होता था। चाहे जितने उत्साह-पूर्ण और आनन्दमय होकर आप उसके सामने जाइए, उसकी खिन्न मुद्रा और निर्जीव बातचीत आपके मन पर खिन्नता का परदा डाल कर ही रहती। जब कभी मैं उसके पास जाता, मुझे मालूम होने लगता मानो मैं सूर्य के तेजो-मय आकाश से निकल कर घोर अंधकार की ओर जा रहा हूँ।

परमपिता परमात्मा ने इस मनोहर पृथ्वी पर हमें इसलिए उत्पन्न किया है कि हम हमेशा खुश रहें, मस्त रहें, आनन्द के समुद्र में गोते लगाते रहें, न कि उदास और खिन्न मुद्रा बनाए रहें।

महात्मा इमर्सन ने कहा है—"आनन्द और उत्साह-भरी

मुद्रा ही हमारी मानसिक उन्नति और सभ्यता की परमावधि है। उस मनुष्य की ओर देखकर जिसके मुख-मण्डल पर अलौकिक प्रकाश चमक रहा हो, अपूर्व शान्ति झलक रही हो, दैवी आनन्द अपना प्रकाश फैला रहा हो, हमारे मन में दिव्य भावों का उदय होने लगता है। ऐसे मनुष्य की ओर निहार कर स्वभाव से ही हमें मालूम होने लगता है मानो उसका परम तत्त्वों के साथ सम्बन्ध है, उसकी दिव्यता खिल रही है—परमात्मा से उसका निकट का सम्बन्ध हो रहा है। जहाँ-जहाँ वह जाता है वहाँ-वहाँ स्वभाव ही से आनन्द, उत्साह और आशा की वर्षा करता जाता है। पर हाय! ऐसे मनुष्यों की संख्या बहुत कम होती है।

सभ्यता में उस मनुष्य के लिए जगह नहीं जो उदास, खिन्न और निराश है। कोई आदमी उसके साथ रहना नहीं चाहता। हर आदमी उसकी हवा बचाने की कोशिश करता है।

उदास और निराश मन बीमारी को बढ़ाने में सहायक होता है, क्योंकि वह हमारी उस शक्ति को नष्ट करता है जो आधि-व्याधि को हमारी ओर आने से रोकती है।

आत्म-पतन और उदासीनता जैसी भयङ्कर चीज़ दूसरी कोई नहीं।

अहा! जब एक आनन्दी और आशापूर्ण आत्मा किसी ऐसी जगह जाती है जहां उदासी, अनुत्साह, निराशा छाई हुई है, तब वह अपने हँसोड़ स्वभाव, आनन्द-मय प्रकृति और हास्य से वहां आनन्द, आशा और उत्साह का मनोहर आलोक फैला देती है। वहां बैठी हुई खिन्न मुद्राओं को उसके दर्शन-मात्र से अलौकिक सुख का अनुभव होने लगता है, उदासी की जगह उनके मुख-मण्डल पर आनन्द और हास्य की रेखा झलकने लगती है।

बहुत से मनुष्य जो विजय-द्वार तक पहुँचने में असफल हो

जाते हैं उसका कारण यह है कि वे अपने मनोविकारों को वश में नहीं कर सकते। वे उनके गुलाम बने रहते हैं।

मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह खिन्न और उदास मनुष्यों की संगति से बचना चाहता है; हमारा मन उन्हीं आदमियों की ओर झुकता है जो खुशमिज़ाज और आनन्दी होते हैं।

देखा गया है कि कुटुम्ब में केवल एक निराश और उदासीन मनुष्य के होने से सारा का सारा कुटुम्ब दुःखी और निराश मालूम होने लगता है। ऐसा आदमी अपने साथ-साथ दूसरों को भी दुःखी और निराश बनाने का अपराध अपने सिर लेता है। ऐसे मनुष्य का खुद तो आनन्द लूटना दूर रहा, दूसरों के आनन्द में भी वह एक कण्टक रूप हो जाता है।

मुझे स्मरण है कि एक मनुष्य खिन्नता की बीमारी से बुरी तरह पीड़ित था। जब एकाएक उसके सामने किसी आकस्मिक उद्वेग का आवरण आ जाता था तब उसका चेहरा बिल्कुल ही बदल जाता था, वह पहचाना ही न जा सकता था। घोर चिंता के चिन्ह उसके मुखपर दृष्टिगोचर होने लगते थे। ऐसे समय वह कोई काम न कर सकता था, उसके मित्र उससे पहलू बचाने लगते थे। मानसिक बीमारी की घोर व्यथा उसके मुख-मण्डल पर छाई रहती थी।

क्या यह कुछ कम हृदय-द्रावक बात है कि एक बलवान और शक्तिशाली मनुष्य, जो दुनिया में बड़े-बड़े काम करने के लिए बनाया गया है, संसार में अद्भुत शक्ति का प्रकाश करने के लिए जिसका जन्म हुआ है, इस तरह की निराशामय स्थिति का गुलाम बना रहे जो हमारे जीवन-प्रकाश पर काला परदा डालती है? जो मनुष्य हज़ारों आदमियों का नेता बनने की

सामर्थ्य रखता है, जिस मनुष्य में सैंकड़ों मनुष्यों को किसी बड़े काम में लगा देने की शक्ति है, उस मनुष्य का इन मानसिक भूतों के पंजे में पड़ जाना सचमुच कितने खेद की बात है।

दुनिया में ऐसे कितने ही मनुष्य दीख पड़ते हैं जिनकी महत्वाकांक्षा बहुत बढ़ी हुई होने पर भी जिनके हाथों बहुत कम काम होते हैं। इसका कारण यही है कि वे खिन्न और निराश रहते हैं।

वह मनुष्य जो अपने मन का गुलाम बना रहता है, कभी नेता और प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता। मैं एक बुद्धिमान मनुष्य को जानता हूँ जिसके विषय में मेरा विश्वास है कि यदि वह अपने मनोविकारों की बलि न हो गया होता तो दुनिया में बड़े-बड़े काम करता। उसका स्वभाव ही कुछ विचित्र ढंग का था। जब उसे अच्छी लहर आ जाती थी तब तो वह बड़ा आशावादी बन जाता था और उन्नति की बातें करने लगता था, और जब आकस्मिक उद्विग्नता का आक्रमण उसपर हो जाता था तब वह अपने को एकदम गिरा लेता था, नैराश्य में डूब जाता था, अपनी सब आशाओं और आधारों को खो देता था।

अनुत्साह हमारी निर्णय-शक्ति को मलिन करता है। भय के दबाव में आकर मनुष्य चाहे जैसी मूर्खता का काम करने लगता है। किस मार्ग पर जाना है, क्या करना है, इसको बताने में जब बुद्धि जवाब दे दे, जब आप बड़ी उलझन और भय में पड़े हों, तब कुछ देर ठहर कर अपने चित्त को शांत कीजिए, स्थिर हो जाइए और फिर विचार कीजिए, आपको रास्ता जरूर मिलेगा।

जबतक आप किसी बात का ठीक निर्णय नहीं कर सकते, जबतक आपके मन में शङ्का और निराशा बनी हुई है, जबतक आपका मन भय और चिन्ता से भरा है, तबतक किसी बात का निर्णय करने में मत लगिए। आप अपने रास्ते को तभी सोचें जब मस्तिष्क ठण्डा और शांत हो। जब मन में डर रहता है तब मानसिक शक्तियां बिखरी हुई रहती हैं और हम एकचित्त होकर किसी बात का ठीक निर्णय नहीं कर सकते।

बहुत से मनुष्य संसार में उन्नति नहीं कर सकते, इसका एक कारण यह भी है कि वे महत्त्वपूर्ण बातों पर उस समय विचार किया करते हैं जब उनका मन भटकता होता है और उसमें शंका और भय भरा रहता है।

हमें उसी समय अपने मन और मस्तिष्क को स्थिर और शांत करने की विशेष आवश्यकता होती है जब हम किसी आपद या गड़बड़ में पड़े हों। जब हमें मालूम हो कि हमपर भय और आपद अधिकार जमा रहे हैं तब हमें किसी महत्त्वपूर्ण बात का निर्णय ही न करना चाहिए। आप पहले अपनी दशा को सुधार लें। इसका अच्छा उपाय यह है कि आप उस उलझन को अपने मन से निकाल कर उसे स्थिर करलें, अपने आप पर अपना अधिकार करलें, तब आपका मस्तिष्क इस योग्य हो जायगा कि वह चाहे जिस बात का निर्णय ठीक तरह कर सके। इस बात का सदा स्मरण रखिए कि व्यथित और उलझन में पड़े हुए मन से किसी महत्त्वपूर्ण बात का निर्णय कदापि न करना चाहिए।

परमपिता परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि हम मानवगण अपने मनोविकारों के गुलाम बने रहें, किन्तु उसकी यह इच्छा है कि हम अपने मन को अपने वश में रखें—जो विचार चाहें

उसमें आने दें, हम उस पर शासन करें।

सुसंस्कृत मन के लिए यह बात बहुत आसान है कि वह उदासीनता के आक्रमण को एकदम रोक सके, पर खेद की बात है कि हम आनन्द, उत्साह और आशारूपी सूर्य की किरणें आने देने के लिए अपने मनोमन्दिर के द्वार को खुला नहीं रखते। हम अपने अन्तःकरण को केवल अन्धकार से भर लेते हैं, इसी से हमारी उदासीनता, उद्विग्नता नष्ट नहीं होने पाती, संसार हमें अन्धकारमय दीखता है।

मेरी राय में सब विद्याओं की विद्या यह है कि हम अपने मन को साफ़ रखना सीखें। मन को भद्दी चीजों से हटाकर सुन्दर और मनोहर वस्तुओं की ओर जमाना, विरोध से हटाकर ऐक्य में स्थित करना, मृत्यु के विचारों से हटाकर दिव्य जीवन के रहस्य में लगाना, बीमारी के विचारों से हटाकर आरोग्य के मीठे विचारों में उसे सुख-स्नान कराना—यह एक बड़ी कला है। ऐसा करना कोई सहज काम नहीं, पर मनुष्य के लिए यह सम्भव ज़रूर है। विचारों को यथायोग्य रूप देने की इसके लिए बड़ी आवश्यकता है।

यदि आप उन कुभावनाओं के लिए जो आपकी सुख-शान्ति को लूटने वाली हैं, अपने मनमन्दिर के द्वार बन्द किये रखेंगे तो धीरे-धीरे यह हालत हो जायगी कि इनका रुख भी आपकी ओर न हो सकेगा।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन मन्दिर से अन्धकार निकल जाय तो हमें चाहिए कि अपने मन को प्रकाश में आलोकित करलें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से विरोध-भाव निकल जाय तो हमें चाहिए कि अपने मन को ऐक्य के विचारों से भरलें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से असत्य निकल

जाय तो हमें चाहिए कि अपने मन को सत्य के विचारों से परिपूर्ण कर लें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से कुरूपता निकल जाय तो हमें चाहिए कि अपने मन को सौंदर्य के विचारों से परिपूर्ण करलें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन की अपूर्णता निकल जाय तो हमें चाहिए कि अपने मन को पूर्णता के विचारों से भरलें। परस्पर-विरुद्ध विचार एक साथ ही मन पर शासन नहीं चला सकते। इससे आप अपने हितैषी विचारों को ही, अर्थात् ऐक्य, सत्य और सौंदर्य के विचारों को ही अपने मन में क्यों नहीं बुलाते ?

हमें चाहिए कि अपने मन से अप्रीतिकर, अस्वास्थ्यकर, और मृत्यु के विचारों को हटाने का अभ्यास डाल लें। मन को इन कुविचारों से बिलकुल साफ़ कर अपना कार्य आरम्भ करें। हमें चाहिए कि हम अपनी मन-रूपी गेलरी से काम, क्रोध, मान मोह, लोभ और द्वेष के विचारों को हटाकर शुद्ध, सात्विक, दया और सहानुभूति-पूर्ण विचारों को उसमें जगह दें।

स्वर्गीय प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट बड़े ही प्रतिभाशाली और योग्य व्यक्ति समझे जाते थे। संसार की सभ्यता पर प्रभाव डालने की उनमें शक्ति थी। पर किसी काम को शुरू करने से पहले वे अपने विवेक से पूछ लेते थे कि मैं अमुक कार्य करूँ या नहीं। "हाँ" का उत्तर मिलने पर ही वे अपना कार्य आरम्भ करते थे, क्योंकि वे इस बात को जानते थे कि जिस काम को मन, वचन और विवेक ठीक तरह से स्वीकार कर लेते हैं वही अच्छा होता है।

जब कभी आपको ऐसा मालूम हो कि चिंताजनक विचार आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहते हैं, उदासी का आप पर आक्रमण हुआ चाहता है, तब आप स्थिर, शांत और तन्मय होकर

अपने हृदय-केन्द्र से इस तरह के उद्गार निकालें—"अहा! मैं मनुष्य हूँ। मेरी आत्मा दिव्य है, निर्दोष है। अनन्त शक्तियाँ गुप्त रूप से उसमें विद्यमान हैं। वह सुख, शांति, आनन्द और पूर्णता का आगार है। भला, ऐसी दशा में वहाँ दुःख, चिन्ता, रोग, शोक का क्या काम? पर मुझे कमज़ोर देखकर ये मुझपर अधिकार जमाना चाहते हैं। आजसे मैं सम्हल जाता हूँ। आजसे मैं आत्मिक शक्तियों को प्रकाशित करने में यत्नवान होता हूँ। इसलिए हे मानव जाति के शत्रुओ! तुम मेरे मनसे निकल जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें धक्का देकर निकाल दूँगा। मेरी शक्ति के सामने अब तुम किसी तरह नहीं ठहर सकते, क्योंकि अब मैं सच्चा मनुष्य बनने जा रहा हूँ। तुम्हारा ठौर-ठिकाना निर्बल, अज्ञान के ही हाँ लगेगा। मैं देखता हूँ कि सच्चे मनुष्यों के सम्मुख तुम्हारी शक्ति पंगु हो जाती है।"

यदि नेपोलियन और ग्रेण्ट अपने मनोविकारों के वश में रहते तो क्या वे सारे यूरोप को हिला सकते थे? यदि लिंकन अपने मनोविकारों के वश में रहा होता तो क्या वह किसान के घर में जन्म लेकर इतनी तरक्की कर सकता था? कभी नहीं।

हमारे कहने का मतलब यह है कि हमेशा आत्मा को सुख के, आनन्द के, संतोष के मीठे समुद्र में ग़ोते खिलाते रहिए। हमेशा मस्त रहिए। दुःख, चिन्ता और शोक को अपने मन से भुला दीजिए। प्रकृति के सौंदर्य को, ईश्वर की अपार लीला को देखकर आनन्दित होते जाइए। जहां देखिए वहां सुख के ही स्वप्न देखिए। विपत्ति में भी सुख को ही देखिए, हमेशा खुश-मिज़ाज रहिए। उदासी, दुःख, चिन्ता पर विजय पाने का सहज और सरल उपाय यही है। आनन्द—स्वर्गीय आनन्द के दिव्य

प्रवाह में तन्मय रहिए, अपनी आत्मा को उसकी ओर अभिमुख कीजिए। कभी चेहरा उतरा हुआ मत रखिए। सदा हास्य की मधुर-रेखा से अपने मुख-मण्डल की दिव्यता बढ़ाते रहिए। बस यही उदासीनता पर विजय पाने का राजमार्ग है।

: ७ :

दैवी तत्त्व से एकता

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यापक श्री शेलर ने कहा था कि वर्तमान शताब्दी का सबसे बड़ा आविष्कार विश्व के प्रत्येक पदार्थ में एकता होना है—संपूर्ण जीवन में समानता होना है।

सारे विश्व में एक ही तत्त्व काम कर रहा है—एक ही जीवन, एक ही सत्य वर्तमान है। हम सब उस दैव प्रवाह की ओर जा रहे हैं जो ईश्वर तक जाता है। इस तरह की मनोभावना रखने से हमें एक अलौकिक प्रोत्साहन प्राप्त हो जाता है, हमारे मन का भय नष्ट हो जाता है।

जब हम विश्व के इस महा-प्रभावशाली और जीवनप्रद दैवी तत्त्व का अनुभव करने लगेंगे तब हमारे जीवन में अलौकिक परिवर्तन होने लगेगा। वह एक नया रूप धारण करने लगेगा।

हम उसी परम तत्त्व के अंश हैं, हम उनसे अलग नहीं हैं; जो गुण ईश्वर में हैं वे हमें भी भलीभाँति प्राप्त हो सकते हैं; क्योंकि हम उसीके तो अंश हैं, हम पूर्ण और अमर हो सकते हैं, क्योंकि पूर्ण परमात्मा से ही हमारी उत्पत्ति है; इत्यादि बातों का अनुभव करते रहने से हमारा जीवन एक अपूर्व अलौकिकता से परिपूर्ण हो जायगा, महान् आनन्द, महान् संतोष से वह भर जायगा।

इस बात को हमेशा मानते रहने से कि अनन्त जीवन से

हमारी एकता है, हम और परमपिता एक ही हैं, हमें अपूर्व धैर्य, आश्वासन और निश्चय प्राप्त होता है। हमारा विश्वास हो जाता है कि हम आकस्मिक संयोगों और किस्मत के गुलाम नहीं हैं, हम उनका संचालन करने वाले हैं—उनके स्वामी हैं।

जितना हम दैवी तत्त्व से एकता का सम्बंध जोड़ेंगे, जितना हम अपने परमपिता परमात्मा में तन्मय होंगे, उतना ही हमारा जीवन शांतिमय, आश्वासन-पूर्ण और उत्पादन-शक्ति-युक्त होगा।

साधु पाल कहते हैं—"मेरा विश्वास है कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गीय दूत, न सिद्धान्त, न शक्ति, न वर्तमान पदार्थ, न भविष्य में उत्पन्न होने वाले पदार्थ, न ऊंचाई, न गहराई—मतलब यह कि कोई भी पदार्थ हमें ईश्वरीय प्रेम से जुदा नहीं कर सकता।"

"तुम अपनी आत्मा के सत्य को पहचानो, वह सत्य तुम्हें मुक्त कर देगा।"

साधु पाल के इस वचन का एक-एक शब्द हमारी मनोमाला में ग्रथित करने योग्य है। साधु पाल जैसा विश्वास रखने से हम भय, शंका, चिन्ता आदि के पंजे से अवश्य मुक्त हो जायंगे।

जब मानव-जाति को यह ज्ञान हो जायगा कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा से उसकी एकता का सम्बन्ध है तब उसके सब भय, शङ्काएँ नष्ट हो जायंगी।

जहाँ मनको दैवी तत्त्व की थोड़ी सी झलक मिल गई, जहाँ उसे यह मालूम होने लगा कि अनन्त से मेरी एकता है, वहां वह किसी चीज़ से न डरेगा, क्योंकि उसे इस बात का विश्वास हो जायगा कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा मेरे साथ हैं, फिर मुझे डर किस बात का ?

जितना हम ईश्वर के परम-तत्त्व के पास होंगे उतना ही पदार्थों के अटूट भण्डार के पास होंगे । जब हमें अलौकिक परमशक्ति का अनुभव होने लगेगा, जब हमें उस शक्ति का ज्ञान हो जायगा जो हमारे हाड़-मांस वाले शरीर के पीछे है, जब हमें मालूम होने लगेगा कि ईश्वर के हम बहुत पास हैं, तब हमारी शक्ति में निश्चय ही एक प्रकार की दिव्यता आ जायगी ।

यदि हम शक्ति के आन्तरिक दैवी प्रवाह की ओर अपने मन-मंदिर के द्वार पूरे तौर से खोल दें तो हमारे जीवन में कैसी अलौकिक शक्तियों का विकास होगा, इसका अनुमान भी इस वक्त करना कठिन है ।

आज जो हम कमज़ोर और अकर्मण्य हो रहे हैं इसका कारण यही है कि हम अपने कुविचार और असदाचरण के कारण आत्मा की इस अलौकिक शक्ति की ओर से अपने मन-मंदिर के द्वार अपने हाथों बंद कर लेते हैं । जबतक मनुष्य असदाचरण में प्रवृत्त है तबतक वह सच्ची शक्ति नहीं प्राप्त कर सकता ।

जब-जब मनुष्य कोई बुरा काम करता है, असदाचरण में प्रवृत्त होता है, तब-तब वह अपनी शक्ति का बल घटा लेता है । इस तरह बहुत से मनुष्य न्याय और प्रेम से मुँह मोड़कर ईश्वर से भी अपना नाता तोड़ लेते हैं । प्रत्येक कुकृत्य उस तार को तोड़ देता है जो हमारे और ईश्वर के बीच में लगा हुआ है ।

जब-जब हम बुरा काम करते हैं, जब-जब हम सत्य से विचलित होते हैं, जब कभी हम नीचता और बेईमानी का कर्म करते हैं, तब-तब हम सर्वशक्तिमान् परमात्मा की दिव्य सत्ता से अपने आपको अलग कर लेते हैं । तब इसका परिणाम यह होता है कि सब प्रकार के भय, शङ्काएं और संदेह हमपर बुरी तरह

से अधिकार कर हमें अपना शिकार बना लेते हैं। ईश्वरीय सत्ता से अलग होने पर हमारी दशा उस निस्सहाय बालक की सी हो जाया करती है जो घोर अन्धकार में अकेला छोड़ दिया गया हो और बिलखता हुआ इधर-उधर भटक रहा हो।

मानव-जाति अब इस बात को जानने लगी है कि उसकी शक्ति, उसकी विजय, उसका सुख उसी परिमाण में होगा जिस परिमाण में कि वह सकल शक्ति के आगार, अखिल सुखों के भण्डार परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ेगी।

जितने दुःख, जितनी विपत्तियाँ हमें प्राप्त होती हैं उनका कारण यही है कि अनन्त ऐश्वर्ययुक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा की ओर हम भिन्नता का भाव रखते हैं।

जिस समय हमें ऐसा मालूम होने लगता है कि संपूर्ण पदार्थों के उद्गम परमात्मा से हमारा सम्बन्ध टूट गया उसी समय से भय और अनिश्चितता से हमारा मन व्याप्त हो जाता है। हमें ऐसा मालूम होने लगता है मानो हम असहाय हो गए हैं। हमें पद-पद पर भय होने लगता है। कमजोरी हमारे शरीर की नस-नस में फैल जाती है। भय, चिन्ता और खिन्नता इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा से हमारा नाता टूट गया—अनन्त जीवन से हमारी एकता नहीं रही और मूल तत्त्व से हमारा विरोध हो गया।

परमात्मा से जितना हम अपना सम्बन्ध जोड़ेंगे उतनी ही शक्ति हमें प्राप्त होगी, क्योंकि शक्ति वहीं से आती है।

पूर्ण प्रेम भय का नाशक है, क्योंकि पूर्ण प्रेम अनन्त-जीवन परमात्मा और हमारे बीच पृथकता के भाव का नाश करता है।

जब हम आध्यात्मिक जीवन का अनुभव करने लगते हैं,

जब हमें यह निश्चय होने लगता है कि ईश्वर से हमारा फिर सम्बन्ध जुड़ रहा है, तब हमारी सब विपत्तियाँ रफूचक्कर होने लगती हैं, हमारे पाप और बीमारियाँ विदा होने लगती हैं।

जब हमारा ईश्वर के साथ इतना गहरा सम्बन्ध हो जाता है कि चारों ओर हमें वही दिखाई दे तब हमारी कमजोरी, संकीर्णता, भीरुता, संदेह अपने आप हमसे विदा हो जाते हैं और हमें पूर्ण निर्भयता और शक्ति प्राप्त होती है, जिसका उद्गम खास परमात्मा से है।

मनुष्य ईश्वर से जितना अपना सम्बन्ध जोड़ेगा उतना ही वह अपनी आत्मा में जीवन, सत्य और सौंदर्य के तत्त्वों का विकास करेगा। उसकी आत्मा नई शक्ति, नये साहस के संचार से हरी-भरी होकर खिल उठेगी।

मनुष्य उतना ही महान् होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शक्ति का विकास करेगा, और इन सबके मूल परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा। वह मनुष्य कभी महान् नहीं हो सकता जो केवल अपनी वर्त्तमान शक्ति पर ही अवलंबित रहता है और दैवी तत्व का ज्ञान नहीं प्राप्त करता।

मनुष्य अपनी ठीक-ठीक शक्ति को तब तक नहीं प्राप्त कर सकता जबतक कि वह इस बात को मन, वचन और काया से न समझ ले कि विश्व के महान् तत्त्व का मैं एक अंश हूँ।

सत्य ही हम हैं; भूल हमारी आत्मा का स्वभाव नहीं; ऐक्य हमारी आत्मा का गुण है, प्रेम; न्याय, सत्य, सौंदर्य के हम तत्त्व हैं; इस बात को हृदयपूर्वक मान लेने से हमें अपूर्व शान्ति का अनुभव होने लगता है, निर्मलता के हमें दर्शन होने लगते हैं, धैर्य हमें प्राप्त हो जाता है, आत्मा आध्यात्मिक

भवन पर बहुत ऊंची चढ़ जाती है।

हम परम-तत्त्व में जितना तन्मय रहेंगे उतना ही जीवन और स्वास्थ्य का प्रवाह हमें प्राप्त होगा, जिससे हमारी सब आधि-व्याधि शान्त हो जायगी। यही अर्थात् ईश्वर के साथ ज्ञान-पूर्वक सम्बन्ध जोड़ना ही सब प्रकार की चिकित्सा का, स्वास्थ्य का, सुख-समृद्धि का रहस्य है। ऐसा कोई स्थायी सुख-संयोग नहीं, ऐसा कोई स्थायी स्वास्थ्य नहीं, ऐसा कोई सच्चा सुख नहीं जो अनन्त जीवन के बाहर हो। यदि हम ज्ञानपूर्वक अनन्त जीवन के दिव्य प्रवाह में अपने शारीरिक और मानसिक दिव्य सुख को ठीक तरह स्थिर रख सकें तो यही मानव-जाति के कल्याण का परम रहस्य है।

इस तरह की आत्म-स्थिति हो जाने पर जरा हमपर अधिकार न चला सकेगी। फिर हमें इस बात का अनुभव ही न होगा कि बुढ़ापा क्या चीज है, क्योंकि दिन-प्रति-दिन बूढ़े होने के बजाय हममें अधिकाधिक यौवन का दिव्य प्रवाह बहने लगेगा। दिन प्रति-दिन हम कल्याणमार्ग की ओर ज्यादा जोर से पैर उठाने लगेंगे।

: ८ :

प्रेम की शिक्षा

कुछ वर्ष पूर्व न्यूयार्क नगर में एक प्रदर्शनी हुई थी जिसमें एक घोड़े ने बड़े ही अद्भुत काम कर दिखाए थे। उस घोड़े के कामों ने दर्शकों को एकदम आश्चर्य में डाल दिया था। उसके स्वामी का कहना था कि कोई पांच ही वर्ष पहले उस घोड़े में कई बुरी आदतें थीं। वह बहुत ही अटकता था, लात मारता था और काटता भी था। पर अब उसने अपनी सब आदतों को छोड़ दिया है। अब वह तुरन्त हुक्म मानने वाला नम्र जानवर हो गया है। अब वह चीज़ों की गिनती कर सकता है, बहुत से शब्दों का उच्चारण कर सकता है और उनके अर्थ भी बता सकता है।

सचमुच वह घोड़ा प्रायः हर चीज़ को सीखने योग्य मालूम होता था। पांच वर्ष के दयापूर्ण शिक्षण ने उसके स्वभाव को एकदम बदल दिया। अच्छे बर्ताव से घोड़े जैसे जानवरों के स्वभाव पर भी अद्भुत प्रभाव होता है। चाबुक मारने और धमकाने से उतना सुधार किसी प्रकार नहीं हो सकता। उलटे इनसे उसकी आदतें और खराब होती हैं। उस घोड़े का पालक कहता था कि उन पांच वर्षों में मैंने एक भी चाबुक उसे नहीं मारा।

मैं एक स्त्री को जानता हूँ जो कई बच्चों की माता थी। वह अपने बच्चों को मारती-पीटती न थी। लोग उससे कहते थे कि

तुम अपने बच्चों को बिगाड़ दोगी। तुम उनका सुधार न कर सकोगी क्योंकि लाड़-प्यार से बच्चे बिगड़ जाते हैं। पर पीछे उन्हीं लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन लड़कों के चरित्र ऊंचे हो गए हैं। उन लड़कों में मनुष्यत्व का सच्चा आदर्श देखकर उन्हें अपनी भूल पर पश्चात्ताप करना पड़ा। उनके स्वभाव के अपूर्व विकास को देखकर उन्हें यह बात ठीक जंचने लगी कि प्रेमपूर्ण बर्ताव ही से वास्तव में बच्चों का पालन-पोषण होना चाहिए।

प्रेम ही सब रोगों की अद्भुत औषधि है, प्रेम ही जीवन-दाता है। प्रेम ही जीवन है, प्रेम ही हमारी व्यथाओं को शमन करने वाला है, प्रेम ही जीवन का वास्तविक आनन्द देने वाला है।

हम लोगों को ये बातें कब सिखाई जायंगी कि आरोग्य का मूल-तत्त्व प्रेम ही है? प्रेम ही आरोग्य के मूल कारण—परमात्मा से हमारा मेल कराता है। जहां प्रेम का सुखद साम्राज्य है वहां काम, क्रोध, द्वेष, लोभादि दुर्गुण तो फटकने भी नहीं पाते। प्रेम ही शान्ति है, प्रेम ही सुख और आनन्द है।

प्रेम ही सबसे बड़ा शिक्षक है, प्रेम ही सर्वोत्कृष्ट शान्ति-कर्त्ता है। जो कुछ हमारे सुख पर वज्राघात करता है प्रेम ही उसका नाशक है, प्रेम ही असन्तोष-रूपी महान् व्याधि की रामबाण औषधि है। प्रेम ही द्वेष, मत्सर, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों का उपशामक है। दया के सामने जैसे दुष्टता का नाश हो जाता है वैसे ही प्रेम और उदार सहानुभूति के सामने बुरे मनोविकारों का नाश हो जाता है।

माता ही बच्चे के जीवन को सुसंगठित करती है और वही उसके भाग्य की विधात्री भी है। माता बच्चे को तेज में सूर्य के

समान, विद्या-बुद्धि में बृहस्पति के समान, दया-धर्म में दया-सागर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के समान, वीरता में महावीर नेपोलियन के समान बना सकती है। माता से ही बालक संसार का पाठ पढ़ता है। माता से ही बालक प्रेम, दया सहानुभूति और निःस्वार्थता का सबक़ सीखता है। विकलता से रोता हुआ बच्चा माता के ज़रा से पुचकारने मात्र से शान्त हो जाता है। माता के प्रेम-पूर्ण शब्द बच्चे के हृदय में प्रेम का अंकुर प्रस्फुटित करते हैं।

उस बच्चे का भविष्य कितना शोचनीय, कितना गिरा हुआ होगा जिसके कोमल मन में शुरू से ही बुरे-बुरे विचार, भय-पूर्ण कल्पनाएं, दुष्ट भाव ठूँस दिए जाते हैं, जिसका कोमल मन पाप-पूर्ण कथाओं और अश्लीलता से मलिन कर दिया जाता है। अवश्य ही उसका भविष्य अति भयावह और अनिष्टकर होगा।

इसके विपरीत जो बालक पवित्रता, विशुद्धता और सुरक्षा के वायुमण्डल में पाला पोसा जाता है और जिसका कोमल मन, सत्य और प्रेम के उदार विचारों से भरा जाता है उसके सुख और उन्नतिशील भविष्य की कल्पना कीजिए। इन दोनों बालकों का मिलान करने से क्या आपको मालूम न होगा कि जहां एक की गति प्रकाश की ओर है वहां दूसरे की अन्धकार की ओर?

जिस बालक का मन शुरू से ही द्वेष, मत्सर, ईर्ष्या और बदला लेने के भावों से भर दिया जाता है उस बालक के लिए यह आशा करना दुराशा-मात्र है कि भविष्य में वह उच्च जीवन व्यतीत करेगा।

इसके विपरीत जो बालक सदा सत्य, प्रेम, सौंदर्य और उच्च चरित्र की बातें सुना और देखा करता है और इन्हीं से सम्बन्ध रखने वाली बातें जिसे दिखाई सुनाई जाती हैं उसका

भविष्य बड़ा उज्वल होता है।

यदि हम अपने बच्चों का हित चाहते हैं, उनका कल्याण चाहते हैं, उनकी भावी उन्नति चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम विजय के, सफलता के, सुख के, उन्नति के प्रकाशमय विचार ही उनके सामने प्रकट किया करें। उनके कोमल मन को इसी तरह के आशामय और उत्साह-पूर्ण विचारों से हरा-भरा और प्रफुल्लित रखा करें। ऐसा करके हम उनके जीवन पर एक अलौकिक और अद्भुत प्रभाव डालते हैं। इस तरह के भावों से उनके मन को प्रभावित करने का परिणाम यह निकलेगा कि वे तबतक असफल और दुःखी न होंगे जबतक कि वे उक्त प्रभाव से विपरीत आचरण न करने लगें। बच्चे के मन को हमेशा खुश रखिए। सत्य से उसे भर दीजिए जिससे किसी तरह की बुराई और भूल उसमें प्रवेश न कर सके।

बच्चों के सामने उसके ऐबों, कमज़ोरियों को प्रकट करते रहना बहुत ही बुरा है। बच्चों के कोमल मन पर इस तरह की हीनता और निर्बलता-सूचक बातों का बहुत ही बुरा असर पड़ता है। बच्चों को उनके ऐबों और कमज़ोरियों की याद दिलाने की बजाय यदि उनका मन श्रेष्ठता, सौंदर्य और सत्य विचारों से भरा जाय तो मेरी राय में बड़े ही ऊंचे दर्जे का लाभ हो। प्रेम, सहानुभूति, पवित्रता और उच्चता की प्रेरणाएं करते रहने से थोड़े ही समय में बच्चे का मन एक अद्भुत प्रकार के दिव्य प्रकाश से आलोकित हो उठेगा। उसके मन की दशा कुछ ऐसी हो जायगी कि बुरे तत्त्व फिर उसके पास फटकने तक न पायंगे। फिर उसका मन दिव्य प्रकाश से, सौंदर्य से, दैवी प्रेम से, लबालब भर जायगा और बुराई के तत्त्व उसके सामने आते ही नष्ट हो जायंगे।

बच्चे के आत्म-विश्वास को हरा-भरा रखने की कोशिश करनी चाहिए। हमेशा उसे प्रोत्साहित करते रहना चाहिए। उसको यह विश्वास करा देना चाहिए कि वह ईश्वर का पुत्र है, इसलिए उसके अनन्त ऐश्वर्य, अनन्त खज़ाने का वह अधिकारी है।

बहुत से लड़के, खासकर वे जो स्वभावतः ही कोमल मनवाले हैं, डरपोक और शंकाशील हैं; यह वहम करने लगते हैं कि शायद हममें बुद्धि की न्यूनता है। ऐसे लड़कों को अपनी योग्यता पर भी विश्वास नहीं होता और वे बहुत जल्दी निरुत्साह तथा निराश हो जाते हैं। अतएव बच्चे के आत्म-विश्वास को नष्ट करना, उसके मन पर निराशा की छाया डालना बड़ा ही भयानक पाप है, क्योंकि आशाजनक शब्दों की तरह निराशाजनक शब्द भी बच्चे के कोमल मन पर अपना अधिकार जमा लेते हैं, जिसका कुफल उसे आजंन्म भोगना पड़ता है।

बड़े ही दुःख की बात है कि बहुत से माता-पिता इस बात को नहीं जानते कि बच्चों का मन कितना कोमल होता है और निराशा तथा उपहास भरे वचनों का उनपर कितना बुरा असर पड़ता है। बच्चों को तो शाबाशी, प्रशंसा और उत्साह की ही आवश्यकता है। इन्हींसे उनका जीवन उन्नतिशील हो सकता है। यही उनके लिए शक्तिप्रद औषधी का काम देते हैं। हमेशा उन्हें कोसते रहने से, दोष देते रहने से, उनके स्वभाव पर बुरा असर होता है, उनकी प्रकृति बिगड़ जाती है। मेरी समझ में बच्चों के सामने सदा उनके दोष निकालते रहना, सदा उन्हें धमकाते रहना, उन्हें यह दुर्वचन कहते रहना कि तुम नालायक हो, निर्बुद्धि हो, भाग्यहीन हो, संसार में कभी तुम तरक्की नहीं कर सकते, भारी दुष्टता है।

बच्चे को नित्यप्रति यह कहकर कि "तू मूर्ख है, मन्दबुद्धि है,

सुस्त है, नाकारा है, कोई काम नहीं कर सकता, तुझमें न बुद्धि है न शारीरिक पराक्रम ही है, इससे तू कुछ नहीं कर सकता", माता-पिता सहज में ही उसकी निर्माण-शक्ति नष्ट कर देते हैं, उसके सृजन-शक्ति-युक्त मन को बेकार बना देते हैं। दुर्भाग्य से यह बात आजकल के अधिकांश माता-पिता ठीक तरह से नहीं जानते।

मैं एक लड़के को जानता हूं जिसमें स्वाभाविक योग्यता अच्छी है पर जो बड़े ही कोमल मन का और डरपोक है। यही कारण है कि उसकी उन्नति की गति बहुत धीमी है। उसके माता-पिता और शिक्षक ने यह कहकर कि यह मूर्ख और मन्द-बुद्धि है, उसके प्रकाशमान भविष्य को नष्ट कर दिया। यदि उस लड़के की ज़रा भी प्रशंसा और वाहवाही की जाती, उसे ज़रा भी उत्साह दिया जाता तो भविष्य में वह बहुत बड़ा आदमी बनता, क्योंकि बड़ा आदमी बनने के लिए जो सामग्री दरकार होती है वह उस में भरी हुई थी। पर अपने माता-पिता तथा शिक्षक से ऐसे ही पोच विचार निरन्तर सुनते रहने के कारण उसको यह विश्वास हो गया था कि मेरी बुद्धि तीक्ष्ण नहीं, मेरी ज्यादा तरक्की हो नहीं सकती।

अब यह बात हम लोगों को मालूम होने लगी है कि उत्साह और प्रशंसा से बच्चा जैसा सुधरता है वैसा धमकाने और मारने-पीटने से नहीं। बढ़ावा और शाबाशी देने से बच्चा आश्चर्यजनक उन्नति करता हुआ मालूम होने लगता है। हर्ष की बात है कि कोई-कोई माता-पिता अब इस महान् हितकर तत्त्व को समझने लगे हैं, पर भारत के दुर्भाग्य से ऐसे माता-पिताओं की संख्या यहाँ उंगलियों पर गिनने लायक़ भी नहीं है।

हम देखते हैं कि विद्यार्थीगण अपने उन शिक्षकों के लिए

चाहे जो करने को तैयार हो जाते हैं जो कृपालु, विचारशील और खुशमिज़ाज होते हैं। ऐसे शिक्षक और विद्यार्थी का आपस का बर्ताव अच्छा रहता है। हमारी समझ में विद्यार्थियों और अध्यापक के बीच किसी तरह की दुर्भावना न होनी चाहिए, होनी चाहिए केवल सद्भावना, जिससे कि अध्यापक को भी इस बात का यश मिल जाय कि उसने विद्यार्थियों का जीवन सुधार दिया और उसे सुखमय बना दिया।

बहुत से माता-पिता अपने बच्चों के बेकहे-पन से बहुत तङ्ग आ जाते हैं, पर वे यह नहीं जानते कि यह दोष सहज ही छुड़ाया जा सकता है। जवानी के जोश में प्रायः ऐसा हो जाया करता है। उस समय उनमें जीवन शक्ति और उत्साह भरपूर भरे रहते हैं जिससे वे शांत नहीं रह सकते। इधर दौड़ना उधर कूदना आदि अनेक तरह के उपद्रव वे किया ही करते हैं। बिना हाथ-पाँव हिलाए उनसे बैठा नहीं जाता। पर हाँ, माता-पिता को इस बात की विशेष सावधानी रखनी चाहिए कि इस तरह करते-करते उनकी प्रवृति कहीं दुष्कृत्यों की ओर न हो जाय। मेरी समझ में माता-पिता प्रेम-पूर्ण बर्ताव से उन्हें अपने वश में ला सकते हैं।

अपने बच्चों को आदर्श मनुष्य बनाने का प्रयत्न कीजिए, उन्हें पशु मत बनाइए। उन पर प्रेम कीजिए। अपने घर को अपनी पूरी शक्ति ख़र्च करके खूब आनन्दमय बनाइए और अपने बच्चों को वैसी स्वतन्त्रता दे दीजिए जिससे किसी तरह की बुराई पैदा न हो और वे अपना मानसिक विकास कर सकें। आप खेल-कूद में, आनन्द-क्रीड़ा में अपने बच्चों का उत्साह बढ़ाइए। उनके आनन्द में बाधक मत हूजिए। बहुत से माता-पिता स्वास्थ्यजनक खेल खेलने से, आनन्द-क्रीड़ा करने से उन्हें

रोककर उनके शैशव के आनन्द को बुरी तरह नष्ट कर देते हैं, उनके उल्लास-भरे बचपन को बरबाद कर देते हैं।

बड़े दुःख की बात है कि हज़ारों माता-पिता अपने बच्चों के साथ बहुत ही सख्ती का बर्ताव करते हैं, उन्हें बुरी तरह धमकाते और भला-बुरा कहते रहते हैं। इससे बेचारे कोमल हृदय बालक बहुत खिन्न और उदास रहा करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनका मानसिक विकास रुक जाता है, वे आजन्म सकुचाए हुए ही रह जाते हैं।

प्रत्येक माता, चाहे वह इस बात को जानती हो या न जानती हो, अपने बच्चों को अपनी आत्म-प्रेरणा के प्रभावों से प्रभावित करती रहती है। बच्चों के पालन-पोषण में इस शक्ति का प्रभाव हुए बिना रह नहीं सकता। जब बच्चा किसी कारण से रोने लगता है तब माँ बड़े प्यार से उसका चुम्बन लेने लगती है और पुचकार कर कहती है—"मेरे लाल! चुप रह, तेरा दर्द अच्छा हो गया।" इस प्रेम-पूर्ण आश्वासन से बच्चा अपने कष्ट को भूल जाता है, उसे भारी तसल्ली हो जाती है। माता जब प्रेम से अपने बच्चे पर हाथ फेरने लगती है तब उसका असर बच्चे के हृदय तक पहुँच कर उसके सारे शरीर में आनन्द की लहर दौड़ा देता है। हम देखते हैं कि बच्चे की छोटी-मोटी तकलीफ़ें तो केवल माता के प्रेम-भरे आश्वासन और हाथ फेरकर उसे पुचकारने भर से दूर हो जाती हैं।

यह बात सही है कि प्रेरणा-शक्ति के द्वारा बच्चों की उन शक्तियों का विकास किया जा सकता है जिनपर उनका स्वास्थ्य, सफलता और सुख निर्भर हैं। हममें से कुछ लोग इस बात को अवश्य ही जानते होंगे कि हमारे मानसिक भावों पर—हमारे धैर्य, हमारे आशा-भरोसा पर हमारी कार्यशक्ति का बल

अवलम्बित है। यदि बच्चे के कोमल मन पर शुरू से ही आनन्द और आशा के विचारों का प्रवाह चला जायगा तो उसका भावी जीवन बड़ा ही आनन्दमय और आशापूर्ण हो जायगा। चिंता, अनुत्साह को वह अपने पास तक न फटकने देगा।

जिन लोगों का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता अवश्य ही उनके बचपन में स्वास्थ्यहीनता के विचार भरे गए होंगे। यह बड़े ही अफसोस की बात है कि बच्चों के मन में मां-बाप तथा अड़ोस-पड़ोस के लोग अज्ञान-वश दुःख-दर्द, आधि-व्याधि के विचार बुरी तरह भर देते हैं। वे उनसे कहा करते हैं—'शरीर-व्याधि-मंदिरम्'। बस ये विचार बच्चों के दिल में जड़ जमा लेते हैं और उनका कुफल आजन्म उन बेचारों को भोगना पड़ता है। बीमारी तबतक हाथ धोकर उनके पीछे पड़ी रहती है जबतक कि मृत्यु उन्हें उठा न ले जाय।

बच्चा बीमारी की जितनी बातें सुनेगा उतना ही बीमारी का डर उसे बना रहेगा। धीरे-धीरे उसका यह विश्वास हो जायगा कि ईश्वर ने मेरे भाग्य में बीमारी ही लिखी है, मैं इससे कभी छुटकारा नहीं पा सकता। इसी कुविश्वास के कारण उसे अपना जीवन निरानन्द और शून्य-सा प्रतीत होने लगता है। अपने भाग्य को वह हमेशा कोसा करता है।

बस इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए हर एक माता-पिता को चाहिए की बालक के कोमल मन में शुरू से ही सुस्वास्थ्य और शक्ति के भाव भरा करें। उसे यह समझा दें कि स्वास्थ्य ही हमारा स्वभाव है। बीमारी हमारी भूल का परिणाम-मात्र है, महज़ हमारे बेमेल जीवन का नतीजा है। उसके मन में यह बिठा देना चाहिए कि स्वास्थ्य, समृद्धि और पूर्णता पर तुम्हारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। आधि-व्याधि, दुःख-दरिद्रता मानव

स्वभाव के अनुकूल नहीं। उसे बता देना चाहिए कि ईश्वर ने आधि-व्याधि, दुःख-दरिद्रता पैदा नहीं की, उसका यह मनशा नहीं कि हम बीमार रहें। उसने हमें सुस्वास्थ्य लाभ करने के लिए, सुख भोगने के लिए, आनन्द में मग्न रहने के लिए बनाया है यह बात उसे समझा देनी चाहिए।

बच्चे हर बात पर झट विश्वास कर लिया करते हैं। उनके माता-पिता, बन्धुवर्ग और अड़ोस-पड़ोस के लोग जो बातें कहते हैं उन पर वे विश्वास कर लेते हैं। यहाँ तक कि हंसी में उनसे जो बातें कही जायं उन्हें मान लेने को भी तैयार हो जाते हैं। इन बातों का अच्छा या बुरा प्रभाव उनके अंतःकरण में जम जाता है जो उनके भावी जीवन में प्रकट होता है।

कितने ही अज्ञानी और अविवेकी माता-पिता बच्चों को कई प्रकार के डर दिखाकर उनपर रोब जमाने की कोशिश किया करते हैं। "हौआ आया, वह तेरे कान काट लेगा" आदि बातें कह कर उन्हें डराते हैं जिससे वह रोते हों तो चुप हो जायं, ऊधम मचा रहे हों तो शांत हो जायं। वे इस बात को भूल जाते हैं कि ऐसा करके हम बच्चों का बड़ा अहित कर रहे हैं, और उन्हें भीरू तथा डरपोक बनाने का पाप अपने सिर ले रहे हैं। इस तरह की भय उपजाने वाली बातें करना बच्चों का सत्यानाश करना है। हम देखते हैं कि बहुत से माँ-बाप रात को बच्चा न रोये इस ख़याल से उसे अफीम इत्यादि विषैले पदार्थ खिला दिया करते हैं। इनका परिणाम यह होता है कि उनके मानसिक विकास को बड़ा गहरा धक्का पहुँचता है और वे मन्दबुद्धि हो जाते हैं। जो माता-पिता अपने लड़कों को बुद्धिमान और प्रतिभाशाली बनाना चाहते हों उन्हें चाहिए कि अपने बच्चों को अफीम आदि मादक प्रदार्थ कभी न खिलाएं।

यदि यह मान भी लिया जाय कि भय दिखाने से बच्चों को विशेष हानि नहीं होती तो भी उन्हें डराना बुरा ही है, क्योंकि धोखा देना किसी तरह अच्छा नहीं कहा जा सकता। यदि माता-पिता के लिए कोई सबसे अच्छी बात है तो वह यह है कि वे बच्चों के मन को आत्म-विश्वास से भर दें, अपने बच्चों पर विश्वास करें। अनुभव से यह बात जानी गई है कि जिस बच्चे का विश्वास एक बार नष्ट कर दिया जाता है उसके मन में फिर सहज ही वह जड़ नहीं जमा सकता। माँ-बाप और बच्चे के बीच में कोई भेद न होना चाहिए। माँ-बाप को चाहिए कि वे अपने बच्चों के साथ साफ़ और खुले दिल से व्यवहार करें। वे इस बात का पूरा ख़याल रखें कि बच्चे का दिल कभी व्यर्थ ही न दुखे।

जब बच्चा बड़ा होता है और यह देखता है कि जिनपर मैं पूरी तरह विश्वास करता था जिन्हें मैं ईश्वर-तुल्य समझता था वे वर्षों से हर तरह मुझे धोखा दे रहे हैं, तब उसके दिल को कितनी चोट पहुंचती है, इसका ख़याल कभी आपने किया है?

माता-पिता को यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए कि हर प्रकार की क्लेशजनक वार्ता जो बच्चे के सामने कही जाती है, हर प्रकार का मिथ्या भय जो उसके कोमल मन में भर दिया है, जैसे भाव माता-पिता उसके प्रति रखते हैं और जैसा बर्ताव उसके साथ करते हैं—ये सभी बातें उसके मन में उसी तरह जम जाती हैं और उसके भावी जीवन में प्रकट होती हैं जैसे ग्रामोफोन की चूड़ी में उतारा हुआ गाना जैसा-का-तैसा गायन रूप में प्रकट होता है।

जब लड़का भयभीत हो रहा हो तब उसे कभी मत मारिए-पीटिए। जिस तरह व्यर्थ ही बहुत से माँ-बाप अपने बच्चों को

मारा-पीटा करते हैं उस तरह मारना सचमुच उनके प्रति दुष्टता का बर्ताव करना है। ज़रा इस भयङ्करता को तो सोचिए कि इधर तो बच्चा मारे भय के चिल्ला रहा है और उधर बाप गुस्से से भरा बेंत लिये पीटने को तैयार खड़ा है। इसका बच्चे पर बहुत ही बुरा असर होता है। बहुत से बच्चे माता-पिता तथा शिक्षक की इस दुष्टता को कभी नहीं भूलते और बदला लेने की फ़िक्र में रहते हैं।

बहुत से माता-पिता बच्चे को उसके रुचि-स्वभाव के विरुद्ध धन्धे में झोंककर उसके उन्नति-पथ पर बुरी तरह कांटे बिछा देते हैं। वे उससे ऐसे विषय का अभ्यास करवाना चाहते हैं जिसे करने को उसका दिल नहीं चाहता, जिसके लिए वह अपने आपको अयोग्य समझता है। जैसे लड़के का दिल डाक्टरी के अध्ययन में लगता हो और वह क़ानून का अभ्यास करने को मजबूर किया जाय। इसका परिणाम यह होता है कि उसका प्रकाशमान भविष्य अन्धकारमय हो जाता है और अपने स्वभाव के विपरीत विषय में वह अपनी प्रतिभा का विकास नहीं कर सकता। अतः माता-पिता को चाहिए कि जिस विषय की ओर बच्चे का दिल जाता हो उसीका अध्ययन करने की उसे आज्ञा दें।

माँ-बाप को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि बच्चों की स्वाभाविक गति में बाधा उपस्थित करना उनकी कार्य-शक्ति को नष्ट करना हैं। ऐसे बहुत से मनुष्य देखे जाते हैं जो बहुत से गुणों युक्त हैं, पर किसी तरह की कमज़ोरी या कमी के कारण वे अपनी योग्यतानुसार कार्य नहीं कर सकते, और इसका कारण यही है कि बचपन में उनकी वे कमज़ोरियां नहीं निकाली गईं जो उस समय सहज-साध्य थीं। केवल योग्यता का होना काफ़ी नहीं, उसके साथ-साथ उस योग्यता का उपयोग करने की शक्ति

का होना भी आवश्यक है।

यदि बच्चों को निश्चयात्मक और उत्पादक शक्ति को बढ़ाने की शिक्षा दी जाय तो मेरी समझ में यह उनके लिए बहुत मौलिक और महत्त्वपूर्ण बात होगी। बच्चों को सिखाना चाहिए कि वे अपने मन को सर्वोच्च उत्पादन-शक्ति की ओर कैसे लगा सकते हैं। बच्चों को यह शिक्षा देना बहुत जरूरी है कि वे अपने जीवन में सुख, शांति और सफलता कैसे प्राप्त कर सकते हैं, कैसे उन्नति पर पहुँच सकते हैं, वे अपनी आत्मा की दिव्य शक्तियों को किस तरह प्रकाशित कर सकते हैं।

देखा जाता है कि बहुत से विद्यार्थी अपने दिमाग़ को विद्या से भरपूर करके स्कूल तथा कालेज से निकलते हैं, पर उनमें आत्मिक योग्यता तथा आत्म-विश्वास कुछ भी नहीं होता। वे अब भी उसी तरह भीरु, शङ्काशील, हतोत्साह रहते हैं जैसे कालेज में भर्ती होने के समय थे।

अब आप ही कहिए कि लड़के को विद्या में बृहस्पति बनाकर संसार में भेजने से क्या लाभ हो सकता है जबकि उसमें यह शक्ति नहीं है कि वह अपने आत्म-विश्वास और निश्चय को ठीक तरह से काम में ला सके? उसमें तो वह कार्य-शक्ति और उत्साह नहीं है जो सफलता की कुञ्जी है।

मेरी राय में स्कूल-कालेजों के लिए यह बड़ी शर्म की बात है कि उनसे ऐसे नवयुवक निकलें जो छाती पर हाथ रखकर साहसपूर्वक इस बात को नहीं कह सकते कि हमारी आत्माए हमारी हैं। हमारे कालेजों से हर साल ऐसे हजारों लड़के निकलते हैं जिनकी शिक्षा अब भी वैसी ही होती है जैसी कालेज में भर्ती होने के पहले थी। हम देखते हैं बहुत से ग्रेजुएटों की

घिग्घी बंध जाती है, जब उनसे जन-साधारण में भाषण करने को कहा जाता है। मनुष्यों की मण्डली में उठकर बोलना उनके लिए कठिन हो जाता है। दो-चार सौ आदमियों के बीच में वे किसी प्रस्ताव को पढ़ नहीं सकते, उसका अनुमोदन भी नहीं कर सकते।

वह समय शीघ्र आनेवाला है जब नवयुवक ऐसी शिक्षाओं से विभूषित किये जायंगे जिनसे कि वे अपनी योग्यता का भली-भाँति उपयोग कर सकें, अपने ज्ञान को हर समय काम में ला सकें तथा सर्वसाधारण में बिना किसी हिचकिचाहट के अपने मन्तव्यों को प्रकाशित कर सकें। आत्म-संयम और आत्म-विश्वास का इन्हें पाठ पढ़ाया जायगा। भविष्य में जो शिक्षा दी जायगी उसका सार यही होगा कि जो कुछ विद्यार्थी जानता है उसका वह जब चाहे तब प्रकाश कर सके—अपनी विद्या का इच्छानुसार उपयोग कर सके।

हम देखते हैं कि बहुत से विश्वविद्यालय के उपाधिधारी ग्रेजुएट कितने ही विषयों में वैसे ही कमजोर और गतिहीन निकलते हैं जैसे कालेज में प्रवेश करने के समय थे। वह शिक्षा किस काम की जिसमें लड़कों को अपनी शक्तियों का, अपनी परिस्थितियों का स्वामी होना न सिखाया जाय, जिसमें उन्हें यह न बताया जाय कि काम पड़ने पर अपनी विद्या-बुद्धि का तुरत उपयोग कैसे किया जा सकता है?

कालेज का वह ग्रेजुएट जो डरपोक है, शङ्काशील है, जो जनता में वा दूसरे किसी स्थान में काम पड़ने पर अपनी विद्या-बुद्धि का प्रकाश नहीं कर सकता, कभी महत्त्व प्राप्त नहीं कर सकता; कभी समाज में प्रभावशाली नहीं हो सकता। काम पड़ने पर जिस ज्ञान का उपयोग न हो सके वह ज्ञान किस काम का?

वह समय आ रहा है जब हर बच्चे को अपने आप में विश्वास करना अपनी योग्यता पर भरोसा रखना सिखाया जायगा। मेरी समझ में यह बात उसकी शिक्षा का प्रधान अङ्ग होगी, क्योंकि जब वह अपने आप में पूर्ण विश्वास करने लगेगा तब वह किसी प्रकार की कमज़ोरी को पास फटकने न देगा। बच्चे के मन में यह दिव्य विचार जमा देना चाहिए कि दयासागर परमात्मा ने उसे संसार में किसी खास उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजा है और उसके हाथ से अवश्य उस उद्देश्य की पूर्ति होगी।

नवयुवक को सिखाना चाहिए कि संसार में वह उस महान् पद पर आसीन होगा जिस पर संसार के महान् पुरुष हुए हैं। उसे सिखाना चाहिए कि वह ईश्वर का अंश है, सब दैवी शक्तियाँ उसमें भरी हुई हैं, अतः वह कभी, किसी भी दशा में असफल नहीं हो सकता। उसे सिखाना चाहिए कि उसकी आत्मा में वह दिव्यता विद्यमान है जो संसार को अलौकिक प्रकाश से प्रकाशित कर सकती है। उसे सिखाना चाहिए कि संसार में वह अपने को महत्त्वपूर्ण समझे। इस तरह की शिक्षा से, मैं निश्चय-पूर्वक कहता हूँ, कि उसका आत्म-सम्मान बढ़ेगा, उसका मानसिक और शारीरिक विकास होगा और उसका जीवन दिव्यता से परिपूर्ण होकर सुख-शांतिपूर्ण सफलता का अनुभव करेगा।

: ६ :

दीर्घायु

अमेरिका के संयुक्तराष्ट्र का एक परम वैभवशाली धनिक कहा करता था कि यदि कोई मेरी उम्र दस वर्ष बढ़ा दे तो मैं उसे एक करोड़ रुपये दूं। मैं कहता हूँ कि एक करोड़ ही क्या वह इसके लिए एक अरब रुपये तक देने को तैयार हो सकता था।

हम सब को अपना जीवन कितना प्यारा है, कितना मूल्यवान मालूम होता है। जीवन ऐसी वस्तु है कि दुःखी-से-दुःखी मनुष्य भी इसे छोड़ना नहीं चाहता। आजीवन कालेपानी की सजा पानेवाला आदमी भी यह नहीं चाहता कि मैं अभी अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दूं।

हमारी महत्त्वाकांक्षा चाहे जो हो, पर हम सब को जैसा अपना जीवन प्यारा है वैसा और कोई पदार्थ नहीं। हमारा सदा यही लक्ष्य रहता है कि हमारा जीवन सुख-आनन्द से परिपूर्ण हो। हर एक साधारण आदमी बुढ़ापे की ओर बढ़नेवाली अवस्था के चिह्न देखकर भयभीत हो जाता है। आदमी यही चाहता है कि मैं हमेशा हृष्ट-पुष्ट और जवान बना रहूं। पर दुःख इस बात का है कि अपना स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए जैसी सावधानी रखनी चाहिए वैसी वह नहीं रखता। वह दीर्घायु होने के नियमों का यथोचित पालन नहीं करता। अप्राकृतिक रहन-सहन और बुरी आदतों से लोग अपनी शक्ति खोते जाते हैं और साथ ही इस बात का आश्चर्य करते हैं कि हमारी शक्तियाँ क्यों क्षीण हुई

जा रही हैं। अपनी शक्तियों को इस तरह दूषित और क्षीण कर के हम अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारते हैं। जहां कहीं हमें दीर्घ जीवन दिखाई दे समझ लेना चाहिए कि जरूर यह जीवन आत्मसंयम-पूर्वक बिताया जा रहा है।

हमारा ध्यान पैसा कमाने की ओर जितना रहता है उतना ही यदि हम अपना यौवन और बल बनाए रखने का ध्यान रखें तो हमारा यौवन और बल दिन-दिन क्षीण होने के बदले दिन-दिन अधिक हरा-भरा और प्रफुल्लित होता जायगा।

मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है जो ठीक तरह से रखी जाय तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से बरती जाय तो जल्दी बिगड़ जाती है।

यह देखकर सचमुच बड़ा आश्चर्य होता है कि हम सब लोग जीवन पर इतना प्रेम करते हैं, उससे इस तरह चिपके हुए हैं, पर बुरे रहन-सहन और बुरे आचार-विचार के कारण उसे नष्ट भी करते जा रहे हैं। हमारे जीवन के बहुत से अमूल्य दिन इसी तरह नष्ट होते जा रहे हैं।

जबतक हम बुढ़ापे के ही ख़याल में ग़र्क रहेंगे, बुढ़ापे की ही कल्पनाओं में गोते लगाते रहेंगे, बुढ़ापे के ही स्वप्न देखा करेंगे, तबतक हम बूढ़े ही होते जायंगे। हमारे विचार, हमारी कल्पनाएं हमारी प्रकृति और अभिलाषाओं के विरुद्ध ठीक वैसे ही काम करने लगेंगे जैसे असफलता का भय और संशय हमारे धन कमाने के विरुद्ध काम करने लगते हैं।

हमारा मानसिक आदर्श यह बता देता है कि हमारे जीवन में यौवन की इमारत बन रही है या बुढ़ापे की। हर एक मनुष्य में एक स्वाभाविक शक्ति भरी हुई है जिससे वह जीवन को बढ़ा सके, अपनी आयु को लम्बी कर सके, पर इसके लिए

आवश्यक है कि पहले वह मानस-तत्त्व को भली भांति समझ ले।

जो मनुष्य यह कहा करता है कि अब हमारे गिरते दिन हैं, अब हमारा शरीर दिन-दिन क्षीण ही होगा, बुढ़ापे के कारण हमारा बल घटेगा ही, उसके लिए पूर्ण स्वास्थ्य और हृष्ट-पुष्ट अवस्था प्राप्त करना एकदम असम्भव है।

मन ही अपने लिए जीवन का रास्ता बनाता है और मृत्यु का रास्ता भी मन ही में तैयार होता है। विचार उस रास्ते की सीमा निश्चित कर देते हैं।

बहुत से आदमी इस बात को नहीं जानते कि हमारे मन के भाव में ही वह कार्योत्पादक शक्ति है जो हमेशा कार्योत्पादक फलों को उत्पन्न किया करती है। जब-जब हम अपने मन को सुसंगठित करते हैं, हम उससे कार्योत्पादक पदार्थ पा ही लेते हैं। यदि हम अपने मन को सौंदर्य के विचार से सुसंगठित करें तो उसका फल भी सुन्दर निकलेगा। हम अपने मन की गिरती हुई शक्तियों को बुरी दशा में ला रखें तो इसका फल भी हम सड़ा हुआ पायंगे। प्रत्येक मानसिक भाव जो यौवन के मूल से बेमेल है, बुढ़ापे को ही उत्पन्न करेगा।

यदि हम सदा अपने मन में यौवन का दिव्य प्रवाह बहाते रहें, सदा यौवन के आदर्श को सामने रखकर उसकी प्राप्ति के लिए यत्न किया करें, तो बुढ़ापा हमसे अवश्य ही दूर रहा करेगा।

प्रेन्टिस मलफोर्ड नामक लेखक कहते हैं कि यदि आप तीस या पैंतीस वर्ष की ही उम्र में बुढ़ापे के स्वप्न देखने लगें तो पचास या पचपन की उम्र में आप बिलकुल बूढ़े हो जायंगे। आपके शरीर में झुर्रियां पड़ जायँगी, शरीर की कर्म-शक्ति चली जायगी। इसका कारण यह है कि आपके बुढ़ापे के विचार आपके यौवन को निकाल कर उसका स्थान बुढ़ापे को दे देंगे। यदि आप यह

देखते रहेंगे कि हमारा शरीर क्षीण हुआ जा रहा है तो वह अधिकाधिक क्षीण होगा। जो अपने मन को यौवन के विचारों से हरा-भरा रखते हैं उनके शरीर पर यौवन साफ़ झलकने लगता है। बहुत से मनुष्य साठ वर्ष की उम्र में बूढ़े दीखने लग जाते हैं, इसका कारण यही है कि उनका शुरू से ही यह विचार रहा है कि साठ वर्ष की अवस्था बुढ़ापा है।

मानव-समाज के मन में यह एक भारी भ्रम जम रहा है कि पचास-पचपन वर्ष की उम्र के बाद मनुष्य की ढलती अवस्था का आरम्भ हो जाता है, इस उम्र के बाद उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ नष्ट होने लगती हैं। बड़े ही शोक का विषय है कि मनुष्य की, जो ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्कृष्ट पुत्र है, ढलती हुई अवस्था का प्रारम्भ पचास वर्ष की ही उम्र में हो जाय। इस उम्र के बाद तो उसके शरीर और मन की शक्ति बढ़नी चाहिए।

मनुष्य की बनावट की ओर ध्यान दिया जाय तो मालूम होता है कि उसके पूरी तरह खिलने का—उसकी कार्यसम्पादन-शक्ति के पूर्ण प्रकाश का, उसकी आन्तरिक दिव्य-ज्योति के चमकने का समय तीस वर्ष से प्रारम्भ होता है। क्या कभी परमात्मा की यह मर्जी हो सकती है कि हम पचास-साठ वर्ष की उम्र में ही ढलती अवस्था पर पहुँच जायं, जबकि हमारे पूर्ण यौवन का आरम्भ ही तीस वर्ष की उम्र से होता है? आप प्राणि-संसार की ओर दृष्टि डालिए तो आपको मालूम होगा कि किसी पशु को यौवन प्राप्त करने में जितना समय लगता है उससे चौगुना वह जीता है। वनस्पति का भी यही हाल है। उसको पूरी तरह फलने-फूलने में जितना समय लगता है उससे तिगुने समय तक वह मुर्झाती नहीं। जब पशुओं और वनस्पतियों का

यह हाल है तो मनुष्य के लिए यह असम्भव है कि उसका पूर्ण यौवन खिलने में जितना समय लगे उससे चौगुना वह न जी सके। अवश्य ही हम अपनी शक्ति और बल कम-से-कम उस समय तक क़ायम रख सकते हैं जबतक कि हमारी उम्र अस्सी के पार न चली जाय।

सर हरमन वेबर नामक सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ डाक्टर का कहना है कि मनुष्य मज़े से सौ वर्ष तक जीता रह सकता है।

कवि स्टेडमन का कथन है—"लोग सत्तर वर्ष की उम्र को ही क्यों पुख़्ता समझते हैं? वे यदि स्वास्थ्य और बल को बनाए रखें तो क्या पाँच सौ वर्ष तक नहीं जी सकते? क्या वे नहीं चाहते कि पचास वर्ष तक हम सुखपूर्वक देशाटन करते रहें, पचास वर्ष तक किसी राजनीतिज्ञ के पद पर काम करें, पचास वर्ष तक डाक्टरी का काम करें, पचास वर्ष तक नये-नये ग्रन्थ लिखें, और बाकी में दुनिया के दूसरे-दूसरे काम करें?"

मनुष्य तबतक बूढ़ा नहीं होता जबतक कि उसके जीवन में मधुरता और उत्साह बना रहता है, जबतक कि उसके हृदय में महत्त्वाकांक्षा बनी रहती है, जबतक कि उसके मनमें कार्य-शक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

मनुष्य की उम्र चाहे कम ही क्यों न हो, पर यदि यौवन के विचार उसके मन से निकल गए हैं, उसका उत्साह ढीला पड़ गया है, उसका कार्य-कर बल कमज़ोर हो गया है, तो उसे बूढ़ा ही समझना चाहिए।

इस कल्पना से कि अमुक उम्र के बाद मनुष्य की ढलती अवस्था का आरम्भ हो जाता है, उसकी इच्छाएँ मन्द होने लगती हैं, मानव समाज का बड़ा अपकार हुआ है।

हम अपने आपको बढ़े समझने लगते हैं। हमारे विचार

भी ऐसे ही हो जाते हैं। इसका फल यह होता है कि बुढ़ापा हमें जल्दी दबाने लगता है। हम तबतक बूढ़े ही होते जायंगे जबतक कि हम अपने बुढ़ापे के विचारों को यौवन के, स्वास्थ्य के, हृष्ट-पुष्टता के, उत्साह के विचारों में न बदल दें।

"हम एक दिन अवश्य ही बूढ़े होंगे" इस कल्पना ने मानव-समाज के मन में बुरी तरह जड़ जमा ली है। यही कारण है कि बहुत से मनुष्यों के चेहरे तथा शरीर पर शीघ्र ही बुढ़ापे के चिह्न दीखने लगते हैं।

जब हम यह विश्वास करने लगेंगे कि हमारा जीवन ईश्वरीय तत्त्व से प्रकट हुआ है, अतएव उस पर काल का प्रभाव नहीं चलता, बुढ़ापे की छाया नहीं पड़ सकती, तभी हम ढलती उम्र में भी अपने यौवन को क़ायम रख सकेंगे। जब हम इस शाश्वत यौवन-तत्त्व पर क़ायम रहने लगते हैं,जब हम छाती पर हाथ रख कर साहसपूर्वक यह बात कहने लगते हैं कि हमारी आत्मा का सत्य स्वरूप, हमारी आत्मा का दैवी-तत्त्व ऐसा अलौकिक है कि वहाँ बुढ़ापा स्थान नहीं पा सकता, अपना तनिक भी अधिकार नहीं चला सकता, तब इस तरह के सुविचारों का प्रभाव हमारे शरीर पर दीखने लगता है। अर्थात् हमारे शरीर पर पूर्ण सौन्दर्य और यौवन के सब चिह्न दिखाई देने लगते हैं।

जैसे हमारे विचार होते हैं वैसी ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है। हम चाहें कि हमारी शारीरिक स्थिति हमारे विपरीत हो तो यह बात सर्वथा असम्भव है। क्या कोई डाक्टर उस रोगी को बचा सकता है जिसका यह विश्वास हो गया हो कि मैं मर जाऊँगा, कोई मुझे बचा नहीं सकता?

मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जिनका यह विश्वास हो गया था कि मैं साठ या पैंसठ वर्ष की उम्र से ज्यादा नहीं जी

सकता। इस विश्वास ने उनके मनमें ऐसी पक्की जड़ जमा ली थी कि सचमुच वे उसी उम्र में संसार से चल बसे।

इन पंक्तियों का लेखक (अनुवादक) एक ऐसे मनुष्य को जानता है जिसकी जन्म-पत्री में लिखा हुआ था कि वह अमुक तिथि को मर जायगा। उस मनुष्य का फलित ज्योतिष पर पूरा विश्वास था। उसे निश्चय हो गया था कि इस तिथि के आगे मैं किसी तरह जी नहीं सकता, विधाता ने इतनी ही उम्र मेरे लिए लिखी है। उक्त तिथि के दो तीन दिन पूर्व से वह अपनी मृत्यु की तैयारी करने लगा। उसकी सब मनोवृत्तियाँ मृत्यु की ओर खिंच गईं। आश्चर्य इस बात का है कि वह अभागा उसी दिन मर भी गया। पाठकगण, क्या आप इसका कारण समझे? उसके मृत्यु सम्बन्धी विचारों ने ही उसका घात किया, उसके दुर्वि-श्वास ने ही उसे मृत्यु-मुख में ढकेला। ज्योतिषी ने उसकी जन्म-पत्री में यह लिख कर कि वह अमुक दिन मर जायगा, उसकी मृत्यु होने में सहायता दी।